अध्याय १६

महाप्रभु द्वारा वृन्दावन जाने की चेष्टा

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने ग्रन्थ *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में इस अध्याय का सारांश इस प्रकार दिया है। "जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने वृन्दावन जाने की इच्छा प्रकट की, तो रामानन्द राय तथा सार्वभौम भट्टाचार्य ने अप्रत्यक्ष रूप से अनेक व्यवधान डाले। यथासमय बंगाल के सारे भक्त तीसरे वर्ष जगन्नाथ पुरी आये। इस बार वैष्णवों की पत्नियाँ अपने साथ तरह-तरह का भोजन लाई थीं, क्योंकि वे जगन्नाथ पुरी में श्री चैतन्य महाप्रभु को निमन्त्रित करना चाहती थीं। जब भक्तगण आ गये, तो चैतन्य महाप्रभु ने उन्हें फूलों की मालाएँ आशीर्वाद स्वरूप भेजीं। उस वर्ष भी गुण्डिचा मन्दिर की सफाई की गई और जब चातुर्मास्य का काल बीत गया, तो सारे भक्त बंगाल में अपने घर वापस चले गये। चैतन्य महाप्रभु ने नित्यानन्द प्रभु को प्रतिवर्ष नीलाचल आने से मना किया। कुलीनग्राम के निवासियों द्वारा प्रश्न किये जाने पर चैतन्य महाप्रभु ने पुनः वैष्णवों के लक्षण बताए। विद्यानिधि भी जगन्नाथ पुरी आये और उन्होंने ओड़न षष्ठी उत्सव देखा। जब भक्तों ने महाप्रभु से विदाई ली, तो महाप्रभु वृन्दावन जाने के लिए दृढ़-संकल्प थे और वे विजयदशमी के दिन वे चल पड़े।

महाराज प्रतापरुद्र ने श्री चैतन्य महाप्रभु की वृन्दावन यात्रा के लिए अनेक प्रकार के प्रबन्ध किये। जब महाप्रभु ने चित्रोत्पला नदी पार कर ली, तो रामानन्द राय, मर्दराज तथा हरिचन्दन उनके साथ-साथ गये। श्री चैतन्य महाप्रभु ने गदाधर पण्डित से अनुरोध किया कि वे नीलाचल, जगन्नाथ पुरी वापस जाएँ, किन्तु उन्होंने इस आदेश का पालन नहीं किया। श्री चैतन्य महाप्रभु ने

कटक पहुँचकर गदाधर पण्डित से नीलाचल वापस जाने के लिए पुनः अनुरोध किया और भद्रक पहुँचकर रामानन्द राय को भी विदा कर दिया। इसके बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने उड़ीसा की सीमा पार की और नाव से पानिहाटि आ पहुँचे। इसके बाद वे राघव पण्डित के घर गये। वहाँ से वे कुमारहट्ट गये और अन्त में कुलिया गये, जहाँ उन्होंने कई अपराधियों को क्षमादान दिया। वहाँ से वे रामकेलि गये, जहाँ वे श्री रूप और सनातन को मिले तथा उन्हें अपने प्रधान शिष्यों के रूप में स्वीकार किया। रामकेलि से लौटते समय उनकी भेंट रघुनाथ दास से हुई, जिन्हें महाप्रभु ने उपदेश देकर घर वापस भेज दिया। तत्पश्चात् महाप्रभु नीलाचल लौट आये और किसी साथी को लिये बिना ही वृन्दावन जाने की योजना बनाने लगे।

गौड़ोद्यानं गौर-मेघः सिञ्चन्स्वालोकनामृतैः ।
भवाग्नि-दग्ध-जनता-वीरुधः समजीवयत् ॥ १॥

गौड़ोद्यानं गौर-मेघः सिञ्चन्स्वालोकनामृतैः ।
भवाग्नि-दग्ध-जनता-वीरुधः समजीवयत् ॥ १॥

गौड़-उद्यानम्—गौड़ देश नामक उद्यान पर; **गौर-मेघः**—गौर नामक मेघ; **सिञ्चन्**—जल बरसाकर; **स्व**—अपने; **आलोकन-अमृतैः**—दृष्टि रूपी अमृत से; **भव-अग्नि**—भौतिक अस्तित्व की दावाग्नि; **दग्ध**—जले हुए; **जनता**—जनता; **वीरुधः**—जो लताओं एवं पौधों के समान है; **समजीवयत्**—पुनर्जीवित किया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु रूपी बादल ने अपनी दृष्टिरूपी अमृत से गौड़देश के उद्यान को सींचा और उन लोगों को जीवन प्रदान किया, जो लताओं तथा वृक्षों की भाँति भौतिक अस्तित्व की दावाग्नि से जल रहे थे।

जय जय गौरचन्द्र जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २॥

जय जय गौरचन्द्र जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २॥

जय जय—जय जय; **गौरचन्द्र**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु; **जय**—जय हो; **अद्वैत-चन्द्र**—अद्वैत आचार्य; **जय**—जय हो; **गौर-भक्त-वृन्द**—श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्तों की।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! अद्वैतचन्द्र की जय हो तथा महाप्रभु के समस्त भक्तों की जय हो!

প্রভুর হইল ইচ্ছা যাইতে বৃন্দাবন ।
শুনিয়া প্রতাপরুদ্র হইলা বিমন ॥৩॥

প্রভুর হইল ইচ্ছা য়াইতে বৃন্দাবন ।
শুনিয়া প্রতাপরুদ্র হইলা বিমন ॥ ৩ ॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **हइल**—थी; **इच्छा**—इच्छा; **य्राइते**—जाने की; **वृन्दावन**—वृन्दावन; **शुनिया**—सुनकर; **प्रतापरुद्र**—महाराज प्रतापरुद्र; **हइला विमन**—उदास हो गये।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने वृन्दावन जाने का निश्चय किया, तो महाराज प्रतापरुद्र यह समाचार सुनकर अत्यन्त खिन्न हो उठे।

সার্বভৌম, রামানন্দ, আনি' দুই জন ।
দুঁহাকে কহেন রাজা বিনয়-বচন ॥৪॥

সার্বভৌম, রামানন্দ, আনি' দুই জন ।
দুঁহাকে কহেন রাজা বিনয়-বচন ॥ ৪ ॥

सार्वभौम—सार्वभौम भट्टाचार्य और; **रामानन्द**—रामानन्द को; **आनि'**—बुलाकर; **दुइ जन**—दोनों व्यक्ति; **दुँहाके**—उन दोनों को; **कहेन**—कहा; **राजा**—राजा ने; **विनय-वचन**—विनयपूर्वक शब्द।

अनुवाद

अतएव राजा ने सार्वभौम भट्टाचार्य तथा रामानन्द राय को बुलवा भेजा और उनसे विनीत शब्द कहे।

নীলাদ্রি ছাড়ি' প্রভুর মন অন্যত্র যাইতে ।
তোমরা করহ যত্ন তাঁহারে রাখিতে ॥ ৫ ॥

নীলাদ্রি ছাড়ি' প্রভুর মন অন্যত্র য়াইতে ।
তোমরা করহ য়ত্ন তাঁহারে রাখিতে ॥ ৫ ॥

নীলাদ্রি—জগন্নাথ पुरी; **छाड़ि'**—छोड़कर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **मन**—मन; **अन्यत्र**—किसी और जगह; **য়াইতে**—जाने को; **तोमरा**—आप दोनों; **करह**—करो; **য়त्न**—प्रयास; **ताँहारे**—उनको; **राखिते**—रखने का।

अनुवाद

महाराज प्रतापरुद्र ने कहा, "कृपा करके श्री चैतन्य महाप्रभु को जगन्नाथ पुरी में ही रखने का प्रयास करें, क्योंकि अब वे अन्यत्र जाने की सोच रहे हैं।

তাঁহা বিনা এই রাজ্য মোরে নাহি ভায় ।
গোসাঞি রাখিতে করহ নানা উপায় ॥ ৬ ॥

তাঁহা বিনা এই রাজ্য মোরে নাহি ভায় ।
গোসাঞি রাখিতে করহ নানা উপায় ॥ ৬ ॥

তাঁহা বিনা—उनके बिना; **এই রাজ্য**—यह राज्य; **মোরে**—मुझे; **নাহি ভায়**—अच्छा नहीं लगता; **গোসাঞি**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **রাখিতে**—रखने के लिए; **করহ**—करो; **নানা উপায়**—नाना उपाय।

अनुवाद

"श्री चैतन्य महाप्रभु के बिना मेरा यह राज्य मुझे अच्छा नहीं लग रहा। अतएव ऐसा उपाय करें कि महाप्रभु यहीं रुके रहें।"

রামানন্দ, সার্বভৌম, দুই-জনা-স্থানে ।
তবে যুক্তি করে প্রভু—'যাব বৃন্দাবনে' ॥ ৭ ॥

রামানন্দ, সার্বভৌম, দুই-জনা-স্থানে ।
তবে য়ুক্তি করে প্রভু—'য়াব বৃন্দাবনে' ॥ ৭ ॥

রামানন্দ—रामानन्द; **সার্বভৌম**—सार्वभौम; **দুই-জনা-স্থানে**—दोनों व्यक्तियों के आगे;

तबे—तब; **युक्ति करे**—परामर्श किया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **याब वृन्दावने**—मैं वृन्दावन जाऊँगा।

अनुवाद

इसके बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने रामानन्द राय तथा सार्वभौम से परामर्श किया और कहा, "मैं वृन्दावन जाऊँगा।"

दूँहे कहे,—रथ-यात्रा कर दरशन ।
कार्तिक आइले, तबे करिह गमन ॥८॥

दुँहे कहे,—रथ-यात्रा कर दरशन ।
कार्तिक आइले, तबे करिह गमन ॥८॥

दुँहे कहे—दोनों ने कहा; **रथ-यात्रा**—रथयात्रा; **कर दरशन**—कृपया दर्शन करो; **कार्तिक आइले**—कार्तिक मास के आने पर; **तबे**—उस समय; **करिह गमन**—आप जा सकते हैं।

अनुवाद

रामानन्द राय तथा सार्वभौम भट्टाचार्य ने महाप्रभु से प्रार्थना की कि वे सर्वप्रथम रथयात्रा उत्सव मना लें, तब कार्तिक मास आने पर वृन्दावन जाएँ।

कार्तिक आइले कहे—एबे महा-शीत ।
दोल-यात्रा देखि' याओ—एई भाल रीत ॥९॥

कार्तिक आइले कहे—एबे महा-शीत ।
दोल-यात्रा देखि' याओ—एइ भाल रीत ॥९॥

कार्तिक आइले—जब कार्तिक मास आया; **कहे**—उन दोनों ने कहा; **एबे**—अब; **महा-शीत**—अत्यन्त ठंड; **दोल-यात्रा देखि'**—'दोल यात्रा' उत्सव देखने के बाद; **याओ**—आप जाएँ; **एइ**—यह; **भाल रीत**—एक अच्छा कार्यक्रम है।

अनुवाद

किन्तु जब कार्तिक मास आया तो दोनों ने महाप्रभु से कहा, "अब बहुत जाड़ा पड़ रहा है। अच्छा हो यदि आप दोल-यात्रा उत्सव देखकर जायें। यह अत्युत्तम रहेगा।"

আজি-কালি করি' উঠায় বিবিধ উপায় ।
যাইতে সম্মতি না দেয় বিচ্ছেদের ভয় ॥ ১০ ॥

आजि-कालि करि' उठाय विविध उपाय ।
याइते सम्मति ना देय विच्छेदेर भय ॥ १० ॥

आजि-कालि करि'—आजकल करके; **उठाय**—उन्होंने रखे; **विविध उपाय**—विविध युक्तियाँ; **याइते**—जाने की; **सम्मति**—अनुमति; **ना देय**—नहीं दी; **विच्छेदेर भय**—बिछोह के भय से।

अनुवाद

इस तरह उन दोनों ने महाप्रभु को अप्रत्यक्ष रूप से वृन्दावन जाने की अनुमति न देने के लिए अनेक अवरोध उपस्थित किये। वे ऐसा इसलिए कर रहे थे, क्योंकि वे उनके विछोह से भयभीत थे।

যদ্যপি স্বতন্ত্র প্রভু নহে নিবারণ ।
ভক্ত-ইচ্ছা বিনা প্রভু না করে গমন ॥ ১১ ॥

यद्यपि स्वतन्त्र प्रभु नहे निवारण ।
भक्त-इच्छा विना प्रभु ना करे गमन ॥ ११ ॥

यद्यपि—यद्यपि; **स्वतन्त्र**—पूर्णरूपेण स्वतंत्र; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **नहे निवारण**—उनको रोके नहीं जा सकते थे; **भक्त-इच्छा विना**—भक्तों की इच्छा के बिना; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ना करे गमन**—नहीं गये।

अनुवाद

यद्यपि श्री चैतन्य महाप्रभु पूर्णतया स्वतन्त्र हैं और उन्हें रोक पाने में कोई समर्थ नहीं है, किन्तु तो भी वे अपने भक्तों की अनुमति के बिना नहीं गये।

তৃতীয় বৎসরে সব গৌড়ের ভক্ত-গণ ।
নীলাচলে চলিতে সবার হৈল মন ॥ ১২ ॥

तृतीय वत्सरे सब गौड़ेर भक्त-गण ।
नीलाचले चलिते सबार हैल मन ॥ १२ ॥

तृतीय वत्सरे—तीसरे वर्ष; **सब**—सब; **गौड़ेर भक्त-गण**—बंगाल के भक्तगण; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी; **चलिते**—जाने के लिए; **सबार**—सबका; **हैल**—था; **मन**—मन।

अनुवाद

तीसरे वर्ष भी बंगाल के सारे भक्त पुनः जगन्नाथ पुरी जाना चाहते थे।

सबे मेलि' गेला अद्वैत आचार्येर पाशे ।
प्रभु देखिते आचार्य चलिला उल्लासे ॥१३॥

सबे मेलि' गेला अद्वैत आचार्य्येर पाशे ।
प्रभु देखिते आचार्य्य चलिला उल्लासे ॥ १३ ॥

सबे—सभी; **मेलि'**—इकट्ठे होकर; **गेला**—गये; **अद्वैत**—अद्वैत; **आचार्य्येर**—नवद्वीप के नेता के; **पाशे**—पास; **प्रभु देखिते**—श्री चैतन्य महाप्रभु से मिलने के लिए; **आचार्य्य**—अद्वैत आचार्य; **चलिला**—चल पड़े; **उल्लासे**—अत्यन्त प्रसन्न होकर।

अनुवाद

सारे बंगाली भक्त अद्वैत आचार्य के पास आये और अद्वैत आचार्य अत्यन्त उल्लासपूर्वक श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने जगन्नाथ पुरी के लिए रवाना हो गये।

यद्यपि प्रभुर आज्ञा गौड़ेते रहिते ।
नित्यानन्द-प्रभुके प्रेम-भक्ति प्रकाशिते ॥१४॥
तथापि चलिला महाप्रभुरे देखिते ।
नित्यानन्देर प्रेम-चेष्टा के पारे बुझिते ॥१५॥

यद्यपि प्रभुर आज्ञा गौड़ेते रहिते ।
नित्यानन्द-प्रभुके प्रेम-भक्ति प्रकाशिते ॥ १४ ॥
तथापि चलिला महाप्रभुरे देखिते ।
नित्यानन्देर प्रेम-चेष्टा के पारे बुझिते ॥ १५ ॥

यद्यपि—यद्यपि; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **आज्ञा**—आज्ञा; **गौड़ेते रहिते**—बंगाल में रहने के लिए; **नित्यानन्द-प्रभुके**—नित्यानन्द प्रभु को; **प्रेम-भक्ति**—भगवत्-प्रेम भक्ति का; **प्रकाशिते**—प्रचार करने के लिए; **तथापि**—फिर भी; **चलिला**—चले गये; **महाप्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **देखिते**—मिलने; **नित्यानन्देर**—नित्यानन्द प्रभु की; **प्रेम-चेष्टा**—प्रेम की गतिविधियाँ; **के**—कौन; **पारे**—सक्षम है; **बुझिते**—समझने में।

अनुवाद

यद्यपि महाप्रभु ने नित्यानन्द प्रभु को बंगाल में रहकर भगवत्प्रेम का विस्तार करने के लिए कहा था, लेकिन नित्यानन्द प्रभु महाप्रभु का दर्शन करने के लिए रवाना हो गये। भला नित्यानन्द प्रभु के प्रेमभाव को कौन समझ सकता है?

आचार्यरत्न, विद्यानिधि, श्रीवास, रामाई ।
वासुदेव, मुरारि, गोविन्दादि तिन भाई ॥ १६॥
राघव पण्डित निज-झालि साजाञा ।
कुलीन-ग्राम-वासी चले पट्ट-डोरी लञा ॥ १७॥

आचार्य्यरत्न, विद्यानिधि, श्रीवास, रामाइ ।
वासुदेव, मुरारि, गोविन्दादि तिन भाइ ॥ १६॥
राघव पण्डित निज-झालि साजाञा ।
कुलीन-ग्राम-वासी चले पट्ट-डोरी लञा ॥ १७॥

आचार्य्यरत्न—आचार्यरत्न; **विद्यानिधि**—विद्यानिधि; **श्रीवास**—श्रीवास; **रामाइ**—रामाइ; **वासुदेव**—वासुदेव; **मुरारि**—मुरारि; **गोविन्द-आदि तिन भाइ**—गोविन्द तथा उसके दो भाई; **राघव पण्डित**—राघव पण्डित; **निज-झालि**—अपने थैले; **साजाञा**—छाँटकर; **कुलीन-ग्राम-वासी**—कुलीन-ग्राम के निवासी; **चले**—चल पड़े; **पट्ट-डोरी लञा**—रेशमी रस्सियाँ लेकर।

अनुवाद

आचार्यरत्न, विद्यानिधि, श्रीवास, रामाइ, वासुदेव, मुरारि, गोविन्द तथा उसके दो भाई एवं राघव पण्डित समेत नवद्वीप के सारे भक्तजन चल पड़े। राघव पण्डित अपने साथ विभिनन प्रकार के भोजन के झोले लेकर चल पड़े। कुलीनग्राम के निवासी भी रेशमी रस्सियाँ लेकर चल पड़े।

खण्ड-वासी नरहरि, श्री-रघुनन्दन ।
सर्व-भक्त चले, तार के करे गणन ॥ १८॥

खण्ड-वासी नरहरि, श्री-रघुनन्दन ।
सर्व-भक्त चले, तार के करे गणन ॥ १८॥

खण्ड-वासी नरहरि—खंड ग्राम के निवासी नरहरी; **श्री-रघुनन्दन**—श्री रघुनन्दन; **सर्व-भक्त**—सभी भक्त; **चले**—चल पड़े; **तार**—उनकी ; **के**—कौन; **करे गणन**—गणना कर सकता है।

अनुवाद

खण्डग्राम के निवासी नरहरि तथा श्री रघुनन्दन एवं अन्य अनेक भक्त भी रवाना हो गये। भला उनकी गिनती कौन कर सकता है?

शिवानन्द-सेन करे घाटि समाधान ।
सबारे पालन करि' सुखे लञा यान ॥१९॥

शिवानन्द-सेन करे घाटि समाधान ।
सबारे पालन करि' सुखे लञा यान ॥१९॥

शिवानन्द-सेन—शिवानन्द सेन; **करे**—किया; **घाटि समाधान**—चुंगी देने के लिए खर्च की व्यवस्था; **सबारे**—प्रत्येक; **पालन**—पालन; **करि'**—करके; **सुखे**—सुखपूर्वक; **लञा**—लेकर; **यान**—गये।

अनुवाद

शिवानन्द सेन पर सारी टोली का भार था। उन्होंने कर वसूले जाने वाले स्थानों पर कर चुकाये जाने की व्यवस्था की। उन्होंने सारे भक्तों की निगरानी का जिम्मा ले रखा था और उनके साथ वे सुखपूर्वक यात्रा कर रहे थे।

सबार सर्व-कार्य करेन, देन वासा-स्थान ।
शिवानन्द जाने उड़िया-पथेर सन्धान ॥२०॥

सबार सर्व-कार्य्य करेन, देन वासा-स्थान ।
शिवानन्द जाने उड़िया-पथेर सन्धान ॥२०॥

सबार—उन सबका; **सर्व-कार्य्य**—सब कार्य; **करेन**—उन्होंने किया; **देन**—दिया; **वासा-स्थान**—निवासस्थान; **शिवानन्द**—शिवानन्द; **जाने**—जानते थे; **उड़िया-पथेर**—उड़ीसा के मार्ग; **सन्धान**—संगम-स्थान।

अनुवाद

शिवानन्द सेन भक्तों की सभी आवश्यकताओं को पूरी करते। विशेष

रूप से उन्होंने उनके रहने के लिए कमरों की व्यवस्था की और वे उड़ीसा के सभी मार्ग जानते थे।

সে বৎসর প্রভু দেখিতে সব ঠাকুরাণী ।০
চলিলা আচার্য-সঙ্গে অচ্যুত-জননী ॥২১॥

से वत्सर प्रभु देखिते सब ठाकुराणी ।
चलिला आचार्य्य-सङ्गे अच्युत-जननी ॥ २१ ॥

से वत्सर—उस वर्ष; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **देखिते**—दर्शन के लिए; **सब ठाकुराणी**—सभी भक्तों की पत्नियाँ ; **चलिला**—गईं; **आचार्य्य-सङ्गे**—अद्वैत आचार्य के साथ; **अच्युत-जननी**—अच्युतानन्द की माता।

अनुवाद

उस वर्ष भक्तों की पत्नियाँ (ठाकुरानियाँ) भी श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने गईं। अच्युतानन्द की माता सीतादेवी अद्वैत आचार्य के साथ गईं।

শ্রীবাস পণ্ডিত-সঙ্গে চলিলা মালিনী ।
শিবানন্দ-সঙ্গে চলে তাঁহার গৃহিণী ॥২২॥

श्रीवास पण्डित-सङ्गे चलिला मालिनी ।
शिवानन्द-सङ्गे चले ताँहार गृहिणी ॥ २२ ॥

श्रीवास पण्डित-सङ्गे—श्रीवास पण्डित के साथ; **चलिला**—गई; **मालिनी**—उनकी पत्नी मालिनी; **शिवानन्द-सङ्गे**—शिवानन्द सेन के साथ; **चले**—गई; **ताँहार**—उनकी; **गृहिणी**—पत्नी।

अनुवाद

श्रीवास पण्डित अपनी पत्नी मालिनी को ले गये और शिवानन्द सेन की पत्नी भी अपने पति के साथ गई।

শিবানন্দের বালক, নাম—চৈতন্য-দাস ।
তেঁহো চলিয়াছে প্রভুরে দেখিতে উল্লাস ॥২৩॥

शिवानन्देर बालक, नाम——चैतन्य-दास ।
तेंहो चलियाछे प्रभुरे देखिते उल्लास ॥ २३ ॥

शिवानन्देर बालक—शिवानन्द का पुत्र; **नाम**—नामक; **चैतन्य-दास**—चैतन्य दास; **तेंहो**—वह; **चलियाछे**—जा रहा था; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **देखिते**—दर्शन के लिए; **उल्लास**—प्रसन्न होकर।

अनुवाद

शिवानन्द सेन का पुत्र चैतन्य दास भी परम प्रसन्नतापूर्वक महाप्रभु के दर्शन की इच्छा से उन सबके साथ जा रहा था।

আচার্যরত্ন-সঙ্গে চলে তাঁহার গৃহিণী ।
তাঁহার প্রেমের কথা কহিতে না জানি ॥২৪॥

आचार्यरत्न-सङ्गे चले ताँहार गृहिणी ।
ताँहार प्रेमेर कथा कहिते ना जानि ॥ २४ ॥

आचार्यरत्न-सङ्गे—चन्द्रशेखर के साथ; **चले**—गई; **ताँहार**—उनकी; **गृहिणी**—पत्नी; **ताँहार**—उनके; **प्रेमेर कथा**—प्रेमभाव का वर्णन; **कहिते**—करने के लिए; **ना जानि**—मैं नहीं जानता कैसे।

अनुवाद

चन्द्रशेखर (आचार्यरत्न) की पत्नी भी गईं। महाप्रभु के प्रति चन्द्रशेखर के प्रेम की महानता का वर्णन मेरे बूते की बात नहीं है।

সব ঠাকুরাণী মহাপ্রভুকে ভিক্ষা দিতে ।
প্রভুর নানা প্রিয় দ্রব্য নিল ঘর হৈতে ॥২৫॥

सब ठाकुराणी महाप्रभुके भिक्षा दिते ।
प्रभुर नाना प्रिय द्रव्य निल घर हैते ॥ २५ ॥

सब ठाकुराणी—महान् भक्तों की सभी पत्नियाँ; **महाप्रभुके**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **भिक्षा दिते**—भोजन देने के लिए; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **नाना**—नाना प्रकार के; **प्रिय द्रव्य**—प्रिय व्यंजन; **निल**—ले लिए; **घर हैते**—घर से।

अनुवाद

महान् भक्तों की सारी पत्नियाँ महाप्रभु को तरह-तरह का भोजन भेंट

करने के लिए अपने-अपने घरों से महाप्रभु की मनपसन्द वस्तुएँ ले आई थीं।

শিবানন্দ-সেন করে সব সমাধান ।
ঘাটিয়াল প্রবোধি' দেন সবারে বাসা-স্থান ॥২৬॥

শিবানন্দ-সেন করে সব সমাধান ।
ঘাটিয়াল প্রবোধি' দেন সবারে বাসা-স্থান ॥ ২৬ ॥

शिवानन्द-सेन—शिवानन्द सेन ने; **करे**—की; **सब समाधान**—सारी व्यवस्था; **घाटियाल**—कर लगाने वाले सभी अधिकारी; **प्रबोधि'**—सन्तुष्ट करके; **देन**—दिया; **सबारे**—प्रत्येक को; **वासा-स्थान**—निवासस्थान।

अनुवाद

जैसा कहा जा चुका है, शिवानन्द सेन ने टोली की सभी आवश्यकताओं का प्रबन्ध किया। विशेषतया वे कर वसूल करने वाले व्यक्तियों को शान्त करते और हर एक के लिए विश्राम-स्थल ढूँढते थे।

ভক্ষ্য দিয়া করেন সবার সর্বত্র পালনে ।
পরম আনন্দে যান প্রভুর দরশনে ॥২৭॥

ভক্ষ্য দিয়া করেন সবার সর্বত্র পালনে ।
পরম আনন্দে যান প্রভুর দরশনে ॥ ২৭ ॥

भक्ष्य दिया—भोजन देकर; **करेन**—उन्होंने किया; **सबार**—प्रत्येक का; **सर्वत्र**—सब जगह; **पालने**—पालन; **परम आनन्दे**—परम प्रसन्नतापूर्वक; **यान**—वे गये; **प्रभुर दरशने**—श्री चैतन्य महाप्रभु के दर्शन करने।

अनुवाद

शिवानन्द सेन सभी भक्तों को भोजन देते थे और रास्ते-भर उनकी देख-रेख करते थे। इस तरह वे परम प्रसन्नतापूर्वक श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने जगन्नाथ पुरी गये।

রেমুণায় আসিয়া কৈল গোপীনাথ দরশন ।
আচার্য করিল তাহাঁ কীর্তন, নর্তন ॥২৮॥

रेमुणाय आसिया कैल गोपीनाथ दरशन ।
आचार्य्य करिल ताहाँ कीर्तन, नर्तन ॥ २८ ॥

रेमुणाय—रेमुणा; **आसिया**—आकर; **कैल**—किये; **गोपीनाथ दरशन**—गोपीनाथ के दर्शन; **आचार्य्य**—अद्वैत आचार्य; **करिल**—किया; **ताहाँ**—वहाँ; **कीर्तन**—कीर्तन; **नर्तन**—नृत्य।

अनुवाद

जब वे सब रेमुणा पहुँचे, तो सारे लोग भी गोपीनाथ का दर्शन करने गये। वहाँ मन्दिर में अद्वैत आचार्य ने नृत्य किया और गाया।

नित्यानन्देर परिचय सब सेवक सने ।
बहुत सम्मान आसि' कैल सेवक-गणे ॥ २९ ॥

नित्यानन्देर परिचय सब सेवक सने ।
बहुत सम्मान आसि' कैल सेवक-गणे ॥ २९ ॥

नित्यानन्देर—नित्यानन्द प्रभु का; **परिचय**—परिचय; **सब**—सब; **सेवक सने**—मन्दिर के पुजारियों से; **बहुत सम्मान**—बहुत सम्मान; **आसि'**—आकर; **कैल**—किया; **सेवक-गणे**—सभी पुजारियों ने।

अनुवाद

मन्दिर के सारे पुजारी श्री नित्यानन्द प्रभु से पहले से परिचित थे; अतएव वे सब आये और उन्होंने प्रभु का बहुत सम्मान किया।

सेइ रात्रि सब महान्त ताहाञि रहिला ।
बार क्षीर आनि' आगे सेवक धरिला ॥ ३० ॥

सेइ रात्रि सब महान्त ताहाञि रहिला ।
बार क्षीर आनि' आगे सेवक धरिला ॥ ३० ॥

सेइ रात्रि—उस रात; **सब महान्त**—सभी महान् भक्त; **ताहाञि रहिला**—वहीं रहे; **बार**—बारह पात्र; **क्षीर**—खीर; **आनि'**—लाकर; **आगे**—नित्यानन्द प्रभु के आगे; **सेवक**—पुजारियों ने; **धरिला**—रख दिये।

अनुवाद

उस रात सारे बड़े-बड़े भक्त मन्दिर में रहे और पुरोहितों ने दूध की खीर के बारह पात्र लाकर नित्यानन्द प्रभु के सामने रख दिये।

ক্ষীর বাঁটি' সবারে দিল প্রভু-নিত্যানন্দ ।
ক্ষীর-প্রসাদ পাঞা সবার বাড়িল আনন্দ ॥ ৩১ ॥

क्षीर बाँटि' सबारे दिल प्रभु-नित्यानन्द ।
क्षीर-प्रसाद पाञा सबार बाड़िल आनन्द ॥ ३१ ॥

क्षीर—खीर; **बाँटि'**—बाँटकर; **सबारे**—सबको; **दिल**—दे दी; **प्रभु-नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु; **क्षीर-प्रसाद**—खीर का प्रसाद; **पाञा**—पाकर; **सबार**—सबका; **बाड़िल**—बढ़ गया; **आनन्द**—दिव्य आनन्द।

अनुवाद

नित्यानन्द प्रभु ने इस खीर को प्रसाद रूप में हर एक को बाँट दिया। इस तरह हर एक का दिव्य आनन्द बढ़ गया।

মাধব-পুরীর কথা, গোপাল-স্থাপন ।
তাঁহারে গোপাল যৈছে মাগিল চন্দন ॥ ৩২ ॥

माधव-पुरीर कथा, गोपाल-स्थापन ।
ताँहारे गोपाल ग्रैछे मागिल चन्दन ॥ ३२ ॥

माधव-पुरीर कथा—माधवेन्द्र पुरी की कथा; **गोपाल-स्थापन**—गोपाल की पूर्ति की स्थापना; **ताँहारे**—उनसे; **गोपाल**—भगवान् गोपाल; **ग्रैछे**—जैसे; **मागिल**—उन्होंने माँगा; **चन्दन**—चन्दन।

अनुवाद

तब सबने माधवेन्द्र पुरी द्वारा गोपाल-अर्चाविग्रह की स्थापना की कहानी की चर्चा की और इसकी भी चर्चा की कि किस तरह गोपाल ने उनसे चन्दन माँगा था।

তাঁর লাগি' গোপীনাথ ক্ষীর চুরি কৈল ।
মহাপ্রভুর মুখে আগে এ কথা শুনিল ॥ ৩৩ ॥

ताँर लागि' गोपीनाथ क्षीर चुरि कैल ।
महाप्रभुर मुखे आगे ए कथा शुनिल ॥ ३३ ॥

ताँर लागि'—उन (माधवेन्द्रपुरी) के लिए; **गोपीनाथ**—गोपीनाथ नामक अर्चाविग्रह; **क्षीर**—खीर; **चुरि**—चुराकर; **कैल**—किया; **महाप्रभुर मुखे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के मुख से; **आगे**—पहले; **ए कथा**—यह घटना; **शुनिल**—सुनी थी।

अनुवाद

गोपीनाथ ने ही माधवेन्द्र पुरी के लिए खीर चुराई थी। इस घटना का वर्णन स्वयं श्री चैतन्य महाप्रभु पहले कर चुके थे।

सेई कथा सबार मध्ये कहे नित्यानन्द ।
शुनिया वैष्णव-मने बाड़िल आनन्द ॥ ३४ ॥

सेइ कथा सबार मध्ये कहे नित्यानन्द ।
शुनिया वैष्णव-मने बाड़िल आनन्द ॥ ३४ ॥

सेइ कथा—वही घटना; **सबार मध्ये**—उन सबके मध्य; **कहे**—सुनाई; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु ने; **शुनिया**—सुनकर; **वैष्णव-मने**—सभी वैष्णवों के मन में; **बाड़िल**—बढ़ गया; **आनन्द**—दिव्य आनन्द।

अनुवाद

यही कथा भगवान् नित्यानन्द ने सारे भक्तों को फिर से सुनाई। इस कथा को फिर से सुनकर भक्तों का दिव्य आनन्द बढ़ गया।

तात्पर्य

यहाँ पर *महाप्रभु मुखे* अर्थात् "श्री चैतन्य महाप्रभु के मुख से" शब्द महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि श्री चैतन्य महाप्रभु ने माधवेन्द्र पुरी की कथा सबसे पहले अपने गुरु श्रीपाद ईश्वर पुरी के मुख से सुनी थी। यह कथा मध्यलीला के चौथे अध्याय में अठारहवें श्लोक में दी हुई है। शान्तिपुर में श्री अद्वैत के घर पर कुछ समय तक रुकने के बाद महाप्रभु ने यह कथा नित्यानन्द प्रभु, जगदानन्द प्रभु, दामोदर पण्डित तथा मुकुन्द दास को सुनाई थी। जब ये लोग रेमुणा में गोपीनाथ के मन्दिर में गये, तो महाप्रभु ने माधवेन्द्र पुरी द्वारा गोपाल-अर्चाविग्रह की स्थापना तथा गोपीनाथ द्वारा खीर की चोरी का वर्णन किया था। इस घटना के कारण भगवान् गोपीनाथ क्षीरचोरा के नाम से विख्यात हैं।

एई-मत चलि' चलि' कटक आइला ।
साक्षि-गोपाल देखि' सबे से दिन रहिला ॥ ३५ ॥

एइ-मत चलि' चलि' कटक आइला ।
साक्षि-गोपाल देखि' सबे से दिन रहिला ॥ ३५ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **चलि' चलि'**—चलते चलते; **कटक आइला**—वे कटक पहुँच गये; **साक्षि-गोपाल देखि'**—साक्षी गोपाल अर्चाविग्रह को देखकर; **सबे**—सभी भक्त; **से दिन**—उस दिन; **रहिला**—वहाँ रह गये।

अनुवाद

इस तरह चलते चलते भक्तगण कटक शहर पहुँचे, जहाँ पर वे एक दिन रहे और उन्होंने साक्षि-गोपाल का मन्दिर देखा।

साक्षि-गोपालेर कथा कहे नित्यानन्द ।
शुनिया वैष्णव-मने बाड़िल आनन्द ॥ ३६ ॥

साक्षि-गोपालेर—साक्षी गोपाल की; **कथा**—कथा; **कहे**—वर्णन की; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु ने; **शुनिया**—सुनकर; **वैष्णव-मने**—सभी वैष्णवों के मन में; **बाड़िल**—बढ़ गया; **आनन्द**—दिव्य आनन्द।

अनुवाद

जब नित्यानन्द प्रभु ने साक्षि-गोपाल के सारे कार्यकलाप कह सुनाये, तो सारे वैष्णवों के मनों में दिव्य आनन्द उमड़ आया।

तात्पर्य

इन कार्यकलापों के लिए देखें मध्यलीला अध्याय ५, श्लोक ८-१३८।

प्रभुके मिलिते सबार उत्कण्ठा अन्तरे ।
शीघ्र करि' आइला सबे श्री-नीलाचले ॥ ३७ ॥

प्रभुके मिलिते—श्री चैतन्य महाप्रभु को मिलने के लिए; **सबार**—सबकी; **उत्कण्ठा**—उत्सुकता; **अन्तरे**—हृदय में; **शीघ्र करि'**—शीघ्र; **आइला**—पहुँच गये; **सबे**—वे सब; **श्री-नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी।

अनुवाद

टोली के सारे लोग महाप्रभु को देखने के लिए मन में बड़े उत्सुक थे, अतएव वे जल्दी-जल्दी जगन्नाथ पुरी की ओर चले।

আঠারনালাকে আইলা গোসাঞি শুনিয়া ।
দুই-মালা পাঠাইলা গোবিন্দ-হাতে দিয়া ॥৩৮॥
আঠারনালাকে আইলা গোসাঞি শুনিয়া ।
দুই-মালা পাঠাইলা গোবিন্দ-হাতে দিয়া ॥ ৩৮ ॥

आठारनालाके—आठारनाला; **आइला**—वे पहुँच गये; **गोसाञि**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **शुनिया**—सुनकर; **दुइ-माला**—दो मालाएँ; **पाठाइला**—भेजी; **गोविन्द-हाते दिया**—गोविन्द के हाथों से।

अनुवाद

जब वे सब आठारनाला नामक पुल पर आ गये, तो श्री चैतन्य महाप्रभु ने उनके आने का समाचार सुनकर गोविन्द के हाथों दो फूल-मालाएँ भेजीं।

দুই মালা গোবিন্দ দুই-জনে পরাইল ।
অদ্বৈত, অবধূত-গোসাঞি বড় সুখ পাইল ॥৩৯॥
দুই মালা গোবিন্দ দুই-জনে পরাইল ।
অদ্বৈত, অবধূত-গোসাঞি বড় সুখ পাইল ॥ ৩৯ ॥

दुइ माला—दोनों मालाएँ; **गोविन्द**—गोविन्द; **दुइ-जने पराइल**—दो व्यक्तियों (अद्वैत आचार्य और नित्यानन्द प्रभु) के गले में डाल दी; **अद्वैत**—अद्वैत आचार्य; **अवधूत-गोसाञि**—नित्यानन्द प्रभु; **बड़ सुख पाइल**—अत्यन्त प्रसन्न हो गये।

अनुवाद

गोविन्द ने वे दोनों मालाएँ अद्वैत आचार्य तथा नित्यानन्द प्रभु को भेंट कीं। इससे वे दोनों अत्यन्त सुखी हुए।

তাহাঞি আরম্ভ কৈল কৃষ্ণ-সঙ্কীর্তন ।
নাচিতে নাচিতে চলি' আইলা দুই-জন ॥৪০॥
তাহাঞি আরম্ভ কৈল কৃষ্ণ-সঙ্কীর্তন ।
নাচিতে নাচিতে চলি' আইলা দুই-জন ॥ ৪০ ॥

ताहाञि—उसी स्थल पर; **आरम्भ कैल**—आरम्भ किया; **कृष्ण-सङ्कीर्तन**—भगवान्

कृष्ण के पवित्र नाम का संकीर्तन; **नाचिते नाचिते**—नाचते नाचते; **चलि'**—चल रहे थे; **आइला**—पहुँच गये; **दुइ-जन**—वे दोनों।

अनुवाद

उन्होंने वे उसी स्थान पर भगवान् कृष्ण के पवित्र नाम का कीर्तन प्रारम्भ कर दिया और अद्वैत आचार्य तथा नित्यानन्द प्रभु दोनों ही नाचते-नाचते जगन्नाथ पुरी पहुँचे।

पुनः माला दिया स्वरूपादि निज-गण ।
आगु बाड़ि' पाठाइल शचीर नन्दन ॥ ४१ ॥

पुनः माला दिया स्वरूपादि निज-गण ।
आगु बाड़ि' पाठाइल शचीर नन्दन ॥ ४१ ॥

पुनः—पुनः; **माला**—मालाएँ; **दिया**—दीं; **स्वरूप-आदि**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा अन्य; **निज-गण**—अपने निजी पार्षदों को; **आगु बाड़ि'**—आगे बढ़कर; **पाठाइल**—भेजा; **शचीर नन्दन**—शची माता के पुत्र ने।

अनुवाद

तब दूसरी बार श्री चैतन्य महाप्रभु ने स्वरूप दामोदर तथा अपने अन्य निजी संगियों के हाथों मालाएँ भेजीं। शचीमाता के पुत्र द्वारा भेजे जाने से वे सभी आगे बढ़े।

नरेन्द्र आसिया ताहाँ सवारे मिलिला ।
महाप्रभुर दत्त माला सवारे पराइला ॥ ४२ ॥

नरेन्द्र आसिया ताहाँ सबारे मिलिला ।
महाप्रभुर दत्त माला सबारे पराइला ॥ ४२ ॥

नरेन्द्र—नरेन्द्र नामक सरोवर पर; **आसिया**—आकर; **ताहाँ**—वहाँ; **सबारे**—सब लोग; **मिलिला**—मिले; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा; **दत्त**—दी गईं; **माला**—मालाएँ; **सबारे पराइला**—प्रत्येक भक्त को भेंट कीं।

अनुवाद

जब बंगाल से आने वाले भक्त नरेन्द्र सरोवर पहुँचे, तो स्वरूप दामोदर

तथा अन्य लोग उनसे मिले और उन्हें श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा भेजी गई मालाएँ भेंट कीं।

सिंह-द्वार-निकटे आइला शुनि' गौररराय ।
आपने आसिया प्रभु मिलिला सवाय ॥ ४३ ॥

सिंह-द्वार-निकटे आइला शुनि' गौरराय ।
आपने आसिया प्रभु मिलिला सबाय ॥ ४३ ॥

सिंह-द्वार—सिंह द्वार के; **निकटे**—निकट; **आइला**—पहुँच गये हैं; **शुनि'**—सुनकर; **गौरराय**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आपने**—स्वयं; **आसिया**—आकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **मिलिला सबाय**—उन सबसे मिले।

अनुवाद

जब भक्तगण सिंह-द्वार के पास पहुँच गये, तो श्री चैतन्य महाप्रभु ने यह समाचार सुना और वे स्वयं उनसे मिलने गये।

सबा लञा कैल जगन्नाथ-दरशन ।
सबा लञा आइला पुनः आपन-भवन ॥ ४४ ॥

सबा लञा कैल जगन्नाथ-दरशन ।
सबा लञा आइला पुनः आपन-भवन ॥ ४४ ॥

सबा लञा—उन सबको लेकर; **कैल**—किया; **जगन्नाथ-दरशन**—भगवान् जगन्नाथ का दर्शन; **सबा लञा**—उन सबको लेकर; **आइला**—लौट गये; **पुनः**—दोबारा; **आपन-भवन**—अपने भवन को।

अनुवाद

फिर श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनके सारे भक्तों ने भगवान् जगन्नाथ का दर्शन किया। अन्त में वे उन सबको अपने साथ लेकर अपने निवासस्थान लौट गये।

वाणीनाथ, काशी-मिश्र प्रसाद आनिल ।
स्वहस्ते सबारे प्रभु प्रसाद खाओयाइल ॥ ४५ ॥

वाणीनाथ, काशी-मिश्र प्रसाद आनिल ।
स्वहस्ते सबारे प्रभु प्रसाद खाओयाइल ॥ ४५ ॥

वाणीनाथ—वाणीनाथ; **काशी-मिश्र**—काशीमिश्र; **प्रसाद आनिल**—सब प्रकार का प्रसाद लाये; **स्व-हस्ते**—अपने हाथों से; **सबारे**—प्रत्येक भक्त को; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **प्रसाद**—भगवान् जगन्नाथ का प्रसाद; **खाओयाइल**—खिलाया।

अनुवाद

तब वाणीनाथ राय तथा काशी मिश्र बड़ी मात्रा में प्रसाद ले आये और श्री चैतन्य महाप्रभु ने उस प्रसाद को अपने हाथों से सबको बाँटा तथा खिलाया।

পূর্ব বৎসরে যাঁর যেই বাসা-স্থান ।
তাহাঁ সবা পাঠাঞা করাইল বিশ্রাম ॥ ৪৬ ॥

পূর্ব বৎসরে য়াঁর য়েই বাসা-স্থান ।
তাহাঁ সবা পাঠাঞা করাইল বিশ্রাম ॥ ৪৬ ॥

पूर्व वत्सरे—गत वर्ष; **य़ाँर**—जिसका; **य़ेइ**—जहाँ कहीं; **वासा-स्थान**—निवासस्थान; **ताहाँ**—वहाँ; **सबा**—सबको; **पाठाञा**—भेजकर; **कराइल विश्राम**—विश्राम करवाया।

अनुवाद

पिछले वर्ष हर एक को विशेष निवासस्थान मिला था; उसे वही स्थान पुनः दिया गया। इस तरह वे सभी आराम करने चले गये।

এই-মত ভক্ত-গণ রহিলা চারি মাস ।
প্রভুর সহিত করে কীর্তন-বিলাস ॥ ৪৭ ॥

এই-মত ভক্ত-গণ রহিলা চারি মাস ।
প্রভুর সহিত করে কীর্তন-বিলাস ॥ ৪৭ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **भक्त-गण**—भक्तगण; **रहिला**—रहे; **चारि मास**—चार मास के लिए; **प्रभुर सहित**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **करे**—कीं; **कीर्तन-विलास**—संकीर्तन की लीलाएँ।

अनुवाद

सारे भक्त लगातार चार मास तक वहीं रहे और श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ हरे कृष्ण महामन्त्र के कीर्तन का आनन्द लेते रहे।

পূর্ববত্রথ-যাত্রা-কাল যাবে আইল ।
সবা লঞা গুণ্ডিচা-মন্দির প্রক্ষালিল ॥ ৪৮ ॥

पूर्ववत् रथ-यात्रा-काल यावे आइल ।
सबा लञा गुण्डिचा-मन्दिर प्रक्षालिल ॥ ४८ ॥

पूर्व-वत्—गत वर्ष की भाँति; **रथ-यात्रा-काल**—रथयात्रा उत्सव का समय; **यावे**—जब; **आइल**—आया; **सबा लञा**—उन सबको लेकर; **गुण्डिचा-मन्दिर**—गुण्डीचा मन्दिर; **प्रक्षालिल**—धोया।

अनुवाद

जब रथयात्रा का समय आया, तो सबने पिछले वर्ष की तरह गुण्डिचा मन्दिर की सफाई की।

কুলীন-গ্রামী পট্ট-ডোরী জগন্নাথে দিল ।
পূর্ববত্রথ-অগ্রে নর্তন করিল ॥ ৪৯ ॥

कुलीन-ग्रामी पट्ट-डोरी जगन्नाथे दिल ।
पूर्ववत् रथ-अग्रे नर्तन करिल ॥ ४९ ॥

कुलीन-ग्रामी—कुलीन ग्राम के निवासियों ने; **पट्ट-डोरी**—रेशमी रस्सियाँ; **जगन्नाथे दिल**—भगवान् जगन्नाथ को भेंट की; **पूर्व-वत्**—गत वर्ष की भाँति; **रथ-अग्रे**—रथ के आगे; **नर्तन करिल**—नृत्य किया।

अनुवाद

कुलीन ग्राम के निवासियों ने रेशमी डोरियाँ जगन्नाथजी को भेंट कीं और पहले की तरह वे सब भगवान् के रथ के आगे नाचे।

বহু নৃত্য করি' পুনঃ চলিল উদ্যানে ।
বাপী-তীরে তাহাঁ যাই' করিল বিশ্রামে ॥ ৫০ ॥

बहु नृत्य करि' पुनः चलिल उद्याने ।
वापी-तीरे ताहाँ याइ' करिल विश्रामे ॥ ५० ॥

बहु नृत्य करि'—बहुत नृत्य करने के बाद; **पुनः**—पुनः; **चलिल**—चल पड़े; **उद्याने**—उद्यान को; **वापी-तीरे**—सरोवर के तट पर; **ताहाँ याइ'**—वहाँ जाकर; **करिल विश्रामे**—विश्राम किया।

अनुवाद

काफी नाचने के बाद सभी निकटवर्ती बगीचे में गये और उन्होंने सरोवर के तट पर विश्राम किया।

রাঢ়ী এক বিপ্র, তেঁহো—নিত্যানন্দ দাস ।
মহা-ভাগ্যবান্তেঁহো, নাম—কৃষ্ণদাস ॥ ৫১॥

राढ़ी एक विप्र, तेंहो—नित्यानन्द दास ।
महा-भाग्यवान्तेंहो, नाम—कृष्णदास ॥ ५१ ॥

राढ़ी एक विप्र—राढ़-देश (जहाँ गंगा नहीं बहती) का एक ब्राह्मण; **तेंहो**—वह; **नित्यानन्द दास**—भगवान् नित्यानन्द का दास; **महा-भाग्यवान्**—महा-भाग्यवान; **तेंहो**—वह; **नाम**—नामक; **कृष्णदास**—कृष्णदास।

अनुवाद

कृष्णदास नामक एक ब्राह्मण, जो राढ़देश का रहने वाला था और नित्यानन्द प्रभु का सेवक था, महा भाग्यशाली व्यक्ति था।

ঘট ভরি' প্রভুর তেঁহো অভিষেক কৈল ।
তাঁর অভিষেকে প্রভু মহা-তৃপ্ত হৈল ॥ ৫২॥

घट भरि' प्रभुर तेंहो अभिषेक कैल ।
ताँर अभिषेके प्रभु महा-तृप्त हैल ॥ ५२ ॥

घट भरि'—जल का एक घड़ा भरकर; **प्रभुर**—भगवान् चैतन्य महाप्रभु का; **तेंहो**—उसने; **अभिषेक कैल**—अभिषेक किया; **ताँर**—उसके; **अभिषेके**—महाप्रभु को नहलाने के कार्य से; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **महा-तृप्त हैल**—अत्यन्त सन्तुष्ट हो गये।

अनुवाद

कृष्ण दास ने एक बड़े पात्र में जल भरकर महाप्रभु के ऊपर डालकर स्नान कराया। इससे महाप्रभु अत्यन्त सन्तुष्ट हो गये।

বলগণ্ডি-ভোগের বহু প্রসাদ আইল ।
সবা সঙ্গে মহাপ্রভু প্রসাদ খাইল ॥ ৫৩॥

बलगण्डि-भोगेर बहु प्रसाद आइल ।
सबा सङ्गे महाप्रभु प्रसाद खाइल ॥५३॥

बलगण्डि-भोगेर—बलगण्डी पर लगाए गये भोग का; **बहु प्रसाद**—बड़ी मात्रा में प्रसाद; **आइल**—आया; **सबा सङ्गे**—सभी भक्तों के साथ; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **प्रसाद**—प्रसाद; **खाइल**—खाया।

अनुवाद

तभी बलगण्डि में भगवान् का अर्पित काफी प्रसाद आया, जिसे श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनके सभी भक्तों ने ग्रहण किया।

तात्पर्य

बलगंडि के सन्दर्भ के लिए देखें मध्यलीला १३.१९३।

পূর্ববত্রথ-যাত্রা কৈল দরশন ।
হেরা-পঞ্চমী-যাত্রা দেখে লঞা ভক্ত-গণ ॥৫৪॥

পূর্ববৎ্ রথ-য়াত্রা কৈল দরশন ।
হেরা-পঞ্চমী-য়াত্রা দেখে লঞা ভক্ত-গণ ॥৫৪॥

পূর্ব-বৎ্—গত वर्ष की भाँति; **রথ-য়াত্রা**—रथयात्रा उत्सव के; **কৈল দরশন**—दर्शन किये; **হেরা-পঞ্চমী-য়াত্রা**—हेरा-पंचमी का उत्सव; **দেখে**—उन्हों ने देखा; **লঞা ভক্ত-গণ**—सभी भक्तों के संग।

अनुवाद

पिछले वर्ष की तरह महाप्रभु ने सारे भक्तों सहित रथयात्रा उत्सव तथा हेरापंचमी उत्सव भी देखा।

আচার্য-গোসাঞি প্রভুর কৈল নিমন্ত্রণ ।
তার মধ্যে কৈল যৈছে ঝড়-বরিষণ ॥৫৫॥

আচার্য্য-গোসাঞি প্রভুর কৈল নিমন্ত্রণ ।
তার মধ্যে কৈল য়ৈছে ঝড়-বরিষণ ॥৫৫॥

আচার্য্য-গোসাঞি—अद्वैत आचार्य ने; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **কৈল**—किया; **নিমন্ত্রণ**—निमंत्रण; **তার মধ্যে**—उस घटना के मध्य; **কৈল**—हुआ; **য়ৈছে**—जैसा; **ঝড়-বরিষণ**—तूफान।

अनुवाद

तब अद्वैत आचार्य ने श्री चैतन्य महाप्रभु को निमन्त्रण दिया, किन्तु तभी तेज वर्षा के साथ भीषण तूफान आ गया।

বিস্তারি' বর্ণিয়াছেন দাস-বৃন্দাবন ।
শ্রীবাস প্রভুরে তবে কৈল নিমন্ত্রণ ॥৫৬॥

বিস্তারি' বর্ণিয়াছেন দাস-বৃন্দাবন ।
শ্রীবাস প্রভুরে তবে কৈল নিমন্ত্রণ ॥৫৬॥

বিস্তারি'—विस्तार करके; **বর্ণিয়াছেন**—वर्णन किया है; **দাস-বৃন্দাবন**—श्रील वृन्दावन दास ठाकुर ने; **শ্রীবাস**—श्रीवास ने; **প্রভুরে**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **তবে**—तब; **কৈল নিমন্ত্রণ**—निमंत्रण दिया।

अनुवाद

इन सारी घटनाओं का विस्तृत वर्णन श्रील वृन्दावन दास ठाकुर ने किया है। तब एक दिन श्रीवास ठाकुर ने महाप्रभु को निमन्त्रण दिया।

तात्पर्य

चैतन्य भागवत (अन्त्यलीला, अध्याय ९) में निम्नलिखित विवरण मिलता है। एक दिन श्रील अद्वैत आचार्य ने यह सोचकर महाप्रभु को आमन्त्रण दिया कि यदि वे अकेले आयेंगे, तो उन्हें भरपेट खिलाया जायेगा। किन्तु ऐसी घटना घटी कि जब अन्य संन्यासी अद्वैत आचार्य के घर भोजन करने जा रहे थे, तो तेज वर्षा के साथ भीषण अंधड़ आ गया, जिससे वे उनके घर नहीं पहुँच सके। इस तरह अद्वैत आचार्य की इच्छानुकूल श्री चैतन्य महाप्रभु अकेले ही पहुँचे और उन्होंने प्रसाद ग्रहण किया।

প্রভুর প্রিয়-ব্যঞ্জন সব রান্ধেন মালিনী ।
'ভক্ত্যে দাসী'-অভিমান, 'স্নেহেতে জননী' ॥৫৭॥

প্রভুর প্রিয়-ব্যঞ্জন সব রান্ধেন মালিনী ।
'ভক্ত্যে দাসী'-অভিমান, 'স্নেহেতে জননী' ॥৫৭॥

প্রভুর—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **প্রিয়-ব্যঞ্জন**—प्रिय व्यंजन (तरकारियाँ); **সব**—सब; **রান্ধেন**—पकाए; **মালিনী**—श्रीवास ठाकुर की पत्नी, मालिनी; **ভক্ত্যে দাসী**—भक्ति में वह

एक दासी जैसी थी; **अभिमान**—उनकी धारणा थी; **स्नेहेते**—प्रेम में; **जननी**—ठीक एक माता की तरह।

अनुवाद

श्रीवास ठाकुर की पत्नी मालिनी देवी ने महाप्रभु की प्रिय तरकारियाँ पकाईं। वे भक्तिवश अपने आपको श्री चैतन्य महाप्रभु की दासी मानती थीं, किन्तु स्नेह में वे माता तुल्य थीं।

आचार्यरत्न-आदि यत मुख्य भक्त-गण ।
मध्ये मध्ये प्रभुरे करेन निमन्त्रण ॥५८॥

आचार्य्यरत्न-आदि यत मुख्य भक्त-गण ।
मध्ये मध्ये प्रभुरे करेन निमन्त्रण ॥५८॥

आचार्य्यरत्न—चन्द्रशेखर; **आदि**—आदि; **यत**—सब; **मुख्य भक्त-गण**—मुख्य भक्तगण; **मध्ये मध्ये**—बीच बीच में; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **करेन निमन्त्रण**—निमन्त्रण देते थे।

अनुवाद

चन्द्रशेखर (आचार्यरत्न) आदि प्रमुख भक्त बारी-बारी से श्री चैतन्य महाप्रभु को निमन्त्रित देते रहे।

चातुर्मास्य-अन्ते पुनः नित्यानन्दे लञा ।
किवा युक्ति करे नित्य निभृते वसिया ॥५९॥

चातुर्मास्य-अन्ते पुनः नित्यानन्दे लञा ।
किबा युक्ति करे नित्य निभृते वसिया ॥५९॥

चातुर्मास्य-अन्ते—चतुर्मास के अन्त में; **पुनः**—दोबारा; **नित्यानन्दे**—श्री नित्यानन्द प्रभु; **लञा**—विश्वास में लेकर; **किबा**—क्या; **युक्ति करे**—वे परामर्श करने लगे; **नित्य**—प्रतिदिन; **निभृते**—एकान्त स्थान में; **वसिया**—बैठकर।

अनुवाद

चातुर्मास्य बीत जाने पर चैतन्य महाप्रभु नित्य ही एकान्त स्थान में नित्यानन्द से फिर परामर्श करने लगे। किन्तु कोई यह नहीं जान सका कि वे क्या परामर्श करते थे।

আচার্য-গোসাঞি প্রভুকে কহে ঠারে-ঠোরে ।
আচার্য তর্জা পড়ে, কেহ বুঝিতে না পারে ॥৬০॥

আচার্য্য-গোসাঞি প্রভুকে কহে ঠারে-ঠোরে ।
আচার্য্য তর্জা পড়ে, কেহ বুঝিতে না পারে ॥৬০॥

আচার্য্য-গোসাঞি—অদ্বৈত আচার্য ने; **প্রভুকে**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **কহে**—कहा; **ঠারে-ঠোরে**—संकेत द्वारा; **আচার্য্য**—अद्वैत आचार्य; **তর্জা পড়ে**—कुछ पद्य पढ़े; **কেহ**—कोई; **বুঝিতে**—समझने के लिए; **না পারে**—सक्षम न था।

अनुवाद

तब श्रील अद्वैत आचार्य ने इशारों से चैतन्य महाप्रभु से कुछ कहा और कुछ पद्य पढ़े, जिन्हें कोई समझ नहीं सका।

তাঁর মুখ দেখি' হাসে শচীর নন্দন ।
অঙ্গীকার জানি' আচার্য করেন নর্তন ॥৬১॥

তাঁর মুখ দেখি' হাসে শচীর নন্দন ।
অঙ্গীকার জানি' আচার্য্য করেন নর্তন ॥৬১॥

তাঁর মুখ—उनका मुख; **দেখি'**—देखकर; **হাসে**—हँसने लगे; **শচীর নন্দন**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **অঙ্গীকার জানি'**—स्वीकृति समझकर; **আচার্য্য**—अद्वैत आचार्य ने; **করেন**—किया; **নর্তন**—नृत्य।

अनुवाद

अद्वैत आचार्य का मुँह देखकर श्री चैतन्य महाप्रभु हँसने लगे। यह जानकर कि महाप्रभु ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है, अद्वैत आचार्य नाचने लगे।

কিবা প্রার্থনা, কিবা আজ্ঞা—কেহ না বুঝিল ।
আলিঙ্গন করি' প্রভু তাঁরে বিদায় দিল ॥৬২॥

কিবা প্রার্থনা, কিবা আজ্ঞা—কেহ না বুঝিল ।
আলিঙ্গন করি' প্রভু তাঁরে বিদায় দিল ॥৬২॥

কিবা—क्या; **প্রার্থনা**—प्रार्थना; **কিবা**—क्या; **আজ্ঞা**—आदेश; **কেহ**—कोई भी; **না**

बुझिल—नहीं जानता था; **आलिङ्गन करि'**—आलिंगन करके; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँरे**—उनको; **विदाय दिल**—विदा दी।

अनुवाद

यह कोई नहीं जान सका कि अद्वैत आचार्य ने किस चीज के लिए प्रार्थना की अथवा महाप्रभु ने क्या आदेश दिया। आचार्य का आलिंगन करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन्हें विदा किया।

নিত্যানন্দে কহে প্রভু,—শুনহ, শ্রীপাদ ।
এই আমি মাগি, তুমি করহ প্রসাদ ॥ ৬৩ ॥

নিত্যানন্দে কহে প্রভু,—শুনহ, শ্রীপাদ ।
এই আমি মাগি, তুমি করহ প্রসাদ ॥ ৬৩ ॥

নিত্যানন্দে—नित्यानन्द प्रभु को; **কহে**—कहा; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **শুনহ**—कृपया सुनो; **শ্রীপাদ**—हे श्रीपाद (हे पवित्र व्यक्ति); **এই**—यह; **আমি**—मैं; **মাগি**—प्रार्थना करता हूँ; **তুমি**—तुम्हें; **করহ**—कृपया करो; **প্রসাদ**—दया।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने नित्यानन्द प्रभु से कहा, "हे श्रीपाद, कृपया मेरी सुनो। मैं तुम से कुछ अनुरोध करना चाहता हूँ। उसे स्वीकार करो।

প্রতি-বর্ষ নীলাচলে তুমি না আসিবা ।
গৌড়ে রহি' মোর ইচ্ছা সফল করিবা ॥ ৬৪ ॥

প্রতি-বর্ষ নীলাচলে তুমি না আসিবা ।
গৌড়ে রহি' মোর ইচ্ছা সফল করিবা ॥ ৬৪ ॥

প্রতি-বর্ষ—प्रतिवर्ष; **নীলাচলে**—जगन्नाथ पुरी में; **তুমি**—तुम; **না আসিবা**—न आओ; **গৌড়ে রহি'**—बंगाल में रहकर; **মোর ইচ্ছা**—मेरी इच्छा; **স-ফল করিবা**—पूरी करो।

अनुवाद

"प्रतिवर्ष जगन्नाथ पुरी न आओ, अपितु बंगाल में ही रहकर मेरी इच्छा पूरी करो।"

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु का सन्देश है कि इस पतित कलियुग में एकमात्र

प्रभावी औषधि—हरे कृष्ण महामन्त्र के कीर्तन का प्रसार किया जाए। वे अपनी माता के आदेशानुसार जगन्नाथ पुरी में रह रहे थे और भक्तगण उनका दर्शन करने आते रहते थे। फिर भी महाप्रभु ने सोचा कि इस सन्देश का पूरे बंगाल में अच्छी तरह प्रचार करना चाहिए, किन्तु उनकी अनुपस्थिति में इसे सम्पन्न कर सकने वाला कोई अन्य व्यक्ति नहीं था। इसीलिए महाप्रभु ने नित्यानन्द प्रभु से अनुरोध किया कि वे वहाँ रुककर कृष्णभावनामृत के सन्देश का प्रसार करें। महाप्रभु ने ऐसे ही प्रचार-कार्य का उत्तरदायित्व रूप गोस्वामी तथा सनातन गोस्वामी को सौंप रखा था। इसीलिए नित्यानन्द प्रभु से अनुरोध किया गया कि वे प्रतिवर्ष जगन्नाथ पुरी न आयें, यद्यपि जगन्नाथजी के दर्शन से प्रत्येक भक्त को बहुत लाभ पहुँचता है। तो क्या इसका यह अर्थ होता है कि महाप्रभु नित्यानन्द प्रभु को सुअवसर से वंचित रखना चाहते थे? नहीं। जो श्री चैतन्य महाप्रभु का आज्ञाकारी दास है, उसे उनके आदेश का पालन करना चाहिए, भले ही उसे जगन्नाथ पुरी जाकर जगन्नाथजी के दर्शन से वंचित क्यों न होना पड़े। दूसरे शब्दों में, श्री चैतन्य महाप्रभु के आदेश का पालन करना भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करके अपनी इन्द्रियों को तुष्ट करने की अपेक्षा बहुत बड़ा सौभाग्य है।

विश्वभर में चैतन्य महाप्रभु के सम्प्रदाय का प्रचार करना अपनी इन्द्रियतृप्ति के लिए वृन्दावन या जगन्नाथ पुरी में रहने की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है। कृष्णभावनामृत का प्रसार करना श्री चैतन्य महाप्रभु का कार्य है, अतएव उनके निष्ठावान भक्तों को उनकी इच्छा पूरी करनी चाहिए।

पृथिवीते आछे यत नगरादि ग्राम।
सर्वत्र प्रचार हइबे मोर नाम॥

श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्तों को विश्व के नगर-नगर तथा ग्राम-ग्राम में कृष्णभावनामृत का प्रचार करना चाहिए। इससे महाप्रभु तुष्ट होंगे। अपनी निजी तृप्ति के लिए मनमाने ढंग से कार्य करने की जरूरत नहीं है। यह आदेश *परम्परा* से प्राप्त होता है और गुरु इस आदेश को शिष्य के समक्ष प्रस्तुत करता है, जिससे वह श्री चैतन्य महाप्रभु के सन्देश का प्रसार कर सके। प्रत्येक शिष्य

का कर्तव्य है कि वह अपने प्रामाणिक गुरु के आदेश का पालन करे और चैतन्य महाप्रभु के सन्देश को सारे विश्व में प्रसारित करे।

তাহাঁ সিদ্ধি করে—হেন অন্যে না দেখিয়ে ।
আমার 'দুষ্কর' কর্ম, তোমা হৈতে হয়ে ॥৬৫॥

তাহাঁ সিদ্ধি করে—হেন অন্যে না দেখিয়ে ।
আমার 'দুষ্কর' কর্ম, তোমা হৈতে হয়ে ॥৬৫॥

তাহাঁ—वहाँ; **সিদ্ধি**—सफलता; **করে**—कर सकते हो; **হেন**—जो; **অন্যে**—अन्य कोई व्यक्ति; **না**—नहीं; **দেখিয়ে**—देखता हूँ; **আমার**—मेरा; **দুষ্কর**—कठिन; **কর্ম**—कार्य; **তোমা**—तुम्हारे; **হৈতে**—द्वारा; **হয়ে**—सफल होता है।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "तुम वह कार्य कर सकते हो, जिसे मैं भी नहीं कर सकता। तुम्हारे अतिरिक्त मुझे गौड़देश में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिल सकता, जो मेरे उद्देश्य को वहाँ पूरा कर सके।"

तात्पर्य

भगवान् चैतन्य का उद्देश्य इस युग के पतित जीवों का उद्धार करना है। इस कलियुग में लगभग शतप्रतिशत जनता पतित है। निश्चय ही श्री चैतन्य महाप्रभु ने अनेक पतित जीवों का उद्धार किया, किन्तु उनके शिष्य उच्च जाति से आये थे। उदाहरणार्थ, श्री रूप गोस्वामी, सनातन गोस्वामी, सार्वभौम भट्टाचार्य तथा अन्य अनेक लोग सामाजिक दृष्टि से उच्च थे, किन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से पतित थे, जिनका उद्धार महाप्रभु ने किया। श्रील रूप तथा सनातन गोस्वामी सरकारी नौकरी में थे और सार्वभौम भट्टाचार्य भारत के शीर्षस्थ विद्वान थे। इसी प्रकार प्रकाशानन्द सरस्वती हजारों मायावादी संन्यासियों के अगुवा थे। किन्तु श्रील नित्यानन्द प्रभु ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने जगाइ तथा माधाइ जैसे व्यक्तियों का उद्धार किया। इसीलिए भगवान् चैतन्य कहते हैं—*आमार 'दुष्कर' कर्म तोमा हइते हये।* जगाइ तथा माधाइ का उद्धार एकमात्र नित्यानन्द प्रभु की कृपा से हो सका। जब उन्होंने नित्यानन्द प्रभु को घायल कर दिया, तो भगवान् चैतन्य क्रुद्ध हुए और उन्होंने अपने सुदर्शन चक्र से उन्हें

मार डालने का निश्चय किया। किन्तु नित्यानन्द प्रभु ने उन्हें महाप्रभु के रोष से बचाया और उनका उद्धार किया। गौर-निताई अवतार में यह माना जाता है कि भगवान् असुरों का वध नहीं करेंगे, अपितु कृष्णभावनामृत का प्रचार करके उनका उद्धार करेंगे। जगाइ तथा माधाइ के किस्से में महाप्रभु इतने क्रुद्ध थे कि वे उन्हें तुरन्त ही मार डालते, किन्तु नित्यानन्द प्रभु इतने दयालु थे कि उन्होंने उन्हें न केवल मृत्यु से बचा लिया, अपितु उन्हें दिव्य पद भी दिलाया। अत: जो श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा सम्भव नहीं हो सका, उसे नित्यानन्द प्रभु ने कर दिखाया।

इसी तरह यदि कोई व्यक्ति परम्परा में गौर-निताई की सेवा के प्रति सत्यनिष्ठ है, तो वह नित्यानन्द प्रभु की सेवा को भी मात दे सकता है। यह गुरु-शिष्य परम्परा विधि है। नित्यानन्द प्रभु ने तो जगाइ तथा माधाइ का ही उद्धार किया, किन्तु नित्यानन्द प्रभु का दास उनकी कृपा से हजारों जगाइयों तथा माधाइयों का उद्धार कर सकता है। गुरु-शिष्य परम्परा की यही विशेषता है। गुरु-शिष्य परम्परा में स्थित व्यक्ति को उसके कार्यकलापों से जाना जा सकता है। जहाँ तक भगवान् तथा उनके भक्तों के कार्यों का सम्बन्ध है, यह बिल्कुल सही साबित होता है। अतएव शिवजी कहते हैं :

आराधनानां सर्वेषां विष्णोराराधनं परं।
तस्मात् परतरं देवि तदीयानां समर्चनम्॥

"सभी प्रकार की पूजाओं में भगवान् विष्णु की पूजा सर्वश्रेष्ठ है, किन्तु भगवान् विष्णु की पूजा से भी श्रेष्ठ है उनके भक्त अर्थात् वैष्णव की पूजा।" (पद्म पुराण)

विष्णु की कृपा से एक वैष्णव विष्णु से अच्छी सेवा कर सकता है—यह वैष्णव का विशेष अधिकार है। भगवान् तो चाहते हैं कि उनके दास उनसे बढ़कर कार्य करें। उदाहरणार्थ, कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को लड़ने के लिए उकसाया, क्योंकि युद्धभूमि के सारे योद्धाओं को कृष्ण की योजना के अनुसार मरना ही था। कृष्ण स्वयं इसका श्रेय लेना नहीं चाहते थे, वे यह श्रेय अर्जुन को देना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने अर्जुन से लड़ने और यश अर्जित करने के लिए कहा :

तस्मात् त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व
जित्वा शत्रून् भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्
मयैवैते निहताः पूर्वमेव
निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्॥

"अतएव उठो और युद्ध करने के लिए तैयार हो जाओ और यश कमाओ। अपने दुश्मनों को जीतकर तुम समृद्धशाली राज्य का भोग करोगे। वे मेरी योजना से पहले ही मर चुके हैं, अतः हे सव्यसाची, तुम युद्ध में निमित्त मात्र बनो। (*भगवद्गीता* ११.३३)

इस तरह पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् उस भक्त को श्रेय देते हैं, जो किसी बड़े कार्य को ढंग से पूरा करता है। भगवान् रामचन्द्र के दास हनुमानजी अथवा वज्रांगजी एक अन्य उदाहरण हैं। हनुमानजी ही एक छलांग में भारतवर्ष के किनारे से लंका के किनारे जा पहुँचे थे। जब भगवान् रामचन्द्रजी ने वहाँ जाना चाहा, तो हनुमान ने पत्थर का मार्ग बना दिया, यद्यपि उनकी इच्छा से ही पत्थर समुद्र में तैर सके थे। यदि हम केवल श्री चैतन्य महाप्रभु के आदेशों का पालन करें और नित्यानन्द प्रभु के चरणचिह्नों का अनुसरण करें, तो यह कृष्णभावनामृत आन्दोलन आगे बढ़ सकता है और हमारे प्रचारकों द्वारा भगवत्-सेवा में निष्ठावान रहकर इससे भी अधिक कठिन कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

নিত্যানন্দ কহে,—আমি 'দেহ' তুমি 'প্রাণ' ।
'দেহ' 'প্রাণ' ভিন্ন নহে,—এই ত প্রমাণ ॥ ৬৬॥

নিত্যানন্দ কহে,—আমি 'দেহ' তুমি 'প্রাণ' ।
'দেহ' 'প্রাণ' ভিন্ন নহে,—এই ত প্রমাণ ॥ ৬৬॥

নিত্যানন্দ কহে—नित्यानन्द प्रभु ने कहा; **আমি**—मैं; **দেহ**—देह; **তুমি**—आप; **প্রাণ**—प्राण; **দেহ**—देह; **প্রাণ**—प्राण; **ভিন্ন নহে**—पृथक् नहीं; **এই ত প্রমাণ**—यही प्रमाण है।

अनुवाद

नित्यानन्द प्रभु ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, आप प्राण हैं और मैं शरीर हूँ। प्राण तथा शरीर में कोई अन्तर नहीं है। अपितु प्राण शरीर से बढ़कर है।

অচিন্ত্য-শক্ত্যে কর তুমি তাহার ঘটন ।
যে করাহ, সেই করি, নাহিক নিয়ম ॥৬৭॥

अचिन्त्य-शक्त्ये कर तुमि ताहार घटन ।
ये कराह, सेइ करि, नाहिक नियम ॥ ६७॥

अचिन्त्य-शक्त्ये—अचिन्त्य शक्ति से; **कर**—करो; **तुमि**—आप; **ताहार**—उस सम्बन्ध का; **घटन**—सम्पन्न; **ये**—जो कुछ; **कराह**—आप मुझसे करवाते हो; **सेइ**—वह; **करि**—मैं करता हूँ; **नाहिक**—नहीं है; **नियम**—कोई अवरोध।

अनुवाद

"आप अपनी अचिन्त्य शक्ति से जो चाहें सो कर सकते हैं और आप मुझसे जो भी कराते हैं, उसे मैं बिना किसी प्रतिबन्ध के करता हूँ।"

तात्पर्य

जैसाकि *श्रीमद्भागवत* के प्रारम्भ में कहा गया है—*तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये।* ब्रह्माजी इस ब्रह्माण्ड के पहले जीव हैं और वे ही इस ब्रह्माण्ड के स्रष्टा भी हैं। सो कैसे? यद्यपि ब्रह्मा प्रथम जीव हैं, किन्तु वे *विष्णु तत्त्व* की कोटि में नहीं आते। प्रत्युत वे *जीव तत्त्व* के अंश हैं। इतने पर भी उन भगवान् की कृपा से, जिन्होंने उन्हें हृदय के भीतर से ज्ञान दिया (*तेने ब्रह्म हृदा*), ब्रह्माजी विशाल ब्रह्माण्ड की सृष्टि कर सके। जो लोग वास्तव में भगवान् के शुद्ध भक्त हैं, उनके हृदय में सदैव स्थित रहने वाले भगवान् उन्हें हृदय में उपदेश देते हैं। *ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति* (*भगवद्गीता* १८.६१)। यदि जीव पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के आदेशों का पालन करे, तो क्षुद्र प्राणी होते हुए भी वह भगवान् की कृपा से कठिन से कठिन कार्य कर सकता है। इसकी भी पुष्टि *भगवद्गीता* (१०.१०) में कृष्ण द्वारा की गई है :

तेषां सतत युक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते॥

"जो लोग निरन्तर भक्ति करते हैं और प्रेमपूर्वक मेरी पूजा करते हैं, उन्हें मैं ऐसी बुद्धि देता हूँ, जिससे वे मेरे पास आ सकते हैं।"

शुद्ध भक्त के लिए हर कार्य सम्भव है, क्योंकि वह पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के आदेशों पर चलता है। उनकी अचिन्त्य शक्ति के कारण एक शुद्ध भक्त उन

कार्यों को कर सकता है, जो अत्यन्त दुष्कर माने जाते हैं। वह ऐसे कार्य कर सकता है, जो भगवान् ने पहले स्वयं भी नहीं किये होते। इसीलिए नित्यानन्द प्रभु ने श्री चैतन्य महाप्रभु से कहा—*ये कराह, सेइ करि, नाहिक नियम*—"मैं नहीं जानता कि किस नियम के अनुसार मैं यह अद्भुत कार्य कर रहा हूँ, किन्तु मैं इतना अवश्य जानता हूँ कि आप जो भी चाहते हैं वह मैं करूँगा।" यद्यपि भगवान् अपने भक्त को सारा श्रेय देना चाहते हैं, किन्तु भक्त स्वयं श्रेय कभी नहीं लेता, क्योंकि वह केवल भगवान् के निर्देशन में ही कार्य करता है। फलस्वरूप सारा श्रेय भगवान् को मिलता है। भगवान् तथा उनके भक्त का सम्बन्ध ही ऐसा है। भगवान् अपने दास को सारा श्रेय देना चाहते हैं, किन्तु दास कोई श्रेय नहीं लेना चाहता, क्योंकि वह जानता है कि हर काम भगवान् द्वारा सम्पन्न किया जाता है।

তাঁরে বিদায় দিল প্রভু করি' আলিঙ্গন ।
এই-মত বিদায় দিল সব ভক্ত-গণ ॥৬৮॥

তাঁরে বিদায় দিল প্রভু করি' আলিঙ্গন ।
এই-মত বিদায় দিল সব ভক্ত-গণ ॥ ६८ ॥

তাঁরে—उनको (नित्यानन्द प्रभु को); **विदाय दिल**—विदा किया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करि'**—करके; **आलिङ्गन**—आलिंगन; **एइ-मत**—इस प्रकार; **विदाय दिल**—विदा किया; **सब**—सब; **भक्त-गण**—भक्तों को।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने नित्यानन्द प्रभु का आलिंगन किया और उन्हें विदा किया। तब उन्होंने अन्य सारे भक्तों को विदा किया।

কুলীন-গ্রামী পূর্ববত্কৈল নিবেদন ।
"প্রভু, আজ্ঞা কর,—আমার কর্তব্য সাধন" ॥৬৯॥

কুলীন-গ্রামী পূর্ববত্কৈল নিবেদন ।
"প্রভু, আজ্ঞা কর,—আমার কর্তব্য সাধন" ॥ ६९ ॥

কুলীন-গ্রামী—कुलीन ग्राम के एक निवासी ने; **পূর্ব-বত্**—पिछले वर्ष की तरह;

कैल—किया; **निवेदन**—निवेदन; **प्रभु**—मेरे प्रभु; **आज्ञा कर**—आज्ञा करो; **आमार**—मेरा; **कर्तव्य**—मेरा कर्तव्य; **साधन**—करने की।

अनुवाद

पिछले वर्ष की तरह कुलीनग्राम के एक निवासी ने महाप्रभु से विनती की, "हे प्रभु, कृपा करके बतायें कि मेरा क्या कर्तव्य है और मैं इसे कैसे पूरा करूँ?"

প্রভু কহে,—"বৈষ্ণব-সেবা, নাম-সঙ্কীর্তন ।
দুই কর, শীঘ্র পাবে শ্রী-কৃষ্ণ-চরণ" ॥৭০॥

प्रभु कहे,—"वैष्णव-सेवा, नाम-सङ्कीर्तन ।
दुइ कर, शीघ्र पाबे श्री-कृष्ण-चरण" ॥७०॥

प्रभु कहे—महाप्रभु ने उत्तर दिया; **वैष्णव-सेवा**—वैष्णवों की सेवा; **नाम-सङ्कीर्तन**—नाम संकीर्तन; **दुइ कर**—ये दो काम करो; **शीघ्र**—शीघ्र; **पाबे**—तुम पाओगे; **श्री-कृष्ण-चरण**—भगवान् श्रीकृष्ण के चरणकमलों में शरण।

अनुवाद

महाप्रभु ने उत्तर दिया, "तुम्हें भगवान् कृष्ण के दासों की सेवा में लगना चाहिए और सदैव कृष्ण के पवित्र नाम का कीर्तन करना चाहिए। यदि तुम ये दोनों काम करोगे, तो तुम्हें शीघ्र ही श्रीकृष्ण के चरणकमलों में शरण प्राप्त हो सकेगी।"

তেঁহো কহে,—"কে বৈষ্ণব, কি তাঁর লক্ষণ?" ।
তবে হাসি' কহে প্রভু জানি' তাঁর মন ॥৭১॥

तेंहो कहे,—"के वैष्णव, कि ताँर लक्षण?" ।
तबे हासि' कहे प्रभु जानि' ताँर मन ॥७१॥

तेंहो कहे—उसने कहा; **के**—कौन; **वैष्णव**—वैष्णव; **कि**—क्या; **ताँर**—उसका; **लक्षण**—लक्षण; **तबे**—तब; **हासि'**—मुस्कुराकर; **कहे**—कहा; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **जानि'**—जानकर; **ताँर मन**—उसका मन।

अनुवाद

उस कुलीनग्राम के निवासी ने कहा, "कृपा करके बतलायें कि

वास्तव में वैष्णव कौन है और उसके लक्षण क्या हैं?" उसके मन की बात जानकर श्री चैतन्य महाप्रभु मुस्काने लगे और उन्होंने यह उत्तर दिया।

"कृष्ण-नाम निरन्तर याँहार वदने ।
सेइ वैष्णव-श्रेष्ठ, भज ताँहार चरणे ॥७२॥

"कृष्ण-नाम निरन्तर याँहार वदने ।
सेइ वैष्णव-श्रेष्ठ, भज ताँहार चरणे ॥७२॥

कृष्ण-नाम—भगवान् कृष्ण का पावन नाम; **निरन्तर**—निरन्तर; **याँहार**—जिसके; **वदने**—मुख में; **सेइ**—ऐसा व्यक्ति; **वैष्णव-श्रेष्ठ**—श्रेष्ठ वैष्णव; **भज**—पूजा करो; **ताँहार चरणे**—उसके चरणकमलों की।

अनुवाद

"जो व्यक्ति सदैव भगवान् के पवित्र नाम का कीर्तन करता रहता है, उसे उत्तम श्रेणी का वैष्णव समझना चाहिए और तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम उसके चरणकमलों की सेवा करो।"

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर का कहना है कि कोई भी वैष्णव, जो निरन्तर भगवन्नाम का कीर्तन करता है, उसे वैष्णवता के द्वितीय स्तर में स्थित समझना चाहिए। ऐसा भक्त उस नये वैष्णव से श्रेष्ठ होता है, जिसने अभी केवल भगवन्नाम का कीर्तन करना सीखा है। नौसिखिया भक्त मात्र भगवन्नाम कीर्तन करने का प्रयास करता है, जबकि उन्नत भक्त कीर्तन करने का और उसका आनन्द लेने का अभ्यस्त होता है। ऐसा उन्नत भक्त *मध्यम भागवत* कहलाता है, जिससे यह इंगित होता है कि उसने नये और पूर्ण भक्त के बीच का पद प्राप्त कर लिया है। इस तरह की माध्यमिक स्थिति वाला भक्त प्रचारक बनता है। नौसिखिये भक्त अथवा सामान्य व्यक्ति को चाहिए कि ऐसे *मध्यम भागवत* की पूजा करे, क्योंकि वही माध्यम होता है।

श्रील रूप गोस्वामी ने अपनी पुस्तक *उपदेशामृत* (५) में कहा है *प्रणतिभिश्च भजन्तमीशम्*—अर्थात् मध्यम अधिकारी भक्तों को परस्पर नमस्कार करना चाहिए।

इस श्लोक में *निरन्तर* अर्थात् बिना रुके शब्द अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। *अन्तर* शब्द का अर्थ है, "अन्तराल" या "अवकाश।" यदि कोई व्यक्ति भक्ति के अतिरिक्त कोई अन्य इच्छा करता है—अर्थात् वह कभी भक्ति करता है, तो कभी इन्द्रियतृप्ति का प्रयास करता है, तो उसकी सेवा में व्यवधान आयेगा। इसलिए शुद्ध भक्त को चाहिए कि कृष्ण-सेवा के अतिरिक्त अन्य कोई इच्छा न करे। उसे कर्म तथा ज्ञान से ऊपर उठना चाहिए। श्रील रूप गोस्वामी ने अपने ग्रन्थ *भक्तिरसामृत-सिन्धु* (१.१.११) में लिखा है :

अन्याभिलाषिताशून्यं ज्ञान कर्माद्यनावृतम्।
आनुकूल्येन कृष्णानुशीलनं भक्तिरुत्तमा॥

यह शुद्ध भक्ति का स्तर है। मनुष्य को सकाम कर्म या ज्ञान द्वारा प्रेरित नहीं होना चाहिए, अपितु अनुकूल भाव से एकमात्र कृष्ण की सेवा करनी चाहिए। यह प्रथम कोटि की (उत्तम) भक्ति है।

अन्तर का दूसरा अर्थ है "यह शरीर।" यह शरीर आत्म-साक्षात्कार के मार्ग में बाधक है, क्योंकि यह सदैव इन्द्रियतृप्ति में लगा रहता है। इसी तरह *अन्तर* का अर्थ है "धन।" यदि धन का उपयोग कृष्ण-सेवा में नहीं किया जाता, तो वह भी बाधक है। *अन्तर* का एक अर्थ "जनता" भी है। सामान्य लोगों की संगति से भक्ति के नियम भ्रष्ट हो सकते हैं। इसी तरह *अन्तर* का अर्थ "लालच" भी हो सकता है अर्थात् अधिक धन एकत्र करना अथवा अधिक इन्द्रिय-तृप्ति करना। *अन्तर* का एक अर्थ "नास्तिक विचार" भी है, जिसके कारण मनुष्य मन्दिर के अर्चाविग्रह को पत्थर, काठ या सोने का बना मानता है। ये सारे अवरोध हैं। मन्दिर का अर्चाविग्रह भौतिक नहीं होता—वे तो साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं। इसी तरह गुरु को सामान्य व्यक्ति मानना भी अवरोध है (*गुरुषुनरमतिः*)। न किसी वैष्णव को किसी जाति या राष्ट्र का सदस्य मानना चाहिए, न वैष्णव को भौतिक समझना चाहिए। *चरणामृत* को सामान्य पेय जल नहीं समझना चाहिए, न भगवान् के पवित्र नाम को सामान्य ध्वनि समझना चाहिए। इसी तरह कृष्ण को सामान्य व्यक्ति नहीं मानना चाहिए, क्योंकि वे समस्त विष्णु तत्त्वों के उद्गम हैं। न ही भगवान् को देवता मानना चाहिए। आध्यात्मिक बातों को भौतिक कारणों में मिलाने से अध्यात्म भौतिक

वस्तु और संसारी वस्तु आध्यात्मिक प्रतीत होती है। यह सब अल्प ज्ञान के कारण होता है। मनुष्य को विष्णु तथा उनसे सम्बन्धित वस्तुओं को उनसे पृथक् नहीं मानना चाहिए। यह अपराध है।

श्रील जीव गोस्वामी ने भक्ति-सन्दर्भ (२६५) में लिखा है : नामैकं यस्य वाचि स्मरणपथगतम् इत्यादौ देहद्रविणादिनिमित्तक'पाषण्ड'शब्देन च दश अपराधा लक्ष्यन्ते पाषण्डमयत्वात् तेषाम्। "इस श्लोक में हम पाषण्ड शब्द देखते हैं। यह शब्द पारिभाषिक अर्थ में सूचित करता है : अपना शरीर अथवा सम्पत्ति का दुरुपयोग करना, किन्तु इस श्लोक में इसका अभिप्राय है भगवान् के पवित्र नाम के विरुद्ध दस अपराध, क्योंकि इनमें से प्रत्येक से नास्तिक व्यवहार उपजता है।"

मायावादी लोग अपने अल्पज्ञान के कारण विष्णु तथा वैष्णवों को अपूर्ण मानते हैं। यह निन्दनीय है। *श्रीमद्भागवत* (११.२.४६) में मध्यम वैष्णव का वर्णन इस प्रकार किया गया है :

ईश्वरे तदधीनेषु बालिशेषु द्विषत्सु च।
प्रेममैत्रीकृपोपेक्षा यः करोति स मध्यमः॥

"मध्यम वैष्णव ईश्वर से प्रेम, भक्तों से मित्रता, अबोधों को उपदेश देना और ईर्ष्यालु लोगों का परित्याग करता है।" मध्यम वैष्णव के ये चार कार्य हैं। *चैतन्य-चरितामृत* (मध्य २२.६४) में श्री सनातन गोस्वामी को शिक्षा दी गई है कि :

श्रद्धावान् जन हय भक्ति-अधिकारी।
'उत्तम', 'मध्यम', 'कनिष्ठ'—श्रद्धा-अनुसारी॥

"श्रद्धावान व्यक्ति भक्ति प्राप्त करने के लिए उपयुक्त पात्र है। भक्ति में श्रद्धा की कोटि के अनुसार उसे उत्तम, मध्यम या कनिष्ठ वैष्णव कहा जाता है।"

शास्त्र-युक्ति नाहि जाने दृढ, श्रद्धावान्।
'मध्यम अधिकारी' सेइ महाभाग्यवान्॥

"जिसने मध्यम अवस्था प्राप्त कर ली है, वह व्यक्ति शास्त्रीय ज्ञान में बहुत अग्रणी नहीं होता, किन्तु उसे भगवान् में दृढ़ श्रद्धा होती है। ऐसा व्यक्ति मध्यम

स्तर को प्राप्त करके अत्यन्त भाग्यशाली होता है। (*चैतन्य-चरितामृत,* मध्य २२.६७)

रतिप्रेमतारतम्ये भक्त तरतम।

"भगवान् के लिए आकर्षण तथा प्रेम—ये ही भक्ति के चरम लक्ष्य हैं। ऐसे आकर्षण तथा भगवत्प्रेम की कोटियों से भक्ति की अवस्थाओं का अन्तर समझ में आता है। ये हैं—कनिष्ठ, मध्यम तथा उत्तम (*चैतन्य-चरितामृत,* मध्य २२.७१)। मध्यम भक्त नाम-कीर्तन के प्रति अत्यधिक आकृष्ट रहता है और जप करते रहने से वह प्रेम के पद को प्राप्त करता है। यदि कोई व्यक्ति अत्यन्त अनुरक्ति के साथ भगवान् के पवित्र नाम का जप करता है, तो वह गुरु, अन्य वैष्णवों तथा स्वयं कृष्ण के सनातन दास के रूप में अपने आपको समझ सकता है। इस तरह मध्यम वैष्णव अपने आपको *कृष्णदास* मानता है। अतएव वह अबोध नौसिखियों (कनिष्ठों) में कृष्णभावनामृत का प्रचार करता है और हरे कृष्ण महामन्त्र के कीर्तन की महत्ता पर बल देता है। मध्यम भक्त अभक्त या प्रेरित भक्त की पहचान कर सकता है। प्रेरित भक्त या अभक्त भौतिक स्तर पर रहते हैं और *प्राकृत* कहलाते हैं। मध्यम भक्त ऐसे भौतिकतावादी लोगों से मिलता-जुलता नहीं। किन्तु वह यह समझता है कि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् तथा उनसे सम्बन्धित सारी वस्तुएँ एक ही दिव्य स्तर पर होती हैं। वास्तव में इनमें से कोई भी भौतिक नहीं हैं।

वर्षान्तरे पुनः ताँरा ऐछे प्रश्न कैल ।
वैष्णवेर तारतम्य प्रभु शिखाइल ॥७३॥

वर्षान्तरे पुनः ताँरा ऐछे प्रश्न कैल ।
वैष्णवेर तारतम्य प्रभु शिखाइल ॥७३॥

वर्ष-अन्तरे—एक वर्ष के बाद; **पुनः**—दोबारा; **ताँरा**—वे (कुलीन ग्राम के निवासी); **ऐछे**—ऐसा; **प्रश्न**—प्रश्न; **कैल**—किया; **वैष्णवेर**—वैष्णवों का; **तारतम्य**—तारतम्य (ऊपरी तथा निचली श्रेणियाँ); **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **शिखाइल**—सिखाया।

अनुवाद

अगले वर्ष भी कुलीनग्राम के निवासियों ने महाप्रभु से फिर वही

प्रश्न पूछा। इस प्रश्न को सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने पुनः विभिन्न प्रकार के वैष्णवों के विषय में शिक्षा दी।

যাঁহার দর্শনে মুখে আইসে কৃষ্ণ-নাম ।
তাঁহারে জানিহ তুমি 'বৈষ্ণব-প্রধান' ॥৭৪॥

য়াঁহার দর্শনে মুখে আइसे कृष्ण-नाम ।
ताँहारे जानिह तुमि 'वैष्णव-प्रधान' ॥७४॥

য়াঁহার দর্শনে—जिसके दर्शन से; **मुखे**—मुख में; **आइसे**—अपने आप (स्वतः) जाग जाता है; **कृष्ण-नाम**—कृष्ण का पावन नाम; **ताँहारे**—उसको; **जानिह**—जानना चाहिए; **तुमि**—तुम्हें; **वैष्णव-प्रधान**—श्रेष्ठ वैष्णव।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "उत्तम कोटि का वैष्णव वह है, जिसकी उपस्थिति मात्र से अन्य लोग कृष्ण के पवित्र नाम का कीर्तन करने लगते हैं।"

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर कहते हैं कि यदि वैष्णव को देखते ही किसी दर्शक को कृष्ण का नाम स्मरण हो आता है, तो उस वैष्णव को *महाभागवत* अर्थात् उत्तम कोटि का भक्त समझना चाहिए। ऐसे वैष्णव को अपने कृष्णभावनाभावित कर्तव्य का सदैव स्मरण रहता है और उसे आत्म-साक्षात्कार का ज्ञान रहता है। वह सदैव पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण से प्रेम करता है और यह प्रेम निर्मल होता है। इसी प्रेम के कारण वह सदैव आध्यात्मिक अनुभूति के प्रति जागरूक रहता है। चूँकि वह जानता है कि कृष्णभावनामृत ज्ञान तथा कर्म का आधार है, अतएव वह सारी वस्तुओं को कृष्ण से सम्बन्धित देखता है। ऐसा व्यक्ति कृष्ण के पवित्र नाम का पूर्ण रीति से कीर्तन कर सकता है। ऐसा महाभागवत वैष्णव अपनी दिव्य दृष्टि से देख सकता है कि कौन व्यक्ति माया के वश में आकर सो रहा है। वह ऐसे सोने वाले बद्धजीवों को कृष्णभावनामृत का ज्ञान प्रसारित करके जगाने में लगा रहता है। वह उन नेत्रों को खोलता है, जो कृष्ण की विस्मृति से बन्द हैं। इस

तरह जीव भौतिक शक्ति की जड़ता से मुक्त हो जाता है और भगवान् की भक्ति में पूरी तरह लग जाता है। *मध्यम अधिकारी* वैष्णव अन्यों में कृष्ण-भक्ति जागृत कर सकता है और उन्हें ऐसे कार्यों में प्रवृत्त कर सकता है, जिससे वे प्रगति कर सकते हैं। इसीलिए *चैतन्य-चरितामृत* (मध्यलीला, अध्याय ६, श्लोक २७९) में कहा गया है :

लोहाके यावत् स्पर्शि' हेम नाहि करे।
तावत् स्पर्श-मणि केह चिनिते ना पारे॥

"जब तक पारस पत्थर लोहे को सोने में न बदल दे, तब तक पारस पत्थर के मूल्य को नहीं जाना जा सकता।" किसी की परीक्षा उसके कार्यों से होनी चाहिए, न कि वायदों से। एक महाभागवत निन्दनीय जीवन बिताने वाले जीव को भगवान् की सेवा में लगा सकता है। महाभागवत की यही परीक्षा है। यद्यपि प्रचार-कार्य करना महाभागवत का कार्य नहीं है, किन्तु अन्यों को वैष्णव बनाने के लिए वह *मध्यम भागवत* के पद तक उतर सकता है। वास्तव में महाभागवत कृष्णभावनामृत का प्रसार करने के लिए उपयुक्त होता है, किन्तु वह इसमें अन्तर नहीं कर पाता कि कृष्णभावनामृत का प्रसार कहाँ किया जाए और कहाँ नहीं। वह सोचता है कि यदि अवसर मिले तो हर व्यक्ति कृष्णभावनामृत ग्रहण करने में सक्षम है। कनिष्ठ तथा मध्यम अधिकारियों को सदैव महाभागवत की बात सुनने के लिए उत्सुक रहना चाहिए और हर तरह से उसकी सेवा करनी चाहिए। कनिष्ठ तथा मध्यम अधिकारी क्रमशः उत्तम अधिकारी बन सकते हैं। *श्रीमद्भागवत* (११.२.४५) में उत्तम अधिकारी के लक्षण दिये हुए हैं :

सर्वभूतेषु यः पश्येद् भगवद्भावमात्मनः।
भूतानि भगवत्यात्मन्येष भागवतोत्तमः॥

"उत्तम अधिकारी प्रत्येक वस्तु में परमात्मा अर्थात् पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण को देखता है। फलस्वरूप वह प्रत्येक वस्तु को भगवान् के सन्दर्भ में देखता है और यह समझता है कि जिसका भी अस्तित्व है, वह शाश्वत रूप से भगवान् में ही स्थित है।"

सनातन गोस्वामी को शिक्षा देते हुए महाप्रभु ने यह भी कहा था :

शास्त्रयुक्त्ये सुनिपुण दृढ श्रद्धा याँर।
'उत्तम अधिकारी' से तारये संसार॥

"जो व्यक्ति वैदिक साहित्य में दक्ष होता है और भगवान् में पूर्ण श्रद्धा रखता है, वह उत्तम अधिकारी अर्थात् प्रथम श्रेणी का वैष्णव है। वह सारे संसार का उद्धार कर सकता है और हर व्यक्ति को कृष्णभावनामृत की ओर उन्मुख कर सकता है।" (*चैतन्य-चरितामृत,* मध्य २२.६५) महाभागवत पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान, भक्ति तथा भक्त को अत्यन्त प्रेम तथा स्नेह से देखता है। वह कृष्ण, कृष्णभावना तथा कृष्ण-भक्त के परे कुछ भी नहीं देखता। महाभागवत जानता है कि हर व्यक्ति भिन्न-भिन्न ढंगों से भगवान् की सेवा में लगा हुआ है। इसलिए वह हर व्यक्ति को कृष्णभावनाभावित पद तक उठाने के लिए स्वयं मध्यम स्तर तक नीचे उतर आता है।

ক্রম করি' কহে প্রভু 'বৈষ্ণব'-লক্ষণ ।
'বৈষ্ণব', 'বৈষ্ণবতর', আর 'বৈষ্ণবতম' ॥৭৫॥

क्रम करि' कहे प्रभु 'वैष्णव'-लक्षण ।
'वैष्णव', 'वैष्णवतर', आर 'वैष्णवतम' ॥७५॥

क्रम करि'—क्रमानुसार; **कहे प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **वैष्णव-लक्षण**—वैष्णव के लक्षण; **वैष्णव**—सामान्य वैष्णव (सकारात्मक); **वैष्णव-तर**—उच्चतर वैष्णव (तुलनात्मक स्तरीय); **आर**—और; **वैष्णव-तम**—उत्तम वैष्णव।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने विभिन्न प्रकार के वैष्णवों—वैष्णव, वैष्णवतर तथा वैष्णवतम—की शिक्षा दी। इस तरह उन्होंने कुलीनग्राम के निवासियों को एक के बाद एक करके वैष्णव के सारे लक्षण अच्छी तरह समझा दिये।

এই-মত সব বৈষ্ণব গৌড়ে চলিলা ।
বিদ্যানিধি সে বত্সর নীলাদ্রি রহিলা ॥৭৬॥

এই-মত সব বৈষ্ণব গৌড়ে চলিলা ।
বিদ্যানিধি সে বত্সর নীলাদ্রি রহিলা ॥৭৬॥

एइ-मत—इस प्रकार; **सब**—सब; **वैष्णव**—भक्त; **गौड़े चलिला**—बंगाल लौट गये; **विद्यानिधि**—पुण्डरीक विद्यानिधि; **से वत्सर**—उस वर्ष; **नीलाद्रि रहिला**—जगन्नाथ पुरी में रहे।

अनुवाद

अन्ततोगत्वा सारे वैष्णवजन बंगाल लौट गये, किन्तु उस वर्ष पुण्डरीक विद्यानिधि जगन्नाथ पुरी में ही रहे।

स्वरूप-सहित ताँर हय सख्य-प्रीति ।
दुइ-जनाय कृष्ण-कथाय एकत्र-इ स्थिति ॥७७॥

स्वरूप-सहित ताँर हय सख्य-प्रीति ।
दुइ-जनाय कृष्ण-कथाय एकत्र-इ स्थिति ॥७७॥

स्वरूप-सहित—स्वरूप दामोदर गोस्वामी सहित; **ताँर**—उनकी; **हय**—है; **सख्य-प्रीति**—घनिष्ठ मित्रता; **दुइ-जनाय**—वे दोनों; **कृष्ण-कथाय**—कृष्ण कथाओं में; **एकत्र-इ**—एक समान स्तर पर; **स्थिति**—स्थित।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा पुण्डरीक विद्यानिधि में घनिष्ठ मित्रता थी और जहाँ तक कृष्ण विषयक कथाओं पर चर्चा करने की बात थी, वे दोनों ही समान स्तर के थे।

गदाधर-पण्डिते तेँहो पुनः मन्त्र दिल ।
ओड़न-षष्ठीर दिने यात्रा ये देखिल ॥७८॥

गदाधर-पण्डिते तेंहो पुनः मन्त्र दिल ।
ओड़न-षष्ठीर दिने यात्रा ये देखिल ॥७८॥

गदाधर-पण्डिते—गदाधर पण्डित को; **तेंहो**—पुण्डरीक विद्यानिधि ने; **पुनः**—दूसरी; **मन्त्र**—दीक्षा; **दिल**—दी; **ओड़न-षष्ठीर दिने**—ओड़नषष्ठी के दिन; **यात्रा**—उत्सव; **ये**—निस्सन्देह; **देखिल**—उन्होंने देखा।

अनुवाद

पुण्डरीक विद्यानिधि ने गदाधर पण्डित को दुबारा दीक्षित किया और ओडनषष्ठी के दिन उन्होंने उत्सव देखा।

तात्पर्य

शीत ऋतु के प्रारम्भ में ओड़नषष्ठी उत्सव होता है। यह उत्सव इसका सूचक है कि उस दिन के बाद भगवान् जगन्नाथजी को गर्म वस्त्र दिये जाने चाहिएँ। यह वस्त्र सीधे जुलाहे से खरीदा जाता है। *अर्चन-मार्ग* के अनुसार वस्त्र को सर्वप्रथम धोना चाहिए, जिससे माँड निकल जाए और तब उसे भगवान् को ओढ़ाना चाहिए। पुण्डरीक विद्यानिधि ने देखा कि पुजारी भगवान् जगन्नाथजी को ओढ़ाने के पूर्व वस्त्र को धोता नहीं था। चूँकि वे भक्तों में कुछ न कुछ त्रुटि निकालना चाहते थे, इसलिए उन्हें क्रोध आ गया।

জগন্নাথ পরেন তথা 'মাড়ুয়া' বসন ।
দেখিয়া সঘৃণ হৈল বিদ্যানিধির মন ॥৭৯॥

जगन्नाथ परेन तथा 'माड़ुया' वसन ।
देखिया सघृण हैल विद्यानिधिर मन ॥७९॥

जगन्नाथ—भगवान् जगन्नाथ ने; **परेन**—पहनी थी; **तथा**—वहाँ; **माड़ुया वसन**—मांड लगा वस्त्र; **देखिया**—देखकर; **स-घृण**—घृणापूर्वक; **हैल**—हो गया; **विद्यानिधिर मन**—विद्यानिधि का मन।

अनुवाद

जब पुण्डरीक विद्यानिधि ने देखा कि जगन्नाथजी को मांड़युक्त वस्त्र ओढ़ाया जाता है, तो उनका मन कुछ-कुछ घृणा से भर गया। इस तरह उनका मन दूषित हो गया।

সেই রাত্র্যে জগন্নাথ-বলাই আসিয়া ।
দুই-ভাই চড়া'ন তাঁরে হাসিয়া হাসিয়া ॥৮০॥

सेइ रात्र्ये जगन्नाथ-बलाइ आसिया ।
दुइ-भाइ चड़ा'न ताँरे हासिया हासिया ॥८०॥

सेइ रात्र्ये—उसी रात; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **बलाइ**—भगवान् बलराम; **आसिया**—आकर; **दुइ-भाइ**—दोनों भाई; **चड़ा'न**—थप्पड़ मारने लगे (चपट लगाई); **ताँरे**—उन्हें; **हासिया हासिया**—हँसते-हँसते।

अनुवाद

उस रात को भगवान् जगन्नाथ तथा बलराम दोनों भाई पुण्डरीक विद्यानिधि के घर आये और हँस-हँसकर उन्हें चपत लगाने लगे।

गाल फूलिल, आचार्य अन्तरे उल्लास ।
विस्तारि' वर्णियाछेन वृन्दावन-दास ॥ ८१ ॥

गाल फुलिल, आचार्य्य अन्तरे उल्लास ।
विस्तारि' वर्णियाछेन वृन्दावन-दास ॥ ८१ ॥

गाल—गालें; **फुलिल**—सूज गई; **आचार्य्य**—पुण्डरीक विद्यानिधि; **अन्तरे**—हृदय में; **उल्लास**—अति प्रसन्न; **विस्तारि'**—विस्तार से; **वर्णियाछेन**—वर्णन किया है; **वृन्दावन-दास**—श्रील वृन्दावन दास ठाकुर।

अनुवाद

यद्यपि चपत लगने से उनके गाल सूज गये थे, किन्तु पुण्डरीक विद्यानिधि भीतर से अत्यन्त प्रसन्न थे। इस घटना का विस्तृत वर्णन ठाकुर वृन्दावन दास ने किया है।

এই-মত প্রত্যব্দ আইসে গৌড়ের ভক্ত-গণ ।
প্রভু-সঙ্গে রহি' করে যাত্রা-দরশন ॥ ৮২ ॥

এই-মত প্রত্যব্দ আইসে গৌড়ের ভক্ত-গণ ।
প্রভু-সঙ্গে রহি' করে যাত্রা-দরশন ॥ ৮২ ॥

এই-মত—इस प्रकार; **प्रति-अब्द**—प्रति वर्ष; **आइसे**—आते थे; **गौड़ेर**—बंगाल के; **भक्त-गण**—भक्तगण; **प्रभु-सङ्गे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **रहि'**—रहते थे; **करे**—करते थे; **यात्रा-दरशन**—रथयात्रा उत्सव के दर्शन।

अनुवाद

प्रतिवर्ष बंगाल के भक्तगण आते और रथयात्रा का दर्शन करने के लिए श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ ठहरते थे।

তার মধ্যে যে যে বর্ষে আছয়ে বিশেষ ।
বিস্তারিয়া আগে তাহা কহিব নিঃশেষ ॥ ৮৩ ॥

तार मध्ये ग्रे ग्रे वर्षे आछये विशेष ।
विस्तारिया आगे ताहा कहिब निःशेष ॥ ८३ ॥

तार मध्ये—इन घटनाओं के मध्य; **ग्रे ग्रे**—जो जो; **वर्षे**—वर्षों में; **आछये**—हुआ; **विशेष**—विशेष; **विस्तारिया**—विस्तार करके; **आगे**—आगे; **ताहा**—वह; **कहिब**—मैं कहूँगा; **निःशेष**—पूर्णतया।

अनुवाद

उन वर्षों में जो कुछ उल्लेखनीय घटनाएँ घटीं, उनका वर्णन बाद में किया जायेगा।

एइ-मत महाप्रभुर चारि वत्सर गेल ।
दक्षिण याञा आसिते दुई वत्सर लागिल ॥ ८४ ॥

एइ-मत महाप्रभुर चारि वत्सर गेल ।
दक्षिण ग्राजा आसिते दुइ वत्सर लागिल ॥ ८४ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **चारि**—चार; **वत्सर**—वर्ष; **गेल**—व्यतीत हुए; **दक्षिण ग्राजा**—दक्षिण भारत की यात्रा करने के बाद; **आसिते**—लौट आने में; **दुइ वत्सर लागिल**—दो वर्ष लग गये।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने चार वर्ष बिताये। प्रथम दो वर्ष उन्होंने दक्षिण भारत के भ्रमण में लगा दिये।

आर दुई वत्सर चाहे वृन्दावन याइते ।
रामानन्द-हठे प्रभु ना पारे चलिते ॥ ८५ ॥

आर दुइ वत्सर चाहे वृन्दावन ग्राइते ।
रामानन्द-हठे प्रभु ना पारे चलिते ॥ ८५ ॥

आर दुइ वत्सर—और दो वर्ष; **चाहे**—वे चाहते थे; **वृन्दावन ग्राइते**—वृन्दावन जाने के लिए; **रामानन्द-हठे**—रामानन्द राय की चालबाजी के कारण; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ना पारे**—न सके; **चलिते**—जा।

अनुवाद

अन्य दो वर्षों तक श्री चैतन्य महाप्रभु वृन्दावन जाना चाहते रहे, किन्तु वे रामानन्द राय की चालों के कारण जगन्नाथ पुरी छोड़ नहीं पाये।

পঞ্চম বত্সরে গৌড়ের ভক্ত-গণ আইলা ।
রথ দেখি' না রহিলা, গৌড়েরে চলিলা ॥ ৮৬॥

পঞ্চম বত্সরে গৌড়ের ভক্ত-গণ আইলা ।
রথ দেখি' না রহিলা, গৌড়েরে চলিলা ॥ ৮৬॥

পঞ্চম বত্সরে—पाँचवे वर्ष में; **গৌড়ের**—बंगाल के; **ভক্ত-গণ**—भक्तगण; **আইলা**—आये; **রথ দেখি'**—रथयात्रा देखकर; **না রহিলা**—नहीं रुके; **গৌড়েরে চলিলা**—बंगाल को लौट गये।

अनुवाद

पाँचवें वर्ष बंगाल के भक्तगण रथयात्रा देखने आये, किन्तु देखने के बाद वे रुके नहीं, अपितु बंगाल लौट गये।

তবে প্রভু সার্বভৌম-রামানন্দ-স্থানে ।
আলিঙ্গন করি' কহে মধুর বচনে ॥ ৮৭॥

তবে প্রভু সার্বভৌম-রামানন্দ-স্থানে ।
আলিঙ্গন করি' কহে মধুর বচনে ॥ ৮৭॥

তবে—तब; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **সার্বভৌম-রামানন্দ-স্থানে**—सार्वभौम भट्टाचार्य और रामानन्द राय के समक्ष; **আলিঙ্গন করি'**—आलिंगन करके; **কহে**—कहे; **মধুর বচনে**—मधुर वचन।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने सार्वभौम भट्टाचार्य तथा रामानन्द राय के समक्ष एक प्रस्ताव रखा। उन्होंने उन दोनों का आलिंगन करते हुए मधुर वचन कहे।

বহুত উত্কণ্ঠা মোর যাইতে বৃন্দাবন ।
তোমার হঠে দুই বত্সর না কৈলুঁ গমন ॥ ৮৮॥

বহুত উত্কণ্ঠা মোর য়াইতে বৃন্দাবন ।
তোমার হঠে দুই বত্সর না কৈলুঁ গমন ॥ ৮৮॥

বহুত উত্কণ্ঠা—बहुत उत्सुकता; **মোর**—मेरी; **য়াইতে বৃন্দাবন**—वृन्दावन जाने की;

तोमार हठे—तुम्हारी चालों से; **दुइ वत्सर**—दो वर्ष तक; **ना कैलुँ**—मैंने नहीं किया; **गमन**—प्रस्थान।

अनुवाद

चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "वृन्दावन जाने की मेरी इच्छा अत्यन्त बलवती हो उठी है। तुम्हारी चालों के कारण मैं विगत दो वर्षों से वहाँ जा नहीं पाया।

অবশ্য চলিব, দুঁহে করহ সম্মতি ।
তোমা দুঁহা বিনা মোর নাহি অন্য গতি ॥৮৯॥

অবশ্য চলিব, দুঁহে করহ সম্মতি ।
তোমা-দুঁহা বিনা মোর নাহি অন্য গতি ॥৮৯॥

अवश्य—अवश्य; **चलिब**—मैं जाऊँगा; **दुँहे**—तुम दोनों; **करह सम्मति**—इस प्रस्ताव को स्वीकार करो; **तोमा-दुँहा विना**—तुम दोनों के सिवाये; **मोर**—मेरी; **नाहि**—नहीं है; **अन्य गति**—अन्य गति।

अनुवाद

"अब मैं अवश्य जाऊँगा। अब तो तुम लोग अनुमति दोगे न? तुम दोनों के अतिरिक्त मेरे पास कोई अन्य आश्रय नहीं है।

গৌড়-দেশে হয় মোর 'দুই সমাশ্রয়' ।
'জননী' 'জাহ্নবী',—এই দুই দয়াময় ॥৯০॥

গৌড়-দেশে হয় মোর 'দুই সমাশ্রয়' ।
'জননী' 'জাহ্নবী',—এই দুই দয়াময় ॥৯০॥

गौड़-देशे—बंगाल में; **हय**—हैं; **मोर**—मेरे; **दुइ**—दो; **समाश्रय**—आश्रय (ठिकाने); **जननी**—माता; **जाह्नवी**—माता गंगा; **एइ दुइ**—ये दोनों; **दया-मय**—अति दयालु।

अनुवाद

"बंगाल में मेरे दो आश्रय हैं—मेरी माता तथा गंगा नदी। ये दोनों अत्यन्त दयामय हैं।

গৌড়-দেশ দিয়া যাব তাঁ-সবা দেখিয়া ।
তুমি দুঁহে আজ্ঞা দেহ' পরসন্ন হঞা ॥৯১॥

गौड़-देश दिया याब ताँ-सबा देखिया ।
तुमि दुँहे आज्ञा देह' परसन्न हञा ॥ ९१ ॥

गौड़-देश—बंगाल देश; **दिया**—होते हुए; **याब**—मैं जाऊँगा; **ताँ-सबा**—उन सबको; **देखिया**—देखकर; **तुमि दुँहे**—तुम दोनों; **आज्ञा देह'**—मुझे आज्ञा दो; **परसन्न हञा**—प्रसन्न होकर।

अनुवाद

"मैं बंगाल होता हुआ वृन्दावन जाऊँगा और अपनी माता तथा गंगा नदी दोनों को देखूँगा। क्या अब तुम दोनों मुझे अनुमति दोगे?"

শুনিয়া প্রভুর বাণী মনে বিচারয় ।
প্রভু-সনে অতি হঠ কভু ভাল নয় ॥৯২॥
शुनिया प्रभुर वाणी मने विचारय ।
प्रभु-सने अति हठ कभु भाल नय ॥ ९२ ॥

शुनिया—यह सुनकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **वाणी**—वाणी; **मने**—उनके मनों में; **विचारय**—विचार किया; **प्रभु-सने**—भगवान् चैतन्य महाप्रभु के साथ; **अति**—अत्यन्त; **हठ**—चालबाजी; **चालें**; **कभु**—किसी भी समय; **भाल नय**—अच्छी नहीं है।

अनुवाद

जब सार्वभौम भट्टाचार्य तथा रामानन्द राय ने ये शब्द सुने, तो वे विचार करने लगे कि यह अच्छी बात नहीं है कि उन्होंने महाप्रभु के साथ इतनी चालें चली थीं।

দুঁহে কহে,—এবে বর্ষা, চলিতে নারিবা ।
বিজয়া-দশমী আইলে অবশ্য চলিবা ॥৯৩॥
दुँहे कहे,—एबे वर्षा, चलिते नारिबा ।
विजया-दशमी आइले अवश्य चलिबा ॥ ९३ ॥

दुँहे कहे—उन दोनों ने कहा; **एबे**—अब; **वर्षा**—वर्षा ऋतु; **चलिते नारिबा**—आप नहीं जा सकोगे; **विजया-दशमी**—विजय दशमी के दिन; **आइले**—जब यह आयेगी; **अवश्य**—अवश्य; **चलिबा**—आप जायेंगे।

अनुवाद

उन दोनों ने कहा, "वर्षा ऋतु होने के कारण आपके लिए यात्रा करनी कठिन हो जायेगी। वृन्दावन प्रस्थान करने के लिए विजयादशमी तक प्रतीक्षा करना ठीक रहेगा।"

आनन्दे महाप्रभु वर्षा कैल समाधान ।
विजया-दशमी-दिने करिल पयान ॥९४॥

आनन्दे महाप्रभु वर्षा कैल समाधान ।
विजया-दशमी-दिने करिल पयान ॥९४॥

आनन्दे—बहुत आनन्द में; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **वर्षा**—वर्षा ऋतु; **कैल समाधान**—व्यतीत की; **विजया-दशमी-दिने**—विजयदशमी के दिन; **करिल पयान**—वे चले गये।

अनुवाद

इस तरह अनुमति प्राप्त करके श्री चैतन्य महाप्रभु अत्यधिक प्रसन्न हुए। उन्होंने वर्षा ऋतु बीत जाने तक प्रतीक्षा की और जब विजयादशमी आई तो वे वृन्दावन के लिए चल पड़े।

जगन्नाथेर प्रसाद प्रभु यत पाञ्छिल ।
कड़ार, चन्दन, डोर, सब सङ्गे लैल ॥९५॥

जगन्नाथेर प्रसाद प्रभु यत पाञ्छिल ।
कड़ार, चन्दन, डोर, सब सङ्गे लैल ॥९५॥

जगन्नाथेर—भगवान् जगन्नाथ का; **प्रसाद**—प्रसाद; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **यत**—जितना; **पाञ्छिल**—मिला था; **कड़ार**—एक प्रकार का तिलक; **चन्दन**—चन्दन; **डोर**—डोरियाँ; **सब**—सब; **सङ्गे लैल**—उन्होंने अपने साथ ले ली।

अनुवाद

महाप्रभु ने जगन्नाथजी का प्रसाद एकत्र किया। उन्होंने अपने साथ भगवान् का कड़ार अंजन, चन्दन तथा डोरियाँ भी प्रसाद रूप में ले लीं।

জগন্নাথে আজ্ঞা মাগি' প্রভাতে চলিলা ।
উড়িয়া-ভক্ত-গণ সঙ্গে পাছে চলি' আইলা ॥৯৬॥

জগন্নাথে আজ্ঞা মাগি' প্রভাতে চলিলা ।
উড়িয়া-ভক্ত-গণ সঙ্গে পাছে চলি' আইলা ॥ ৯৬ ॥

জগন্নাথে—भगवान् जगन्नाथ से; **আজ্ঞা মাগি'**—आज्ञा लेकर; **প্রভাতে**—प्रातःकाल; **চলিলা**—चल पड़े; **উড়িয়া-ভক্ত-গণ**—उड़ीसा के सभी भक्त; **সঙ্গে**—उनके साथ; **পাছে**—पीछे पीछे; **চলি' আইলা**—चले।

अनुवाद

भोर के समय भगवान् जगन्नाथ से आज्ञा लेकर श्री चैतन्य महाप्रभु चल पड़े और उड़ीसा के सारे भक्त भी उनके पीछे पीछे जाने लगे।

উড়িয়া-ভক্ত-গণে প্রভু যত্নে নিবারিলা ।
নিজ-গণ-সঙ্গে প্রভু 'ভবানীপুর' আইলা ॥৯৭॥

উড়িয়া-ভক্ত-গণে প্রভু যত্নে নিবারিলা ।
নিজ-গণ-সঙ্গে প্রভু 'ভবানীপুর' আইলা ॥ ৯৭ ॥

উড়িয়া-ভক্ত-গণে—उड़ीसा के भक्तगण को; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **যত্নে**—बड़े प्रयास से; **নিবারিলা**—रोका; **নিজ-গণ-সঙ্গে**—अपने निजी साथियों सहित; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ভবানীপুর আইলা**—भवानीपुर आये।

अनुवाद

चैतन्य महाप्रभु बड़े यत्न से उड़ीसा के भक्तों को अपने साथ चलने से मना कर पाये। फिर वे अपने निजी संगियों के साथ सबसे पहले भवानीपुर गये।

तात्पर्य

सुप्रसिद्ध स्थान जानकादेइपुर अथवा जानकीदेवीपुर पहुँचने के पूर्व भवानीपुर से होकर जाना पड़ता है।

রামানন্দ আইলা পাছে দোলায় চড়িয়া ।
বাণীনাথ বহু প্রসাদ দিল পাঠাঞা ॥৯৮॥

रामानन्द आइला पाछे दोलाय चड़िया ।
वाणीनाथ बहु प्रसाद दिल पाठाञा ॥ ९८ ॥

रामानन्द—रामानन्द राय; **आइला**—आये; **पाछे**—पीछे; **दोलाय चड़िया**—पालकी में चढ़कर; **वाणीनाथ**—वाणीनाथ राय; **बहु**—बहुत मात्रा में; **प्रसाद**—जगन्नाथ का प्रसाद; **दिल**—दिया; **पाठाञा**—भेजकर।

अनुवाद

जब भगवान् चैतन्य भवानीपुर पहुँच गये, तो उनके पीछे पीछे रामानन्द राय अपनी पालकी पर चढ़कर आये और वाणीनाथ राय ने महाप्रभु के लिए प्रचुर मात्रा में प्रसाद भेजा था।

प्रसाद भोजन करि' तथाय रहिला ।
प्रातः-काले चलि' प्रभु 'भुवनेश्वर' आइला ॥ ९९ ॥
प्रसाद भोजन करि' तथाय रहिला ।
प्रातः-काले चलि' प्रभु 'भुवनेश्वर' आइला ॥ ९९ ॥

प्रसाद भोजन करि'—प्रसाद ग्रहण करके; **तथाय रहिला**—वे वहाँ रूक गये; **प्रातः-काले**—प्रातःकाल; **चलि'**—चलकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भुवनेश्वर आइला**—भुवनेश्वर नामक स्थान पर पहुँचे।

अनुवाद

प्रसाद ग्रहण करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु वहाँ रात-भर रहे। प्रातः होते ही वे चल पड़े और अन्त में भुवनेश्वर आ पहुँचे।

'कटके' आसिया कैल 'गोपाल' दरशन ।
स्वप्नेश्वर-विप्र कैल प्रभुर निमन्त्रण ॥ १०० ॥
'कटके' आसिया कैल 'गोपाल' दरशन ।
स्वप्नेश्वर-विप्र कैल प्रभुर निमन्त्रण ॥ १०० ॥

कटके—कटक नगर; **आसिया**—आकर; **कैल**—किया; **गोपाल दरशन**—भगवान् गोपाल का दर्शन; **स्वप्नेश्वर-विप्र**—स्वप्नेश्वर नामक ब्राह्मण; **कैल**—किया; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **निमन्त्रण**—निमंत्रण।

अनुवाद

कटक नगर पहुँचकर उन्होंने गोपाल मन्दिर के दर्शन किये। वहाँ पर स्वप्नेश्वर नाम के ब्राह्मण ने उन्हें भोजन करने के लिए निमन्त्रण दिया।

रामानन्द-राय सब-गणे निमन्त्रिल ।
बाहिर उद्याने आसि' प्रभु वासा कैल ॥१०१॥

रामानन्द-राय सब-गणे निमन्त्रिल ।
बाहिर उद्याने आसि' प्रभु वासा कैल ॥१०१॥

रामानन्द-राय—रामानन्द राय ने; **सब-गणे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के सभी अनुयायियों को; **निमन्त्रिल**—निमन्त्रित किया; **बाहिर उद्याने**—बाहर के उद्यान में; **आसि'**—आकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **वासा कैल**—उसे अपना विश्राम स्थल बनाया।

अनुवाद

रामानन्द राय ने अन्य सभी जनों को भोजन करने के लिए निमन्त्रित किया और श्री चैतन्य महाप्रभु ने मन्दिर के बाहर बगीचे में अपना विश्राम स्थान बनाया।

भिक्षा करि' वकुल-तले करिला विश्राम ।
प्रतापरुद्र-ठाञि राय करिल पयान ॥१०२॥

भिक्षा करि' बकुल-तले करिला विश्राम ।
प्रतापरुद्र-ठाञि राय करिल पयान ॥१०२॥

भिक्षा करि'—भोजन करने के बाद; **बकुल-तले**—बकुल वृक्ष के नीचे; **करिला विश्राम**—विश्राम किया; **प्रतापरुद्र-ठाञि**—महाराज प्रतापरुद्र की उपस्थिति में; **राय**—रामानन्द राय ने; **करिल पयान**—प्रस्थान किया।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु बकुल वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहे थे, तो रामानन्द राय तुरन्त महाराज प्रतापरुद्र के पास गये।

शुनि' आनन्दित राजा अति-शीघ्र आइला ।
प्रभु देखि' दण्डवत्भूमेते पड़िला ॥१०३॥

शुनि' आनन्दित राजा अति-शीघ्र आइला ।
प्रभु देखि' दण्डवत्भूमेते पड़िला ॥ १०३ ॥

शुनि'—यह सुनकर; **आनन्दित**—अति प्रसन्न हुए; **राजा**—राजा; **अति-शीघ्र**—अति शीघ्र; **आइला**—आये; **प्रभु देखि'**—श्री चैतन्य महाप्रभु को देखकर; **दण्डवत्**—दण्डवत् प्रणाम किया; **भूमेते**—भूमि पर; **पड़िला**—गिर गये।

अनुवाद

राजा यह समाचार पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। और शीघ्रता से वहाँ आये। महाप्रभु को देखकर उन्होंने दण्डवत् प्रणाम किया।

पुनः उठे, पुनः पड़े प्रणय-विह्वल ।
स्तुति करे, पुलकाङ्ग, पड़े अश्रु-जल ॥ १०४ ॥
पुनः उठे, पुनः पड़े प्रणय-विह्वल ।
स्तुति करे, पुलकाङ्ग, पड़े अश्रु-जल ॥ १०४ ॥

पुनः—पुनः; **उठे**—उठे; **पुनः**—पुनः; **पड़े**—गिर पड़े; **प्रणय-विह्वल**—प्रेम से विह्वल होकर; **स्तुति करे**—स्तुति की; **पुलक-अङ्ग**—सारा शरीर हर्ष से काँप रहा था; **पड़े**—बहने लगे; **अश्रु-जल**—अश्रु जल।

अनुवाद

प्रेम से विह्वल होकर राजा बारम्बार उठते और गिरते रहे। जब वे प्रार्थना कर रहे थे, तो उनका सारा शरीर काँपने लगा और उनकी आँखों से आँसू बह चले।

তাঁর ভক্তি দেখি' প্রভুর তুষ্ট হৈল মন ।
উথি' মহাপ্রভু তাঁরে কৈলা আলিঙ্গন ॥ ১০৫ ॥
তাঁর ভক্তি দেখি' প্রভুর তুষ্ট হৈল মন ।
উথি' মহাপ্রভু তাঁরে কৈলা আলিঙ্গন ॥ ১০৫ ॥

তাঁর ভক্তি—उसकी भक्ति; **দেখি'**—देखकर; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **তুষ্ট**—प्रसन्न; **হৈল**—था; **মন**—मन; **উঠি'**—उठकर; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **তাঁরে**—उनको; **কৈলা আলিঙ্গন**—आलिंगन किया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु राजा की भक्ति देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए, अतएव उन्होंने उठकर उनका आलिंगन किया।

পুনঃ স্তুতি করি' রাজা করয়ে প্রণাম ।
প্রভু-কৃপা-অশ্রুতে তাঁর দেহ হৈল স্নান ॥ ১০৬ ॥

পুনঃ স্তুতি করি' রাজা করয়ে প্রণাম ।
প্রভু-কৃপা-অশ্রুতে তাঁর দেহ হৈল স্নান ॥ ১০৬ ॥

पुनः—पुनः; **स्तुति करि'**—स्तुति करके; **राजा**—राजा ने; **करये प्रनाम**—प्रणाम किया; **प्रभु कृपा**—महाप्रभु की कृपा के; **अश्रुते**—अश्रुओं से; **ताँर**—महाप्रभु का; **देह**—शरीर; **हैल**—हो गया; **स्नान**—भीग गया।

अनुवाद

जब महाप्रभु ने राजा का आलिंगन किया, तो राजा ने बारम्बार प्रार्थना की और उन्हें नमस्कार किया। इस तरह महाप्रभु की कृपा से राजा की आँखों में आँसू आ गये, जिससे महाप्रभु का शरीर नहा उठा।

সুস্থ করি, রামানন্দ রাজারে বসাইলা ।
কায়-মনো-বাক্যে প্রভু তাঁরে কৃপা কৈলা ॥ ১০৭ ॥

সুস্থ করি, রামানন্দ রাজারে বসাইলা ।
কায়-মনো-বাক্যে প্রভু তাঁরে কৃপা কৈলা ॥ ১০৭ ॥

सुस्थ करि—उसको शान्त करके; **रामानन्द**—रामानन्द राय ने; **राजारे वसाइला**—राजा को बैठाया; **काय-मनो-वाक्ये**—तन मन और वाणी से; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ताँरे**—राजा को; **कृपा कैला**—अपनी कृपा दिखलाई।

अनुवाद

अन्त में रामानन्द राय ने राजा को सान्त्वना दी और उन्हें बैठाया। महाप्रभु ने भी अपने शरीर, मन तथा वाणी से राजा पर कृपा की।

ঐছে তাঁহারে কৃপা কৈল গৌররায় ।
"প্রতাপরুদ্র-সম্রাতা" নাম হৈল যায় ॥ ১০৮ ॥

ऐछे ताँहारे कृपा कैल गौरराय ।
"प्रतापरुद्र-सन्त्राता" नाम हैल य्राय ॥ १०८ ॥

ऐछे—ऐसी; **ताँहारे**—राजा को; **कृपा**—कृपा; **कैल**—दिखलाई; **गौरराय**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **प्रतापरुद्र-सन्त्राता**—प्रतापरुद्र संत्राता (उद्धारक); **नाम**—नाम; **हैल**—हो गया; **य्राय**—जिससे।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने राजा पर इतनी कृपा प्रदर्शित की कि उस दिन से महाप्रभु का नाम 'प्रतापरुद्र-संत्राता' अर्थात् 'महाराज प्रतापरुद्र के उद्धारक' पड़ गया।

রাজ-পাত্র-গণ কৈল প্রভুর বন্দন ।
রাজারে বিদায় দিলা শচীর নন্দন ॥ ১০৯ ॥

राज-पात्र-गण कैल प्रभुर वन्दन ।
राजारे विदाय दिला शचीर नन्दन ॥ १०९ ॥

राज-पात्र-गण—राजा के अधिकारी गण; **कैल**—की; **प्रभुर वन्दन**—महाप्रभु की वन्दना; **राजारे**—राजा को; **विदाय दिला**—विदा दी; **शचीर नन्दन**—माता शची के पुत्र ने।

अनुवाद

सारे सरकारी अधिकारियों ने भी महाप्रभु को नमस्कार किया और तब शची-पुत्र महाप्रभु ने राजा तथा उनके व्यक्तियों को विदा किया।

বাহিরে আসি' রাজা আজ্ঞা-পত্র লেখাইল ।
নিজ-রাজ্যে যত 'বিষয়ী', তাহারে পাঠাইল ॥ ১১০ ॥

बाहिरे आसि' राजा आज्ञा-पत्र लेखाइल ।
निज-राज्ये य्रत 'विषयी', ताहारे पाठाइल ॥ ११० ॥

बाहिरे आसि'—बाहर आकर; **राजा**—राजा ने; **आज्ञा-पत्र**—आदेश पत्र; **लेखाइल**—लिखवाकर; **निज-राज्ये**—अपने राज्य में; **य्रत**—सभी; **विषयी**—सरकारी सेवक; **ताहारे**—उनको; **पाठाइल**—भेजा।

अनुवाद

तब राजा बाहर गये और उन्होंने आदेश पत्र लिखाकर अपने राज्य-भर के सरकारी नौकरों को भिजवाया।

'ग्रामे-ग्रामे' नूतन आवास करिबा ।
पाँच-सात नव्य-गृहे सामग्र्ये भरिबा ॥ १११ ॥

'ग्रामे-ग्रामे' नूतन आवास करिबा ।
पाँच-सात नव्य-गृहे सामग्र्ये भरिबा ॥ १११ ॥

ग्रामे-ग्रामे—प्रत्येक गाँव में; **नूतन**—नया; **आवास**—निवासस्थान; **करिबा**—तुम्हें बनाना चाहिए; **पाँच-सात**—पाँच से सात; **नव्य-गृहे**—नये घरों में; **सामग्र्ये**—भोजन से; **भरिबा**—भर देना चाहिए।

अनुवाद

उनका आदेश था, "प्रत्येक गाँव में नये आवास स्थान बनाये जाएँ और पाँच-सात नये घरों में सभी तरह का भोजन संग्रह कर लिया जाए।

आपनि प्रभुके लञा ताहाँ उत्तरिबा ।
रात्रि-दिबा वेत्र-हस्ते सेवाय रहिबा ॥ ११२ ॥

आपनि प्रभुके लञा ताहाँ उत्तरिबा ।
रात्रि-दिबा वेत्र-हस्ते सेवाय रहिबा ॥ ११२ ॥

आपनि—स्वयं; **प्रभुके**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **लञा**—लेकर; **ताहाँ उत्तरिबा**—तुम्हें वहाँ जाना चाहिए; **रात्रि-दिबा**—रात दिन; **वेत्र-हस्ते**—हाथ में छड़ी लेकर; **सेवाय रहिबा**—उनकी सेवा में लगे रहना चाहिए।

अनुवाद

"तुम लोग स्वयं महाप्रभु को इन नवनिर्मित घरों में ले जाना। तुम लोग रात-दिन अपने हाथों में बेंत (लाठी) लिए उनकी सेवा में लगे रहना।"

दुइ महा-पात्र,—'हरिचन्दन', 'मर्दराज' ।
ताँरे आज्ञा दिल राजा—'करिह सर्व काय ॥ ११३ ॥

दुइ महा-पात्र,—'हरिचन्दन', 'मर्दराज' ।
ताँरे आज्ञा दिल राजा—'करिह सर्व काय ॥ ११३ ॥

दुइ महा-पात्र—दो प्रतिष्ठित अधिकारियों को; **हरिचन्दन**—हरिचन्दन; **मर्दराज**—मर्दराज; **ताँरे**—उनको; **आज्ञा दिल**—आज्ञा दी; **राजा**—राजा ने; **करिह**—करो; **सर्व काय**—जो कुछ आवश्यक हो।

अनुवाद

राजा ने हरिचन्दन तथा मर्दराज नामक दो सम्मानित अधिकारियों को आदेश दिया कि इन आदेशों के पालन करने के लिए जो भी आवश्यक हो, करें।

एक नव्य-नौका आनि' राखह नदी-तीरे ।
याहाँ स्नान करि' प्रभु या'न नदी-पारे ॥११४॥
ताहाँ स्तम्भ रोपण कर 'महा-तीर्थ' करि' ।
नित्य स्नान करिब ताहाँ, ताहाँ येन मरि ॥११५॥

एक नव्य-नौका आनि' राखह नदी-तीरे ।
याहाँ स्नान करि' प्रभु या'न नदी-पारे ॥११४॥
ताहाँ स्तम्भ रोपण कर 'महा-तीर्थ' करि' ।
नित्य स्नान करिब ताहाँ, ताहाँ येन मरि ॥११५॥

एक—एक; **नव्य**—नयी; **नौका**—नौका; **आनि'**—लाकर; **राखह**—रखो; **नदी-तीरे**—नदी के तट पर; **याहाँ**—जहाँ; **स्नान करि'**—स्नान करके; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **या'न**—जाएँ; **नदी-पारे**—नदी के दूसरे तट पर; **ताहाँ**—वहाँ; **स्तम्भ**—स्मृति स्तभ; **रोपण कर**—स्थापित करो; **महा-तीर्थ करि'**—उस स्थान को एक महान् तीर्थ स्थान बनाकर; **नित्य**—प्रतिदिन; **स्नान करिब**—मैं स्नान करूँगा; **ताहाँ**—वहाँ; **ताहाँ**—वहाँ; **येन मरि**—मैं मरना चाहूँगा।

अनुवाद

राजा ने उन्हें यह भी आदेश दिया कि नदी के तटों पर एक नयी नाव रखें और जहाँ-जहाँ श्री चैतन्य महाप्रभु स्नान करें या नदी के उस पार जाएँ, वहाँ-वहाँ वे स्मृति-स्तम्भ स्थापित कर दें और उस स्थान को तीर्थस्थल बना दें। राजा ने कहा, "मैं वहीं-वहीं स्नान किया करूँगा और मुझे मरने भी वहीं देना।"

चतुर्द्वारे करह उत्तम नव्य वास ।
रामानन्द, याह तुमि महाप्रभु-पाश ॥११६॥

चतुर्द्वारि करह उत्तम नव्य वास ।
रामानन्द, याह तुमि महाप्रभु-पाश ॥११६॥

चतुर्द्वारि—चतुर्द्वार नामक स्थान पर; **करह**—बनाओ; **उत्तम**—उत्तम; **नव्य वास**—नया निवासस्थान; **रामानन्द**—रामानन्द राय; **आह तुमि**—वहाँ आप जाओ; **महाप्रभु-पाश**—श्री चैतन्य महाप्रभु के पास।

अनुवाद

राजा ने आगे आदेश दिया, "चतुर्द्वार पर एक नया वासस्थान तैयार कराना। हे रामानन्द, अब आप महाप्रभु के पास लौट सकते हैं।"

सन्ध्याते चलिबे प्रभु,——नृपति शुनिल ।
हस्ती-उपर ताम्बु-गृहे स्त्री-गणे चड़ाइल ॥ ११७॥

सन्ध्याते चलिबे प्रभु,——नृपति शुनिल ।
हस्ती-उपर ताम्बु-गृहे स्त्री-गणे चड़ाइल ॥ ११७॥

सन्ध्याते—संध्या समय; **चलिबे प्रभु**—महाप्रभु चलेंगे; **नृपति शुनिल**—राजा ने सुना; **हस्ती-उपर**—हाथियों की पीठ पर; **ताम्बु-गृहे**—तम्बुओं में; **स्त्री-गणे**—सभी महिलाओं को; **चड़ाइल**—बैठाया।

अनुवाद

जब राजा ने सुना कि महाप्रभु उस दिन संध्या-समय चले जायेंगे, तो उसने तुरन्त ही कुछ ऐसे हाथी लाये जाने का प्रबन्ध कर दिया जिनकी पीठ पर छोटे-छोटे तम्बू लगे हों। फिर महल की सारी स्त्रियाँ उन हाथियों पर बैठ गईं।

प्रभुर चलिबार पथे रहे सारि हञा ।
सन्ध्याते चलिला प्रभु निज-गण लञा ॥ ११८॥

प्रभुर चलिबार पथे रहे सारि हञा ।
सन्ध्याते चलिला प्रभु निज-गण लञा ॥ ११८॥

प्रभुर—महाप्रभु के; **चलिबार पथे**—प्रस्थान के पथ पर; **रहे**—रहे; **सारि हञा**—एक पंक्ति में होकर; **सन्ध्याते**—सांयकाल; **चलिला प्रभु**—महाप्रभु चल पड़े; **निज-गण लञा**—अपने लोगों को लेकर।

अनुवाद

ये सारी स्त्रियाँ उस मार्ग में पंक्ति बाँधकर प्रतीक्षा-रत रहीं, जिससे

होकर महाप्रभु जाने वाले थे। उस शाम को महाप्रभु अपने भक्तों सहित वहाँ से चल पड़े।

'चित्रोत्पला-नदी' आसि' घाटे कैल स्नान ।
महिषी-सकल देखि' करये प्रणाम ॥ ११९॥

'चित्रोत्पला-नदी' आसि' घाटे कैल स्नान ।
महिषी-सकल देखि' करये प्रणाम ॥ ११९॥

चित्रोत्पला-नदी—चित्रोत्पला नदी; **आसि'**—आकर; **घाटे**—घाट पर; **कैल स्नान**—स्नान किया; **महिषी-सकल**—राजमहल की सभी रानियों तथा महिलाओं ने; **देखि'**—देखकर; **करये प्रणाम**—प्रणाम किया।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु चित्रोत्पला नदी में स्नान करने गये, तो सारी रानियों तथा स्त्रियों ने उन्हें सादर नमस्कार किया।

प्रभुर दरशने सबे हैल प्रेममय ।
'कृष्ण' 'कृष्ण' कहे, नेत्र अश्रु वरिषय ॥ १२०॥

प्रभुर दरशने सबे हैल प्रेममय ।
'कृष्ण' 'कृष्ण' कहे, नेत्र अश्रु वरिषय ॥ १२०॥

प्रभुर दरशने—महाप्रभु के दर्शन से; **सबे**—वे सब; **हैल**—हो गईं; **प्रेम-मय**—प्रेम से विह्वल; **कृष्ण कृष्ण कहे**—कृष्ण के पावन नाम का कीर्तन किया; **नेत्र**—नेत्रों से; **अश्रु**—अश्रु; **वरिषय**—बरस पड़े।

अनुवाद

महाप्रभु को देखकर वे सारी स्त्रियाँ भगवत्प्रेम से अभिभूत हो उठीं और आँखों से अश्रु गिराते हुए "कृष्ण! कृष्ण!" कीर्तन करने लगीं।

এমন কৃপালু নাহি শুনি ত্রিভুবনে ।
কৃষ্ণ-প্রেমা হয় যাঁর দূর দরশনে ॥ ১২১॥

এমন কৃপালু নাহি শুনি ত্রিভুবনে ।
কৃষ্ণ-প্রেমা হয় যাঁর দূর দরশনে ॥ ১২১॥

एमन कृपालु—ऐसा कृपालु पुरुष; **नाहि**—नहीं; **शुनि**—हम सुनतीं; **त्रि-भुवने**—तीनों भुवनों में; **कृष्ण-प्रेमा हय**—कृष्ण-प्रेम मिलता है; **याँर**—जिन्हें; **दूर दरशने**—दूर से देखने से ही।

अनुवाद

तीनों लोकों में श्री चैतन्य महाप्रभु के समान दयामय कोई नहीं है। उनका दूर से दर्शन करने मात्र से मनुष्य भगवत्प्रेम से अभिभूत हो जाता है।

নৌকাতে চড়িয়া প্রভু হৈল নদী পার ।
জ্যোৎস্নাবতী রাত্র্যে চলি' আইলা চতুর্দ্বার ॥ ১২২॥

नौकाते चड़िया प्रभु हैल नदी पार ।
ज्योत्स्नावती रात्र्ये चलि' आइला चतुर्द्वार ॥ १२२॥

नौकाते चड़िया—नौका पर चढ़कर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हैल**—गये; **नदी पार**—नदी के पार; **ज्योत्स्नावती**—पूर्ण चन्द्र से प्रकाशित; **रात्र्ये**—रात में; **चलि'**—चलकर; **आइला**—आये; **चतुर्द्वार**—चतुर्द्वार को।

अनुवाद

तब महाप्रभु ने एक नई नाव में चढ़कर नदी को पार किया। वे चाँदनी रात में चलकर चतुर्द्वार नामक नगर में जा पहुँचे।

রাত্র্যে তথা রহি' প্রাতে স্নান-কৃত্য কৈল ।
হেন-কালে জগন্নাথের মহা-প্রসাদ আইল ॥ ১২৩॥

रात्र्ये तथा रहि' प्राते स्नान-कृत्य कैल ।
हेन-काले जगन्नाथेर महा-प्रसाद आइल ॥ १२३॥

रात्र्ये—उस रात को; **तथा रहि'**—वहाँ ठहरकर; **प्राते**—प्रातः काल; **स्नान-कृत्य कैल**—स्नान किया; **हेन-काले**—उस समय; **जगन्नाथेर**—भगवान् जगन्नाथ का; **महा-प्रसाद आइल**—महाप्रसाद आ गया।

अनुवाद

महाप्रभु ने रात वहीं बिताई और प्रातःकाल उठकर स्नान किया। उसी समय जगन्नाथजी का प्रसाद आ गया।

রাজার আজ্ঞায় পড়িছা পাঠায় দিনে-দিনে ।
বহুত প্রসাদ পাঠায় দিয়া বহু-জনে ॥ ১২৪ ॥

राजार आज्ञाय पड़िछा पाठाय दिने-दिने ।
बहुत प्रसाद पाठाय दिया बहु-जने ॥ १२४ ॥

राजार आज्ञाय—राजा की आज्ञा से; **पड़िछा**—मन्दिर के अध्यक्ष ने; **पाठाय**—भेजा; **दिने-दिने**—प्रतिदिन; **बहुत प्रसाद**—बहुत प्रसाद; **पाठाय**—उसने भेजा; **दिया बहु-जने**—कई व्यक्तियों से उठवाकर।

अनुवाद

राजा की आज्ञा के अनुसार मन्दिर का निरीक्षक प्रतिदिन काफी मात्रा में प्रसाद भेज देता था, जिसे कई लोग उठाकर लाते थे।

স্বগণ-সহিতে প্রভু প্রসাদ অঙ্গীকরি' ।
উঠিয়া চলিলা প্রভু বলি' 'হরি' 'হরি' ॥ ১২৫ ॥

स्वगण-सहिते प्रभु प्रसाद अङ्गीकरि' ।
उठिया चलिला प्रभु बलि' 'हरि' 'हरि' ॥ १२५ ॥

स्व-गण-सहिते—अपने साथियों के साथ; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **प्रसाद**—प्रसाद; **अङ्गीकरि'**—लेकर; **उठिया**—उठकर; **चलिला**—चल पड़े; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **बलि'**—बोलते हुए; **हरि हरि**—"हरि, हरि"।

अनुवाद

प्रसाद ग्रहण करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु उठ खड़े हुए और "हरि! हरि!" कीर्तन करते हुए चल पड़े।

রামানন্দ, মর্দরাজ, শ্রী-হরিচন্দন ।
সঙ্গে সেবা করি' চলে এই তিন জন ॥ ১২৬ ॥

रामानन्द, मर्दराज, श्री-हरिचन्दन ।
सङ्गे सेवा करि' चले एइ तिन जन ॥ १२६ ॥

रामानन्द—रामानन्द; **मर्दराज**—मर्दराज; **श्री-हरिचन्दन**—श्री हरिचन्दन; **सङ्गे**—के साथ; **सेवा करि'**—सेवा करते हुए; **चले**—चले; **एइ तिन जन**—ये तीन महोदय।

अनुवाद

रामानन्द राय, मर्दराज तथा श्री हरिचन्दन सदैव श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ-साथ रहते और उनकी सेवा करते थे।

प्रभु-सङ्गे पुरी-गोसाञि, स्वरूप-दामोदर ।
जगदानन्द, मुकुन्द, गोविन्द, काशीश्वर ॥ १२७॥
हरिदास-ठाकुर, आर पण्डित-वक्रेश्वर ।
गोपीनाथाचार्य, आर पण्डित-दामोदर ॥ १२८॥
रामाई, नन्दाई, आर बहु भक्त-गण ।
प्रधान कहिलुँ, सबार के करे गणन ॥ १२९॥

प्रभु-सङ्गे पुरी-गोसाञि, स्वरूप-दामोदर ।
जगदानन्द, मुकुन्द, गोविन्द, काशीश्वर ॥ १२७॥
हरिदास-ठाकुर, आर पण्डित-वक्रेश्वर ।
गोपीनाथाचार्य, आर पण्डित-दामोदर ॥ १२८॥
रामाइ, नन्दाइ, आर बहु भक्त-गण ।
प्रधान कहिलुँ, सबार के करे गणन ॥ १२९॥

प्रभु-सङ्गे—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **पुरी-गोसाञि**—परमानन्द पुरी; **स्वरूप-दामोदर**—स्वरूप दामोदर; **जगदानन्द**—जगदानन्द; **मुकुन्द**—मुकुन्द; **गोविन्द**—गोविन्द; **काशीश्वर**—काशीश्वर; **हरिदास-ठाकुर**—हरिदास ठाकुर; **आर**—और; **पण्डित-वक्रेश्वर**—पण्डित वक्रेश्वर; **गोपीनाथ-आचार्य**—गोपीनाथ आचार्य; **आर**—और; **पण्डित-दामोदर**—पण्डित दामोदर; **रामाइ**—रामाइ; **नन्दाइ**—नन्दाइ; **आर**—और; **बहु भक्त-गण**—बहुत से भक्त; **प्रधान**—प्रधान; **कहिलुँ**—मैंने वर्णन किये हैं; **सबार**—उन सबका; **के**—कौन; **करे गणन**—वर्णन कर सकता है।

अनुवाद

महाप्रभु के साथ साथ परमानन्द पुरी गोस्वामी, स्वरूप दामोदर, जगदानन्द, मुकुन्द, गोविन्द, काशीश्वर, हरिदास ठाकुर, वक्रेश्वर पण्डित, गोपीनाथ आचार्य, दामोदर पण्डित, रामाइ, नन्दाइ तथा अन्य अनेक भक्त थे। इनमें से मुख्य भक्तों के नाम मैंने गिनाये हैं। पूरी संख्या बता पाना किसी के लिए भी सम्भव नहीं है।

গদাধর-পণ্ডিত যবে সঙ্গেতে চলিলা ।
'ক্ষেত্র-সন্ন্যাস না ছাড়িহ'—প্রভু নিষেধিলা ॥১৩০॥

गदाधर-पण्डित ग्रबे सङ्गेते चलिला ।
'क्षेत्र-सन्न्यास ना छाड़िह'—प्रभु निषेधिला ॥ १३० ॥

गदाधर-पण्डित—गदाधर पण्डित; **ग्रबे**—जब; **सङ्गेते**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **चलिला**—चलने लगे; **क्षेत्र-सन्न्यास**—एक तीर्थस्थान पर संन्यास (क्षेत्र संन्यास); **ना छाड़िह**—न छोड़ो; **प्रभु निषेधिला**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने मना किया।

अनुवाद

जब गदाधर पण्डित महाप्रभु के साथ जाने को उद्यत हुए, तो उन्हें मना कर दिया गया और कहा गया कि वे क्षेत्र-संन्यास-व्रत का परित्याग न करे।

तात्पर्य

जब कोई *क्षेत्र-संन्यास* लेता है, तो अपना गृहस्थ जीवन त्याग कर भगवान् विष्णु से सम्बन्धित किसी तीर्थस्थान में जाता है। ऐसे स्थानों के अन्तर्गत पुरुषोत्तम (जगन्नाथ पुरी), नवद्वीप धाम तथा मथुरा धाम आते हैं। क्षेत्र-संन्यासी इन स्थानों में अकेले या अपने परिवार के साथ रहता है। श्रील भक्तिविनोद ठाकुर क्षेत्र-संन्यास को इस कलियुग में वानप्रस्थ स्थिति से श्रेयस्कर मानते हैं। सार्वभौम भट्टाचार्य इसी तरह रह रहे थे और उन्हें क्षेत्र-संन्यासी कहा गया है अर्थात् वे जगन्नाथ पुरी में रहने वाले संन्यासी थे।

পণ্ডিত কহে,—"যাহাঁ তুমি, সেই নীলাচল ।
ক্ষেত্র-সন্ন্যাস মোর যাউক রসাতল" ॥১৩১॥

पण्डित कहे,—"ग्राहाँ तुमि, सेइ नीलाचल ।
क्षेत्र-सन्न्यास मोर ग्राउक रसातल" ॥ १३१ ॥

पण्डित कहे—गदाधर पण्डित ने कहा; **ग्राहाँ**—जहाँ कहीं; **तुमि**—आप होते हो; **सेइ**—वही; **नीलाचल**—जगन्नाथ पुरी; **क्षेत्र-सन्न्यास**—क्षेत्र संन्यास (एक तीर्थस्थान पर रहने का प्रण); **मोर**—मेरा; **ग्राउक**—जाने दो; **रसातल**—नरक में।

अनुवाद

जब गदाधर पण्डित से लौट जाने के लिए कहा गया तो वे महाप्रभु

से बोले, "आप जहाँ भी रहते हैं, वही जगन्नाथ पुरी है। मेरा तथाकथित क्षेत्र-संन्यास नरक में जाए।"

প্রভু কহে,——"ইঁহা কর গোপীনাথ সেবন" ।
পণ্ডিত কহে,——"কোটি-সেবা ত্বৎপাদ-দর্শন" ॥১৩২॥

प्रभु कहे,——"इँहा कर गोपीनाथ सेवन" ।
पण्डित कहे,——"कोटि-सेवा त्वत्पाद-दर्शन" ॥ १३२ ॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **इँहा**—यहाँ; **कर**—करो; **गोपीनाथ सेवन**—गोपीनाथ की पूजा; **पण्डित कहे**—पण्डित ने कहा; **कोटि-सेवा**—लाखों गुना पूजा; **त्वत्-पाद-दर्शन**—आपके चरणकमल के दर्शन करने से।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने गदाधर पण्डित से जगन्नाथ पुरी में रुक जाने तथा गोपीनाथ की सेवा करने के लिए कहा, तो गदाधर पण्डित ने उत्तर दिया, "आपके चरणकमलों के दर्शन मात्र से गोपीनाथ की करोड़ बार सेवा हो जाती है।"

প্রভু কহে,——"সেবা ছাড়িবে, আমায় লাগে দোষ ।
ইঁহা রহি' সেবা কর,——আমার সন্তোষ" ॥১৩৩॥

प्रभु कहे,——"सेवा छाड़िबे, आमाय लागे दोष ।
इँहा रहि' सेवा कर,——आमार सन्तोष" ॥ १३३ ॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **सेवा छाड़िबे**—आप सेवा छोड़ दोगे; **आमाय**—मुझे; **लागे**—लगेगा; **दोष**—दोष; **इँहा रहि'**—यहाँ रहकर; **सेवा कर**—सेवा करो; **आमार**—मेरा; **सन्तोष**—सन्तोष।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "यदि आप उनकी सेवा करना बन्द कर दोगे, तो यह मेरा दोष होगा। अतः अच्छा यही होगा कि आप यहाँ रहकर सेवा-कार्य करो। इससे मुझे सन्तोष मिलेगा।"

পণ্ডিত কহে,—"সব দোষ আমার উপর ।
তোমা-সঙ্গে না যাইব, যাইব একেশ্বর ॥১৩৪॥

पण्डित कहे,—"सब दोष आमार उपर ।
तोमा-सङ्गे ना ग्नाइब, ग्नाइब एकेश्वर ॥ १३४॥

पण्डित कहे—पण्डित ने कहा; **सब**—सब; **दोष**—दोष; **आमार उपर**—मेरे ऊपर; **तोमा-सङ्गे**—आप के साथ; **ना ग्नाइब**—मैं नहीं जाऊँगा; **ग्नाइब**—मैं जाऊँगा; **एकेश्वर**—अकेले।

अनुवाद

पण्डित ने उत्तर दिया, "चिन्ता न करें। सारे दोष मेरे सिर पर होंगे। लीजिये, मैं आपके साथ नहीं, अपितु अकेले जाऊँगा।

আই'কে দেখিতে যাইব, না যাইব তোমা লাগি' ।
'প্রতিজ্ঞা'-'সেবা'-ত্যাগ-দোষ, তার আমি ভাগী" ॥১৩৫॥

आइ'के देखिते ग्नाइब, ना ग्नाइब तोमा लागि' ।
'प्रतिज्ञा'-'सेवा'-त्याग-दोष, तार आमि भागी" ॥ १३५॥

आइ'के—माता शचीदेवी को; **देखिते**—देखने के लिए; **ग्नाइब**—मैं जाऊँगा; **ना ग्नाइब**—मैं नहीं जाऊँगा; **तोमा लागि'**—आपके लिए; **प्रतिज्ञा-सेवा**—गोपीनाथ की सेवा तथा प्रण; **त्याग-दोष**—त्यागने का दोष; **तार**—उसके लिए; **आमि भागी**—मैं उत्तरदायी हूँ।

अनुवाद

"मैं शचीमाता को मिलने जाऊँगा, किन्तु आपके कारण नहीं जाऊँगा। मैं गोपीनाथ की सेवा करने के अपने व्रत को भंग करने के लिए स्वयं जिम्मेदार होऊँगा।"

এত বলি' পণ্ডিত-গোসাঞি পৃথক্চলিলা ।
কটক আসি' প্রভু তাঁরে সঙ্গে আনাইলা ॥১৩৬॥

एत बलि' पण्डित-गोसाञि पृथक्चलिला ।
कटक आसि' प्रभु ताँरे सङ्गे आनाइला ॥ १३६॥

एत बलि'—यह कहकर; **पण्डित-गोसाञि**—गदाधर पण्डित; **पृथक् चलिला**—

अलग चले गये; **कटक आसि'**—कटक आने पर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ताँरे**—उनको; **सङ्गे**—अपने साथ; **आनाइला**—ले लिया।

अनुवाद

इस तरह गदाधर पण्डित गोस्वामी अकेले यात्रा पर निकले, किन्तु जब वे सभी लोग कटक पहुँचे तो श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन्हें बुला लिया और वे महाप्रभु के साथ हो गए।

पण्डितेर गौराङ्ग-प्रेम बूझन ना याय ।
'प्रतिज्ञा', 'श्री-कृष्ण-सेवा' छाड़िल तृण-प्राय ॥ १३७॥

पण्डितेर गौराङ्ग-प्रेम बुझन ना याय ।
'प्रतिज्ञा', 'श्री-कृष्ण-सेवा' छाड़िल तृण-प्राय ॥ १३७॥

पण्डितेर—गदाधर पण्डित का; **गौराङ्ग-प्रेम**—श्री चैतन्य महाप्रभु के लिए प्रेम; **बुझन**—समझकर; **ना याय**—सम्भव नहीं है; **प्रतिज्ञा**—प्रतिज्ञा; **श्री-कृष्ण-सेवा**—भगवान् की सेवा; **छाड़िल**—छोड़ दी; **तृण-प्राय**—प्रायः तिनके की तरह।

अनुवाद

गदाधर पण्डित तथा श्री चैतन्य महाप्रभु के बीच के प्रेम की घनिष्ठता को कोई नहीं समझ सकता। गदाधर पण्डित ने अपनी प्रतिज्ञा तथा गोपीनाथ की सेवा का उसी तरह परित्याग कर दिया, जिस तरह कोई तिनके के टुकड़े को त्याग देता है।

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु की संगति पाने मात्र के लिए गदाधर पण्डित ने गोपीनाथ की सेवा करते रहने की अपनी जीवन भर की प्रतिज्ञा तोड़ दी। इस प्रकार के प्रेम को केवल अत्यन्त विश्वस्त भक्तगण ही समझ सकते हैं। सामान्यतया इसका तात्पर्य कोई नहीं समझ सकता।

তাঁহার চরিত্রে প্রভু অন্তরে সন্তোষ ।
তাঁহার হাতে ধরি' কহে করি' প্রণয়-রোষ ॥ ১৩৮॥

তাঁহার চরিত্রে প্রভু অন্তরে সন্তোষ ।
তাঁহার হাতে ধরি' কহে করি' প্রণয়-রোষ ॥ १३८॥

ताँहार चरित्रे—उनके व्यवहार से; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **अन्तरे**—अपने हृदय में; **सन्तोष**—बहुत सन्तुष्ट हुए; **ताँहार हाते धरि'**—उनका हाथ पकड़कर; **कहे**—कहा; **करि'**—दिखाते हुए; **प्रणय-रोष**—प्रेम में क्रोध।

अनुवाद

गदाधर पण्डित का आचरण श्री चैतन्य महाप्रभु के हृदय को अत्यन्त मोहक लगा। फिर भी महाप्रभु ने उनका हाथ पकड़कर प्रेममय क्रोध प्रदर्शित करते हुए कहा।

'प्रतिज्ञा', 'सेवा' छाड़िबे,—ए तोमार 'उद्देशश' ।
से सिद्ध हइल—छाड़ि' आइला दूर देश ॥ १३७ ॥

'प्रतिज्ञा', 'सेवा' छाड़िबे,—ए तोमार 'उद्देश' ।
से सिद्ध हइल—छाड़ि' आइला दूर देश ॥ १३९ ॥

प्रतिज्ञा—प्रतिज्ञा; **सेवा**—और सेवा; **छाड़िबे**—छोड़ दूँगा; **ए**—यह; **तोमार**—तुम्हारा; **उद्देश**—उद्देश्य; **से**—वह; **सिद्ध**—पूरा; **हइल**—हो गया है; **छाड़ि'**—छोड़कर; **आइला**—आ गये हो; **दूर देश**—दूर देश में।

अनुवाद

"तुमने गोपीनाथ की सेवा छोड़ी है और पुरी में रहने की अपनी प्रतिज्ञा भंग की है। चूँकि तुम इतनी दूर निकल आये हो, अतएव वह सब अब पूर्ण हो गया।

आमार सङ्गे रहिते चाह,—वाञ्छ निज-सुख ।
तोमार दुइ धर्म याय,—आमार हय 'दुःख' ॥ १४० ॥

आमार सङ्गे रहिते चाह,—वाञ्छ निज-सुख ।
तोमार दुइ धर्म य्राय,—आमार हय 'दुःख' ॥ १४० ॥

आमार सङ्गे—मेरे साथ; **रहिते**—रहने के लिए; **चाह**—तुम चाहते हो; **वाञ्छ**—तुम इच्छा करते हो; **निज-सुख**—अपनी खुद की इन्द्रियतृप्ति; **तोमार**—तुम्हारे; **दुइ धर्म**—दो धर्म; **य्राय**—नष्ट होते हैं; **आमार**—मुझे; **हय**—है; **दुःख**—दुःख।

अनुवाद

"मेरे साथ जाने की तुम्हारी इच्छा तुम्हारे द्वारा इन्द्रियतृप्ति की

अभिलाषा मात्र है। इस तरह तुम दो धार्मिक सिद्धान्तों को तोड़ रहे हो, जिसके कारण मैं अत्यन्त दुःखी हूँ।

মোর সুখ চাহ যদি, নীলাচলে চল ।
আমার শপথ, যদি আর কিছু বল ॥ ১৪১॥
मोर सुख चाह यदि, नीलाचले चल ।
आमार शपथ, यदि आर किछु बल ॥ १४१॥

मोर—मेरा; **सुख**—सुख; **चाह**—तुम चाहते हो; **यदि**—यदि; **नीलाचले चल**—जगन्नाथ पुरी (नीलाचल) लौट जाओ; **आमार शपथ**—मेरी निन्दा; **यदि**—यदि; **आर**—और; **किछु**—कुछ; **बल**—तुम कहते हो।

अनुवाद

"यदि तुम मेरी प्रसन्नता चाहते हो, तो तुम नीलाचल लौट जाओ। यदि इस विषय में तुम कुछ अधिक कहोगे तो तुम मेरी निन्दा ही करोगे।"

এত বলি' মহাপ্রভু নৌকাতে চড়িলা ।
মূর্চ্ছিত হঞা পণ্ডিত তথাই পড়িলা ॥ ১৪২॥
एत बलि' महाप्रभु नौकाते चड़िला ।
मूर्च्छित हञा पण्डित तथाइ पड़िला ॥ १४२॥

एत बलि'—यह कहकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **नौकाते चड़िला**—नौका पर चढ़ गये; **मूर्च्छित हञा**—मूर्च्छित होकर; **पण्डित**—गदाधर पण्डित गोस्वामी; **तथाइ**—वहाँ; **पड़िला**—गिर गये।

अनुवाद

यह कह कर श्री चैतन्य महाप्रभु नाव में चढ़ गये और गदाधर पण्डित तुरन्त ही मूर्च्छित होकर जमीन पर गिर पड़े।

পণ্ডিতে লঞা যাইতে সার্বভৌমে আজ্ঞা দিলা ।
ভট্টাচার্য কহে,—"উঠ, ঐছে প্রভুর লীলা ॥ ১৪৩॥
पण्डिते लञा याइते सार्वभौमे आज्ञा दिला ।
भट्टाचार्य्य कहे,—"उठ, ऐछे प्रभुर लीला ॥ १४३॥

पण्डिते लञा—पण्डित को लेकर; **ग्राइते**—जाने के लिए; **सार्वभौमे**—सार्वभौम भट्टाचार्य को; **आज्ञा दिला**—आज्ञा दी; **भट्टाचार्य्य कहे**—सार्वभौम भट्टाचार्य ने कहा; **उठ**—कृपया उठो; **ऐछे**—ऐसी हैं; **प्रभुर लीला**—महाप्रभु की लीलाएँ।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने सार्वभौम भट्टाचार्य को आदेश दिया कि वे अपने साथ गदाधर पण्डित को लेते जाएँ। अतएव भट्टाचार्य ने गदाधर पण्डित से कहा, "उठो! श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ ऐसी ही हैं।

तुमि जान, कृष्ण निज-प्रतिज्ञा छाड़िला ।
भक्त कृपा-वशे भीष्मेर प्रतिज्ञा राखिला ॥ १४४॥

तुमि जान, कृष्ण निज-प्रतिज्ञा छाड़िला ।
भक्त कृपा-वशे भीष्मेर प्रतिज्ञा राखिला ॥ १४४॥

तुमि जान—तुम जानते हो; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण ने; **निज-प्रतिज्ञा**—अपनी प्रतिज्ञा; **छाड़िला**—छोड़ दी; **भक्त कृपा-वशे**—भक्त की भक्ति से प्रभावित होकर; **भीष्मेर**—भीष्म पितामह की; **प्रतिज्ञा राखिला**—प्रतिज्ञा निभाने के लिए।

अनुवाद

"तुम जानते हो कि भगवान् कृष्ण ने भीष्म पितामह की प्रतिज्ञा रखने के लिए स्वयं अपनी प्रतिज्ञा का उल्लंघन किया।

स्व-निगममपहाय मत्प्रतिज्ञाम्
ऋतमधिकर्तुमवप्लुतो रथ-स्थः ।
धृत-रथ-चरणोऽभ्ययाच्चलद्गुर्
हरिरिव हन्तुमिभं गतोत्तरीयः ॥ १४५॥

स्व-निगमम्—अस्त्र न पकड़ने और पाण्डवों की ओर से युद्ध करने की अपनी प्रतिज्ञा; **अपहाय**—छोड़कर; **मत्-प्रतिज्ञाम्**—मेरी प्रतिज्ञा; **ऋतम्**—सत्य; **अधिकर्तुम्**—और अधिक

करने के लिए; **अवप्लुतः**—कूदकर; **रथ-स्थः**—रथ पर बैठे (भगवान् कृष्ण); **धृत**—जिन्होंने पकड़ लिया; **रथ-चरणः**—रथ का पहिया; **अभ्ययात्**—आगे भागे; **चलत्-गुः**—सारी धरती को कँपाकर; **हरिः**—एक सिंह; **इव**—की तरह; **हन्तुम्**—मारने हेतु; **इभम्**—हाथी को; **गत-उत्तरीयः**—बाहरी वस्त्र को गिराकर।

अनुवाद

'"मेरी प्रतिज्ञा को सत्य बनाने के लिए भगवान् कृष्ण ने कुरुक्षेत्र में अस्त्र ग्रहण न करने की अपनी खुद की प्रतिज्ञा तोड़ दी। उनका उत्तरीय वस्त्र नीचे गिर रहा था, तभी वे अपने रथ से कूद पड़े, रथ का पहिया उठा लिया और मुझे मारने के लिए दौड़ते हुए आये। वे मुझ पर उसी तरह झपटे, जिस तरह सिंह हाथी को मारने के लिए झपटता है। उन्होंने सारी पृथ्वी को हिला दिया।'

तात्पर्य

भगवान् कृष्ण ने प्रतिज्ञा की थी कि वे कुरुक्षेत्र युद्ध में न तो युद्ध करेंगे, न ही अस्त्र ग्रहण करेंगे। किन्तु जब भीष्म ने अपनी प्रतिज्ञा रखने के लिए भगवान् की प्रतिज्ञा तोड़नी चाही, तो भगवान् तुरन्त अपने रथ से नीचे उतर आये और भीष्म की प्रतिज्ञा को सत्य करने के लिए उन्होंने रथ का एक पहिया उठा लिया और उन्हें मारने के लिए आगे दौड़े। यह उद्धरण *श्रीमद्भागवत* (१.९.३७) से लिया गया है।

এই-মত প্রভু তোমার বিচ্ছেদ সহিয়া ।
তোমার প্রতিজ্ঞা রক্ষা কৈল যত্ন করিয়া'' ॥১৪৬॥

এइ-মত প্রভু তোমার বিচ্ছেদ সহিয়া ।
তোমার প্রতিজ্ঞা রক্ষা কৈল য়ত্ন করিয়া" ॥ ১৪৬ ॥

এइ-মত—इस प्रकार; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **तोमार**—तुम्हारा; **विच्छेद सहिया**—बिछोह सहन करके; **तोमार प्रतिज्ञा**—तुम्हारी प्रतिज्ञा की; **रक्षा कैल**—रक्षा की; **य़त्न करिया**—बहुत प्रयास करके।

अनुवाद

"इसी तरह तुम्हारा वियोग सहते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु ने बड़े यत्न से तुम्हारे व्रत की रक्षा की है।"

এই-মত কহি' তাঁরে প্রবোধ করিলা ।
দুই-জনে শোকাকুল নীলাচলে আইলা ॥১৪৭॥

एइ-मत कहि' ताँरे प्रबोध करिला ।
दुइ-जने शोकाकुल नीलाचले आइला ॥ १४७ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **कहि'**—कहकर; **ताँरे**—उनको; **प्रबोध करिला**—जगाया; **दुइ-जने**—दोनों व्यक्ति; **शोक-आकुल**—शोकग्रस्त होकर; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी को; **आइला**—लौट गये।

अनुवाद

इस तरह से सार्वभौम भट्टाचार्य ने गदाधर पण्डित में प्राण संचार किया। फिर दोनों अत्यन्त शोकाकुल होकर जगन्नाथ पुरी अर्थात् नीलाचल वापस चले आये।

প্রভু লাগি' ধর্ম-কর্ম ছাড়ে ভক্ত-গণ ।
ভক্ত-ধর্ম-হানি প্রভুর না হয় সহন ॥১৪৮॥

प्रभु लागि' धर्म-कर्म छाड़े भक्त-गण ।
भक्त-धर्म-हानि प्रभुर ना हय सहन ॥ १४८ ॥

प्रभु लागि'—श्री चैतन्य महाप्रभु के लिए; **धर्म-कर्म**—धर्म-कर्म, सभी नियत कर्म; **छाड़े**—छोड़ देते हैं; **भक्त-गण**—सारे भक्तगण; **भक्त-धर्म**—भक्त के धर्म का; **हानि**—त्याग करना; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **ना हय**—नहीं था; **सहन**—सहनीय।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के निमित्त सारे भक्त अपने सभी तरह के कार्य छोड़ देते थे। फिर भी महाप्रभु नहीं चाहते थे कि भक्तगण अपने वचनबद्ध कर्तव्यों को छोड़ दें।

'প্রেমের বিবর্ত' ইহা শুনে যেই জন ।
অচিরে মিলিয়ে তাঁরে চৈতন্য-চরণ ॥১৪৯॥

'प्रेमेर विवर्त' इहा शुने य़ेइ जन ।
अचिरे मिलिये ताँरे चैतन्य-चरण ॥ १४९ ॥

प्रेमेर विवर्त—प्रेम का विरोधाभास ; **इहा**—यह; **शुने**—सुनता है; **येइ जन**—जो कोई व्यक्ति; **अचिरे**—शीघ्र ही; **मिलिये**—मिलती है; **ताँरे**—उसको; **चैतन्य-चरण**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की शरण।

अनुवाद

ये सब प्रेम के विरोधाभास हैं। जो कोई भी इन घटनाओं को सुनता है, उसे शीघ्र ही श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की शरण प्राप्त हो जाती है।

दुइ राज-पात्र येइ प्रभु-सङ्गे याय ।
'याजपुर' आसि' प्रभु तारे दिलेन विदाय ॥१५०॥

दुइ राज-पात्र येइ प्रभु-सङ्गे याय ।
'याजपुर' आसि' प्रभु तारे दिलेन विदाय ॥ १५० ॥

दुइ राज-पात्र—दोनों सरकारी अधिकारी; **येइ**—जो; **प्रभु-सङ्गे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के संग; **याय**—गये; **याजपुर आसि'**—याजपुर आकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **तारे**—उनको; **दिलेन विदाय**—विदा किया।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनकी टोली याजपुर पहुँची, तो महाप्रभु ने उन दोनों सरकारी अधिकारियों को लौट जाने के लिए कहा, जो उनके साथ आये थे।

तात्पर्य

याजपुर उड़ीसा का सुप्रसिद्ध स्थान है। यह कटक जिले की एक तहसील है और वैतरणी नदी की दक्षिण दिशा में स्थित है। पूर्वकाल में ऋषियों ने वैतरणी नदी के उत्तरी तट पर बड़े-बड़े यज्ञ किये थे, फलस्वरूप यह स्थान 'याजपुर' अर्थात् "ऐसा स्थान जहाँ यज्ञ सम्पन्न होते हैं" कहलाता है। कुछ लोगों का कहना है कि यह राजा ययाति की राजधानियों में से एक था और ययाति नगर से याजपुर नाम बना है। जैसाकि *महाभारत* (वनपर्व, अध्याय ११४) में कहा गया है :

एते कलिंगाः कौन्तेय यत्र वैतरणी नदी।
यत्रायजत धर्मोऽपि देवान् शरणं एत्य वै।
अत्र वै ऋषयोऽन्ये च पुरा क्रतुभिरीजिरे॥

महाभारत के अनुसार महान् ऋषियों ने प्राचीनकाल में इस स्थान पर यज्ञ किये थे। आज भी वहाँ देवताओं तथा अवतारों के अनेक मन्दिर हैं और वराहदेव का भी एक अर्चाविग्रह है। यह अर्चाविग्रह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है और अनेक तीर्थयात्री यहाँ आते हैं। जो लोग भगवान् की शक्ति के पूजक हैं, वे वाराही, वैष्णवी तथा इन्द्राणी के साथ साथ अन्तरंगा शक्ति अर्थात् देवी के ऐसे ही अनेक रूपों की पूजा करते हैं। शिवजी के अनेक अर्चाविग्रह हैं और दशाश्वमेध घाट नामक नदी के तट पर अनेक स्थान हैं। कभी-कभी याजपुर को नाभिगया या विरजाक्षेत्र भी कहते हैं।

প্রভু বিদায় দিল, রায় যায় তাঁর সনে ।
কৃষ্ণ-কথা রামানন্দ-সনে রাত্রি-দিনে ॥১৫১॥

प्रभु विदाय दिल, राय ग्राय ताँर सने ।
कृष्ण-कथा रामानन्द-सने रात्रि-दिने ॥ १५१ ॥

प्रभु विदाय दिल—महाप्रभु ने विदा किया; **राय**—रामानन्द राय; **ग्राय**—गये; **ताँर सने**—उनके साथ; **कृष्ण-कथा**—भगवान् कृष्ण कथाओं की चर्चा की; **रामानन्द-सने**—रामानन्द राय के साथ; **रात्रि-दिने**—दिन रात।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने अधिकारियों को विदा कर दिया, किन्तु रामानन्द राय उनके साथ बने रहे। महाप्रभु रामानन्द राय से दिन-रात श्रीकृष्ण के विषय में बातें करते।

প্রতি-গ্রামে রাজ-আজ্ঞায় রাজ-ভৃত্য-গণ ।
নব্য গৃহে নানা-দ্রব্যে করয়ে সেবন ॥১৫২॥

प्रति-ग्रामे राज-आज्ञाय राज-भृत्य-गण ।
नव्य गृहे नाना-द्रव्ये करये सेवन ॥ १५२ ॥

प्रति-ग्रामे—प्रत्येक गाँव में; **राज-आज्ञाय**—राजा की आज्ञा से; **राज-भृत्य-गण**—सरकारी सेवकों ने; **नव्य गृहे**—नये घरों में; **नाना-द्रव्ये**—नाना प्रकार के द्रव्यों (अन्न) के साथ; **करये सेवन**—सेवा की।

अनुवाद

राजा के आदेशानुसार सरकारी अधिकारियों ने गाँव-गाँव में नये घर बनवा दिये और हर एक में अन्न का संग्रह कर दिया। इस तरह उन्होंने महाप्रभु की सेवा की।

এই-মত চলি' প্রভু 'রেমুণা' আইলা ।
তথা হৈতে রামানন্দ-রায়ে বিদায় দিলা ॥ ১৫৩ ॥

এइ-মত চলি' প্রভু 'রেমুণা' আইলা ।
তথা হৈতে রামানন্দ-রায়ে বিদায় দিলা ॥ ১৫৩ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **चलि'**—चलकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **रेमुणा आइला**—रेमुणा आये; **तथा हैते**—वहाँ से; **रामानन्द-राये**—रामानन्द राय को; **विदाय दिला**—विदा दी।

अनुवाद

अन्त में श्री चैतन्य महाप्रभु रेमुणा पहुँचे, जहाँ से उन्होंने श्री रामानन्द राय को भी विदा किया।

तात्पर्य

मध्यलीला (१.१४९) में बतलाया जा चुका है कि भद्रक से रामानन्द राय को विदा किया गया। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर कहते हैं कि उन दिनों रेमुणा नामक स्थान के अन्तर्गत भद्रक भी था।

ভূমেতে পড়িলা রায় নাহিক চেতন ।
রায়ে কোলে করি' প্রভু করয়ে ক্রন্দন ॥ ১৫৪ ॥

ভূমেতে পড়িলা রায় নাহিক চেতন ।
রায়ে কোলে করি' প্রভু করয়ে ক্রন্দন ॥ ১৫৪ ॥

भूमेते पड़िला—भूमि पर गिर गये; **राय**—रामानन्द राय; **नाहिक चेतन**—चेतना न रही; **राये**—रामानन्द राय को; **कोले करि'**—गोद में लेकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करये क्रन्दन**—रोने लगे।

अनुवाद

जब रामानन्द राय बेहोश होकर भूमि पर गिर गये, तो श्री चैतन्य महाप्रभु उन्हें अपनी गोद में लेकर विलाप करने लगे।

রায়ের বিদায়-ভাব না যায় সহন ।
কহিতে না পারি এই তাহার বর্ণন ॥১৫৫॥

रायेर विदाय-भाव ना य्राय सहन ।
कहिते ना पारि एइ ताहार वर्णन ॥ १५५ ॥

रायेर विदाय-भाव—रामानन्द राय से विरह भाव; **ना य्राय**—सम्भव नहीं; **सहन**—सहन करना; **कहिते**—वर्णन करना; **ना पारि**—मैं सक्षम नहीं हूँ; **एइ**—यह; **ताहार**—उसका; **वर्णन**—वर्णन।

अनुवाद

रामानन्द राय से वियोग के कारण महाप्रभु की भावनाओं का वर्णन कर पाना अत्यन्त कठिन है। यह प्रायः असह्य है, अतएव मैं इसके आगे वर्णन नहीं कर सकता।

তবে 'ওড্র-দেশ-সীমা' প্রভু চলি' আইলা ।
তথা রাজ-অধিকারী প্রভুরে মিলিলা ॥১৫৬॥

तबे 'ओड्र-देश-सीमा' प्रभु चलि' आइला ।
तथा राज-अधिकारी प्रभुरे मिलिला ॥ १५६ ॥

तबे—तत्पश्चात्; **ओड्र-देश-सीमा**—उड़ीसा की सीमा; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **चलि'**—चलकर; **आइला**—पहुँचे; **तथा**—वहाँ; **राज-अधिकारी**—एक सरकारी अधिकारी; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु से; **मिलिला**—मिला।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु अन्त में उड़ीसा राज्य की सीमा पर आ पहुँचे, तो एक सरकारी अधिकारी उनसे मिलने आया।

দিন দুই-চারি তেঁহো করিল সেবন ।
আগে চলিবারে সেই কহে বিবরণ ॥১৫৭॥

दिन दुइ-चारि तेंहो करिल सेवन ।
आगे चलिबारे सेइ कहे विवरण ॥ १५७ ॥

दिन दुइ-चारि—दो चार दिन; **तेंहो**—उसने; **करिल सेवन**—महाप्रभु की सेवा की;

आगे—आगे; **चलिबारे**—जाने के लिए; **सेइ**—उस अधिकारी ने; **कहे**—बताया; **विवरण**—विवरण।

अनुवाद

वह सरकारी अधिकारी दो-चार दिन तक उनकी सेवा करता रहा। उसने महाप्रभु को आगे की विस्तृत जानकारी भी दी।

মদ্যপ যবন-রাজার আগে অধিকার ।
তাঁর ভয়ে পথে কেহ নারে চলিবার ॥১৫৮॥

मद्यप ग्रवन-राजार आगे अधिकार ।
ताँर भये पथे केह नारे चलिबार ॥ १५८ ॥

मद्यप—शराबी; **ग्रवन**—मुस्लिम; **राजार**—एक राजा का; **आगे**—आगे; **अधिकार**—राज्य; **ताँर भये**—ऐसे राजा के भय के मारे; **पथे**—पथ पर; **केह**—कोई भी; **नारे**—नहीं सकता; **चलिबार**—चलना।

अनुवाद

उसने महाप्रभु को बतलाया कि आगे का भूभाग एक शराबी मुस्लिम गवर्नर द्वारा शासित है। उस राजा के भय से लोग मार्ग पर स्वतन्त्र होकर चल नहीं सकते।

পিছলদা পর্যন্ত সব তাঁর অধিকার ।
তাঁর ভয়ে নদী কেহ হৈতে নারে পার ॥১৫৯॥

पिछलदा पर्ग्रन्त सब ताँर अधिकार ।
ताँर भये नदी केह हैते नारे पार ॥ १५९ ॥

पिछलदा—पिछलदा नामक स्थान; **पर्ग्रन्त**—तक; **सब**—सब; **ताँर**—उसके; **अधिकार**—अधिकार में है; **ताँर भये**—उसके भय से; **नदी**—नदी; **केह**—कोई भी; **हैते**—पार करना; **नारे**—सक्षम नहीं; **पार**—दूसरी ओर।

अनुवाद

मुस्लिम सरकार की सीमा पिछलदा तक है। मुसलमानों के भय से कोई भी व्यक्ति नदी पार नहीं करता था।

तात्पर्य

पुराने जमाने में पिछलदा तमलुक तथा बंगाल का अंश था। पिछलदा तमलुक से लगभग १४ मील दक्षिण स्थित है। तमलुक में रूपनारायण नदी विख्यात है और पिछलदा इसी नदी के किनारे स्थित था।

दिन कत रह—सन्धि करि' ताँर सने ।
तबे सुखे नौकाते कराइब गमने ॥ १६० ॥

दिन कत रह—सन्धि करि' ताँर सने ।
तबे सुखे नौकाते कराइब गमने ॥ १६० ॥

दिन कत रह—कुछ दिन यहाँ रहें; **सन्धि करि'**—शन्ति की बातचीत करके; **ताँर सने**—उसके साथ; **तबे**—तब; **सुखे**—सुखपूर्वक; **नौकाते**—नौका पर; **कराइब गमने**—मैं आपकी जाने में सहायता करूँगा।

अनुवाद

महाराज प्रतापरुद्र के सरकारी अधिकारी ने श्री चैतन्य महाप्रभु को यह भी बतलाया कि उन्हें कुछ दिन तक उड़ीसा की सीमा में रुकना चाहिए, जिससे मुस्लिम गवर्नर से शान्तिपूर्ण समझौता किया जा सके। इस तरह महाप्रभु नाव से नदी को शान्तिपूर्वक पार कर सकेंगे।

सेइ काले से यवनेर एक अनुचर ।
'उड़िया-कटके' आइल करि' वेशान्तर ॥ १६१ ॥

सेइ काले से यवनेर एक अनुचर ।
'उड़िया-कटके' आइल करि' वेशान्तर ॥ १६१ ॥

सेइ काले—उसी समय; **से यवनेर**—मुस्लिम गर्वनर का; **एक अनुचर**—एक सेवक; **उड़िया-कटके**—उड़ीसा सैनिकों के कैम्प की; **आइल**—आया; **करि' वेश-अन्तर**—वेश बदलकर।

अनुवाद

उसी समय मुस्लिम गवर्नर का एक सेवक वेश बदलकर उड़ीसा के खेमे (शिविर) में आया।

প্রভুর সেই অদভুত চরিত্র দেখিয়া ।
হিন্দু-চর কহে সেই যবন-পাশ গিয়া ॥ ১৬২ ॥
'এক সন্ন্যাসী আইল জগন্নাথ হইতে ।
অনেক সিদ্ধ-পুরুষ হয় তাঁহার সহিতে ॥ ১৬৩ ॥

প্রভুর সেই অদভুত চরিত্র দেখিয়া ।
হিন্দু-চর কহে সেই যবন-পাশ গিয়া ॥ ১৬২ ॥
'এক সন্ন্যাসী আইল জগন্নাথ হইতে ।
অনেক সিদ্ধ-পুরুষ হয় তাঁহার সহিতে ॥ ১৬৩ ॥

প্রভুর—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **सेइ**—वह; **अदभुत चरित्र**—अद्‌भुत लक्षण; **देखिया**—देखकर; **हिन्दु-चर**—हिन्दू जासूस (गुप्तचर); **कहे**—कहा; **सेइ**—वह; **यवन-पाश गिया**—मुस्लिम राजा के पास जाकर; **एक सन्न्यासी**—एक संन्यासी; **आइल**—आया है; **जगन्नाथ हइते**—जगन्नाथ पुरी से; **अनेक**—अनेक; **सिद्ध-पुरुष**—सिद्ध पुरुष; **हय**—हैं; **ताँहार सहिते**—उसके साथ।

अनुवाद

उस मुस्लिम जासूस ने श्री चैतन्य महाप्रभु के अद्‌भुत गुण देखे और उसने मुस्लिम गवर्नर के पास लौटने पर बतलाया, "एक संन्यासी अनेक सिद्ध पुरुषों के साथ जगन्नाथ पुरी से आया है।

নিরন্তর করে সবে কৃষ্ণ-সঙ্কীর্তন ।
সবে হাসে, নাচে, গায়, করয়ে ক্রন্দন ॥ ১৬৪ ॥

নিরন্তর করে সবে কৃষ্ণ-সঙ্কীর্তন ।
সবে হাসে, নাচে, গায়, করয়ে ক্রন্দন ॥ ১৬৪ ॥

निरन्तर—निरन्तर; **करे**—करते हैं; **सबे**—सभी; **कृष्ण-सङ्कीर्तन**—कृष्ण नाम का संकीर्तन; **सबे**—वे सब; **हासे**—हँसते हैं; **नाचे**—नाचते हैं; **गाय**—गाते हैं; **करये क्रन्दन**—और रोते हैं।

अनुवाद

"ये सारे सन्त महात्मा निरन्तर हरे कृष्ण महामन्त्र का कीर्तन करते हैं और सभी हँसते, नाचते, गाते तथा रोते हैं।

লক্ষ লক্ষ লোক আইসে তাহা দেখিবারে ।
তাঁরে দেখি' পুনরপি যাইতে নারে ঘরে ॥ ১৬৫ ॥

लक्ष लक्ष लोक आइसे ताहा देखिबारे ।
ताँरे देखि' पुनरपि याइते नारे घरे ॥ १६५ ॥

लक्ष लक्ष—लाखों; **लोक**—लोग; **आइसे**—आते हैं; **ताहा**—उन्हें; **देखिबारे**—देखने के लिए; **ताँरे देखि'**—उनको देखकर; **पुनरपि**—पुनः; **याइते**—जाने में; **नारे**—सक्षम नहीं हूँ; **घरे**—घर।

अनुवाद

"उन्हें देखने के लिए लाखों की संख्या में लोग आते हैं और एक बार देख लेने के बाद वे अपने घर वापस जाने का नाम नहीं लेते।

সেই সব লোক হয় বাউলের প্রায় ।
'কৃষ্ণ' কহি' নাচে, কান্দে, গড়াগড়ি যায় ॥ ১৬৬ ॥

सेइ सब लोक हय बाउलेर प्राय ।
'कृष्ण' कहि' नाचे, कान्दे, गड़ागड़ि याय ॥ १६६ ॥

सेइ सब लोक—वे सब लोग; **हय**—हैं; **बाउलेर प्राय**—पागल जैसे; **कृष्ण कहि'**—कृष्ण का पावन नाम जप करके; **नाचे**—वे नाचते हैं; **कान्दे**—रोते हैं; **गड़ागड़ि याय**—भूमि पर लोटते हैं।

अनुवाद

"ये सारे लोग पागल जैसे हो जाते हैं। वे केवल कृष्ण के पवित्र नाम का कीर्तन करते हैं तथा नाचते हैं। कभी-कभी वे रोते भी हैं और भूमि पर लोटते हैं।

কহিবার কথা নহে—দেখিলে সে জানি ।
তাঁহার প্রভাবে তাঁরে 'ঈশ্বর' করি' মানি' ॥ ১৬৭ ॥

कहिबार कथा नहे—देखिले से जानि ।
ताँहार प्रभावे ताँरे 'ईश्वर' करि' मानि' ॥ १६७ ॥

कहिबार कथा—ये बातें वर्णनीय; **नहे**—नहीं हैं; **देखिले**—यदि कोई देखे; **से जानि**—

वह समझ सकता है; **ताँहार प्रभावे**—उनके प्रभाव से; **ताँरे**—उनको; **ईश्वर करि'**—भगवान् का रूप; **मानि**—मैं स्वीकार करता हूँ।

अनुवाद

"वस्तुतः इन बातों का वर्णन भी नहीं किया जा सकता। केवल देखकर ही उन्हें समझा जा सकता है। उसके प्रभाव को देखकर मैं उन्हें भगवान् मानता हूँ।"

এত কহি' সেই চর 'হরি' 'কৃষ্ণ' গায় ।
হাসে, কান্দে, নাচে, গায় বাউলের প্রায় ॥ ১৬৮॥

এত কহি' সেই চর 'হরি' 'কৃষ্ণ' গায় ।
হাসে, কান্দে, নাচে, গায় বাউলের প্রায় ॥ ১৬৮॥

এত কহি'—यह कहकर; **सेइ चर**—वह सन्देशवाहक; **हरि**—हरि; **कृष्ण**—कृष्ण; **गाय**—गाने लगा; **हासे**—हँसने लगा; **कान्दे**—रोने लगा; **नाचे**—नाचने लगा; **गाय**—गाने लगा; **बाउलेर प्राय**—एक पागल की भाँति।

अनुवाद

यह कहने के बाद वह सन्देशवाहक हरि तथा कृष्ण के नाम का कीर्तन करने लगा। वह हँसने, रोने, नाचने तथा उन्मत्त की तरह गाने भी लगा।

এত শুনি' যবনের মন ফিরি' গেল ।
আপন-'বিশ্বাস' উড়িয়া স্থানে পাঠাইল ॥ ১৬৯॥

এত শুনি' য়বনের মন ফিরি' গেল ।
আপন-'বিশ্বাস' উড়িয়া স্থানে পাঠাইল ॥ ১৬৯॥

এত শুনি'—यह सुनने के बाद; **य़वनेर**—मुस्लिम गवर्नर का; **मन**—मन; **फिरि' गेल**—बदल गया; **आपन**—अपना; **विश्वास**—सचिव; **उड़िया**—उड़ीसा सरकार का प्रतिनिधि; **स्थाने**—स्थान पर; **पाठाइल**—भेजा।

अनुवाद

यह सुनकर मुस्लिम गवर्नर का मन फिर गया। तब उसने अपने निजी सचिव को उड़ीसा शासन के प्रतिनिधि के पास भेजा।

'विश्वास' आसिया प्रभुर चरण वन्दिल ।
'कृष्ण' 'कृष्ण' कहि' प्रेमे विह्वल हइल ॥१७०॥
'विश्वास' आसिया प्रभुर चरण वन्दिल ।
'कृष्ण' 'कृष्ण' कहि' प्रेमे विह्वल हइल ॥ १७० ॥

विश्वास—सचिव ने; **आसिया**—आकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **चरण**—चरणकमलों की; **वन्दिल**—पूजा की; **कृष्ण कृष्ण**—भगवान् का पावन नाम "कृष्ण, कृष्ण"; **कहि'**—कहकर; **प्रेमे**—प्रेमावेश में; **विह्वल**—विह्वल; **हइल**—हो गया।

अनुवाद

वह मुस्लिम सचिव श्री चैतन्य महाप्रभु को देखने आया। जब उसने महाप्रभु के चरणकमलों पर अपना सादर नमस्कार निवेदन किया और "कृष्ण, कृष्ण" के पवित्र नाम का उच्चारण किया, तो वह भी प्रेमभाव में विह्वल हो गया।

धैर्य हञा उड़िया़के कहे नमस्करि' ।
'तोमा-स्थाने पाठाइला म्लेच्छ अधिकारी ॥१७१॥
धैर्य्य हञा उड़ियाके कहे नमस्करि' ।
'तोमा-स्थाने पाठाइला म्लेच्छ अधिकारी ॥ १७१ ॥

धैर्य्य हञा—शान्त होकर; **उड़ियाके**—उड़ीसा सरकार के प्रतिनिधि को; **कहे**—कहा; **नमस्करि'**—नमस्कार करके; **तोमा-स्थाने**—तुम्हारे स्थान को; **पाठाइला**—भेजा है; **म्लेच्छ**—मुस्लिम; **अधिकारी**—अधिकारी।

अनुवाद

शान्त होने पर मुस्लिम सचिव ने अभिवादन करने के बाद उड़ीसा सरकार के प्रतिनिधि को सूचित किया, "मुस्लिम गवर्नर ने मुझे यहाँ भेजा है।

तुमि यदि आज्ञा देह' एथाके आसिया ।
यवन अधिकारी याय प्रभुके मिलिया ॥१७२॥
तुमि यदि आज्ञा देह' एथाके आसिया ।
यवन अधिकारी याय प्रभुके मिलिया ॥ १७२ ॥

तुमि—तुम; **यदि**—यदि; **आज्ञा**—आज्ञा; **देह'**—दो; **एथाके**—यहाँ; **आसिया**—आकर; **यवन अधिकारी**—मुस्लिम अधिकारी (गवर्नर); **याय**—चला जायेगा; **प्रभुके**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **मिलिया**—मिलने के बाद।

अनुवाद

"यदि आप सहमत हों, तो मुस्लिम गवर्नर श्री चैतन्य महाप्रभु से मिलने यहाँ पर आयें और फिर लौट जाएँ।

বহুত উৎকণ্ঠা তাঁর, কর্যাছে বিনয় ।
তোমা-সনে এই সন্ধি, নাহি যুদ্ধ-ভয়' ॥ ১৭৩ ॥

बहुत उत्कण्ठा ताँर, कर्याछे विनय ।
तोमा-सने एइ सन्धि, नाहि युद्ध-भय' ॥ १७३ ॥

बहुत—बहुत; **उत्कण्ठा**—उत्सुक; **ताँर**—उनको; **कर्याछे**—बना दिया है; **विनय**—निवेदन पत्र; **तोमा-सने**—आपके साथ; **एइ**—यह; **सन्धि**—सन्धि प्रस्ताव; **नाहि**—नहीं है; **युद्ध-भय**—युद्ध का भय।

अनुवाद

"मुस्लिम गवर्नर अत्यन्त उत्सुक हैं और उन्होंने आदरपूर्वक निवेदन किया है। यह शान्ति का प्रस्ताव है। आप डरें नहीं कि हम युद्ध करेंगे।"

শুনি' মহা-পাত্র কহে হঞা বিস্ময় ।
'মদ্যপ যবনের চিত্ত ঐছে কে করয়! ॥ ১৭৪ ॥

शुनि' महा-पात्र कहे हञा विस्मय ।
'मद्यप यवनेर चित्त ऐछे के करय! ॥ १७४ ॥

शुनि'—सुनकर; **महा-पात्र**—उड़ीसा सरकार के प्रतिनिधि ने; **कहे**—कहा; **हञा विस्मय**—चकित होकर; **मद्यप**—शराबी; **यवनेर**—मुस्लिम; **चित्त**—हृदय; **ऐछे**—इस प्रकार; **के करय**—किसने बनाया है।

अनुवाद

यह प्रस्ताव सुनकर उड़ीसा सरकार का प्रतिनिधि महापात्र अत्यन्त विस्मित हुआ। उसने सोचा, "यह मुस्लिम गवर्नर तो शराबी है। उसके मन को किसने बदल दिया है?

আপনে মহাপ্রভু তাঁর মন ফিরাইল ।
দর্শন-স্মরণে যাঁর জগত্তারিল' ॥ ১৭৫ ॥

आपने महाप्रभु ताँर मन फिराइल ।
दर्शन-स्मरणे याँर जगत्तारिल' ॥ १७५ ॥

आपने—स्वयं; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँर**—उसका; **मन**—मन; **फिराइल**—बदल दिया; **दर्शन**—दर्शन से; **स्मरणे**—स्मरण से; **याँर**—जिनके; **जगत्**—सारे जगत् का; **तारिल**—उन्होंने उद्धार किया है।

अनुवाद

"अवश्य ही स्वयं श्री चैतन्य महाप्रभु ने इस मुसलमान के मन को बदला होगा। उनकी उपस्थिति एवं उनके स्मरण मात्र से सारे संसार का उद्धार हो जाता है।"

तात्पर्य

इससे समझ में आ जाता है कि चूँकि मुस्लिम गवर्नर शराबी (*मद्यप*) था, अत: सामान्य रूप से उसके मन के बदलने की सम्भावना नहीं थी, किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु किसी के भी मन को कृष्णभावनामृत की ओर मोड़ सकते हैं। कोई भी मनुष्य श्री चैतन्य महाप्रभु के पवित्र नाम के स्मरण-मात्र से या उनका दर्शन करने से इस भवसागर से पार हो सकता है। इस कृष्णभावनामृत आन्दोलन को सारे विश्व में प्रसारित किया जा रहा है, किन्तु यदि महाप्रभु की कृपा न रहे, तो एक भी शराबी *यवन* या *मलेच्छ* बदलकर कृष्णभावनामृत को स्वीकार न करे। प्राय: लोग हजारों विदेशी लोगों को वैष्णव बनते देखकर हैरान रह जाते हैं। सामान्यत: विदेशी लोग मांसाहार, मद्यपान, द्यूत क्रीड़ा तथा अवैध यौनाचार में आसक्त होते हैं, अतएव उनके द्वारा कृष्णभावनामृत ग्रहण करना सचमुच हैरान करने वाली बात है। विशेष करके भारत में तो इस बात पर बड़ी हैरानी होती है। किन्तु यहाँ पर इसका उत्तर दिया हुआ है—*दर्शन-स्मरणे याँर जगत तारिल।* यह परिवर्तन श्री चैतन्य महाप्रभु के स्मरण मात्र से सम्भव है। विदेशी भक्त बड़ी ही निष्ठा से श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनके संगियों के नाम का कीर्तन करते हैं—*श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानन्द श्रीअद्वैत गदाधर श्रीवासादिगौरभक्तवृन्द।* श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनके संगियों की कृपा से लोग

निर्मल (पवित्र) बन रहे हैं और उनकी चेतना माया से मुड़कर कृष्ण की ओर उन्मुख हो रही है।

विश्वास शब्द सचिव का सूचक है। यह उपाधि सामान्यतया हिन्दू जाति के कायस्थों में पाई जाती है। आज भी बंगाल के कायस्थ इस विश्वास उपाधि का प्रयोग करते हैं। *विश्वासी* वह व्यक्ति है, जिस पर विश्वास किया जा सके। श्रील भक्तिविनोद ठाकुर का कहना है कि बंगाल में मुस्लिम शासन के समय *विश्वासखाना* नामक सचिवालय था। विश्वासखाना कार्यालय में केवल अत्यन्त विश्वसनीय लोगों को नियुक्त किया जाता था। उन्हें कायस्थ जाति से चुना जाता था। यह जाति आज भी व्यापार कार्य तथा सरकारी कामकाज के प्रबन्ध में दक्ष है। *विश्वासखाना* या सचिवालय सामान्यतया अत्यन्त विश्वसनीय एवं आज्ञाकारी सेवक है। जब भी कोई विश्वसनीय सेवा की आवश्यकता पड़ती थी, तब इन अधिकारियों को नियुक्त किया जाता था।

এত বলি' বিশ্বাসেরে কহিল বচন ।
''ভাগ্য তাঁর—আসি' করুক প্রভু দরশন ॥ ১৭৬॥

এত বলি' বিশ্বাসেরে কহিল বচন ।
"ভাগ্য তাঁর—আসি' করুক প্রভু দরশন ॥ ১৭৬॥

এত বলি'—यह कहकर; **বিশ্বাসেরে**—मुस्लिम गवर्नर के सेक्रेटरी को; **কহিল বচন**—ये शब्द कहे; **ভাগ্য**—सौभाग्य; **তাঁর**—उसका; **আসি'**—आकर; **করুক**—उसे करने दो; **প্রভু দরশন**—श्री चैतन्य महाप्रभु के दर्शन।

अनुवाद

यह सोचकर महापात्र ने मुस्लिम सचिव को तुरन्त बतलाया, "यह तो तुम्हारे गवर्नर का बड़ा भाग्य है। उससे कहो कि वे आकर चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करें।

প্রতীত করিয়ে—যদি নিরস্ত্র হঞা ।
আসিবেক পাঁচ-সাত ভৃত্য সঙ্গে লঞা?'' ॥ ১৭৭॥

প্রতীত করিয়ে—যদি নিরস্ত্র হঞা ।
আসিবেক পাঁচ-সাত ভৃত্য সঙ্গে লঞা?" ॥ ১৭৭॥

प्रतीत—समझा दो; **करिये**—मैं करूँगा; **यदि**—यदि; **निरस्त्र हञा**—अस्त्र-शस्त्र के बिना; **आसिबेक**—वह आये; **पाँच-सात**—पाँच से सात; **भृत्य**—सेवक; **सङ्गे**—के साथ; **लञा**—लेकर।

अनुवाद

"किन्तु मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि उन्हें यहाँ बिना हथियार के आना चाहिए। हाँ, वे अपने साथ पाँच-सात सेवक ला सकते हैं।"

'विश्वास' याञा ताँहारे सकल कहिल ।
हिन्दु-वेश धरि' सेइ यवन आइल ॥ १७८॥

'विश्वास' याञा ताँहारे सकल कहिल ।
हिन्दु-वेश धरि' सेइ यवन आइल ॥ १७८ ॥

विश्वास—सेक्रेटरी ने; **याञा**—लौटकर; **ताँहारे**—मुस्लिम गवर्नर को; **सकल कहिल**—सब कुछ बता दिया; **हिन्दु-वेश धरि'**—हिन्दू वेश धारण करके; **सेइ यवन**—वह मुस्लिम गवर्नर; **आइल**—आया।

अनुवाद

वह सचिव लौटकर मुस्लिम गवर्नर के पास गया और उसे यह समाचार दिया। तब वह मुस्लिम गवर्नर हिन्दू-वेश धारण करके श्री चैतन्य महाप्रभु को देखने आया।

दूर हैते प्रभु देखि' भूमेते पड़िया ।
दण्डवत्करे अश्रु-पुलकित हञा ॥ १७९॥

दूर हैते प्रभु देखि' भूमेते पड़िया ।
दण्डवत्करे अश्रु-पुलकित हञा ॥ १७९ ॥

दूर हैते—दूर से; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **देखि'**—देखकर; **भूमेते पड़िया**—भूमि पर गिरकर; **दण्डवत् करे**—दण्डवत् प्रणाम किया; **अश्रु**—अश्रु; **पुलकित**—पुलकित; **हञा**—होकर।

अनुवाद

दूर से ही श्री चैतन्य महाप्रभु को देखकर मुस्लिम गवर्नर ने भूमि पर

गिरकर नमस्कार किया। उसकी आँखों में आँसू आ गये और भावाविष्ट होने के कारण वह पुलकित हो उठा।

মহা-পাত্র আনিল তাঁরে করিয়া সম্মান ।
যোড়-হাতে প্রভু-আগে লয় কৃষ্ণ-নাম ॥ ১৮০॥

महा-पात्र आनिल ताँरे करिया सम्मान ।
य़ोड़-हाते प्रभु-आगे लय कृष्ण-नाम ॥ १८० ॥

महा-पात्र—उड़ीसा सरकार का प्रतिनिधि; **आनिल**—लाया; **ताँरे**—उसको; **करिया सम्मान**—सम्मान सहित; **य़ोड़-हाते**—हाथ जोड़कर; **प्रभु-आगे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के समक्ष; **लय कृष्ण-नाम**—कृष्ण का पावन नाम का जपने लगा।

अनुवाद

इस तरह महापात्र मुस्लिम गवर्नर को आदरपूर्वक श्री चैतन्य महाप्रभु के समक्ष ले गया। तब वह गवर्नर हाथ जोड़कर महाप्रभु के समक्ष खड़ा हो गया और कृष्ण के पवित्र नाम का कीर्तन करने लगा।

"অধম যবন-কুলে কেন জন্ম হৈল ।
বিধি মোরে হিন্দু-কুলে কেন না জন্মাইল ॥ ১৮১॥

"अधम य़वन-कुले केन जन्म हैल ।
विधि मोरे हिन्दु-कुले केन ना जन्माइल ॥ १८१ ॥

अधम—अधम; **य़वन-कुले**—मुस्लिम वंश में; **केन**—क्यों; **जन्म हैल**—जन्म दिया; **विधि**—विधाता ने; **मोरे**—मुझे; **हिन्दु-कुले**—हिन्दू कुल में; **केन**—क्यों; **ना**—नहीं; **जन्माइल**—उत्पन्न किया।

अनुवाद

तब गवर्नर ने विनीत भाव से पूछा, "मेरा जन्म मुस्लिम परिवार में क्यों हुआ? यह अधम जन्म माना जाता है। विधाता ने मुझे हिन्दू परिवार में क्यों नहीं जन्म लेने दिया?

'হিন্দু' হৈলে পাইতাম তোমার চরণ-সন্নিধান ।
ব্যর্থ মোর এই দেহ, যাউক পরাণ" ॥ ১৮২॥

'हिन्दु' हैले पाइताम तोमार चरण-सन्निधान ।
व्यर्थ मोर एइ देह, ग्राउक पराण" ॥ १८२ ॥

हिन्दु हैले—यदि मैं हिन्दू कुल में जन्मा होता; **पाइताम**—मुझे मिलती; **तोमार**—आपके; **चरण**—चरणकमलों की; **सन्निधान**—निकटता; **व्यर्थ**—बेकार; **मोर**—मेरा; **एइ**—यह; **देह**—शरीर; **ग्राउक पराण**—मैं शीघ्र मर जाऊँ।

अनुवाद

"यदि मेरा जन्म हिन्दू परिवार में हुआ होता, तो मेरे लिए आपके चरणकमलों के निकट रहना आसान हुआ होता। चूँकि अब मेरा शरीर व्यर्थ है, अतएव मुझे तुरन्त मर जाना चाहिए।"

এত শুনি' মহা-পাত্র আবিষ্ট হঞা ।
প্রভুকে করেন স্তুতি চরণে ধরিয়া ॥ ১৮৩ ॥

एत शुनि' महा-पात्र आविष्ट हञा ।
प्रभुके करेन स्तुति चरणे धरिया ॥ १८३ ॥

एत शुनि'—यह सुनकर; **महा-पात्र**—उड़ीसा सरकार के प्रतिनिधि ने; **आविष्ट हञा**—विह्वल होकर; **प्रभुके**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **करेन**—की; **स्तुति**—स्तुति; **चरणे धरिया**—उनके चरण पकड़कर।

अनुवाद

गवर्नर की विनीत बात सुनकर महापात्र को हर्षातिरेक हो आया। उसने श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमल पकड़ लिए और निम्नलिखित स्तुति करनी प्रारम्भ की।

'চণ্ডাল——পবিত্র যাঁর শ্রী-নাম-শ্রবণে ।
হেন-তোমার এই জীব পাইল দরশনে ॥ ১৮৪ ॥

'चण्डाल——पवित्र ग्राँर श्री-नाम-श्रवणे ।
हेन-तोमार एइ जीव पाइल दरशने ॥ १८४ ॥

चण्डाल—चण्डाल, मनुष्यों में नीच; **पवित्र**—पवित्र; **ग्राँर**—जिसका; **श्री-नाम-श्रवणे**—पावन नाम सुनने से; **हेन-तोमार**—आप जैसे का; **एइ जीव**—इस बद्धात्मा ने; **पाइल**—पा लिया है; **दरशने**—दर्शन।

अनुवाद

"आपका पवित्र नाम सुनने मात्र से अधम चण्डाल भी पवित्र हो जाता है। इस बद्धजीव को आपका दर्शन अब जाकर मिला है।

ইঁহার যে এই গতি, ইথে কি বিস্ময়? ।
তোমার দর্শন-প্রভাব এই-মত হয়' ॥ ১৮৫ ॥

इँहार ग्रे एइ गति, इथे कि विस्मय? ।
तोमार दर्शन-प्रभाव एइ-मत हय' ॥ १८५ ॥

इँहार—इस मुस्लिम गवर्नर की; ग्रे—जो; **एइ**—यह; **गति**—गति; **इथे**—इसमें; **कि**—क्या; **विस्मय**—विस्मय; **तोमार**—आपके; **दर्शन-प्रभाव**—दर्शन का प्रभाव; **एइ-मत हय**—ही ऐसा है।

अनुवाद

"इसमें आश्चर्य की क्या बात यदि इस मुस्लिम गवर्नर को ऐसी गति प्राप्त हुई। आपके दर्शन मात्र से यह सब सम्भव है।

যন্নামধেয়-শ্রবণানুকীর্তনাদ্
যৎপ্রহ্বণাদ্ যৎস্মরণাদপি ক্বচিৎ ।
শ্বাদোঽপি সদ্যঃ সবনায় কল্পতে
কুতঃ পুনস্তে ভগবন্নু দর্শনাৎ ॥ ১৮৬ ॥

ग्रन्नामधेय-श्रवणानुकीर्तनाद्
ग्रत्प्रह्वणाद् ग्रत्स्मरणादपि क्वचित् ।
श्वादोऽपि सद्यः सवनाय कल्पते
कुतः पुनस्ते भगवन्नु दर्शनात् ॥ १८६ ॥

ग्रत्—जिनके; **नामधेय**—नाम का; **श्रवण**—श्रवण करने से; **अनुकीर्तनात्**—और तत्पश्चात् जपने से; **ग्रत्**—जिनको; **प्रह्वणात्**—सम्मान करने से; **ग्रत्**—जिनके; **स्मरणात्**—मात्र स्मरण से; **अपि**—भी; **क्वचित्**—कभी-कभी; **श्व-अदः**—कुत्ता खाने वाला (चण्डाल); **अपि**—भी; **सद्यः**—तत्क्षण; **सवनाय**—वैदिक यज्ञ करने के; **कल्पते**—योग्य हो जाता है; **कुतः**—क्या कहना; **पुनः**—दोबारा; **ते**—आपका; **भगवन्**—हे भगवन्; **नु**—अवश्य; **दर्शनात्**—दर्शन करने से।

अनुवाद

"'उन व्यक्तियों की आध्यात्मिक उन्नति के बारे में तो कुछ कहना ही नहीं, जो भगवान् का प्रत्यक्ष साक्षात्कार करते हैं। यदि चण्डाल-परिवार में उत्पन्न व्यक्ति भी एक बार भगवान् के पवित्र नाम का उच्चारण करता है, या उनका कीर्तन करता है, उनकी लीलाओं का श्रवण करता है, उन्हें नमस्कार करता है या उनका स्मरण भी करता है, तो वह तुरन्त वैदिक यज्ञ करने का अधिकारी बन जाता है।'"

तात्पर्य

यह उद्धरण *श्रीमद्भागवत* (३.३३.६) का है। इस श्लोक के अनुसार मनुष्य चाहे जिस पद पर हो, इसका कोई महत्त्व नहीं है। कोई अधम से अधम अर्थात् चण्डाल हो सकता है, किन्तु यदि वह भगवान् के पवित्र नाम का कीर्तन और श्रवण करता है, तो वह वैदिक यज्ञ करने का अधिकारी बन जाता है। इस कलियुग के लिए यह विशेष रूप से सही है।

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा॥

(*बृहन्नारदीय पुराण* ३८.१२६)

"कलह और दिखावे के इस युग में मुक्ति पाने का केवल एक ही साधन है और वह है भगवान् के पवित्र नाम का स्मरण। इस के अतिरिक्त अन्य कोई साधन नहीं है, अन्य कोई साधन नहीं है, अन्य कोई साधन नहीं है।" ब्राह्मण-कुल में जन्म लेने वाला व्यक्ति तब तक यज्ञ नहीं कर सकता, जब तक वह ठीक से शुद्ध नहीं हो जाता और उसका यज्ञोपवीत नहीं हो जाता। किन्तु *श्रीचैतन्य चरितामृत* के (*श्रीमद्भागवत* से उद्धृत किये गये) इस श्लोक के अनुसार, निम्नतम व्यक्ति भी यदि भगवान् के पवित्र नाम का निष्ठापूर्वक कीर्तन और श्रवण करता है, तो वह तुरन्त यज्ञ करने का अधिकारी बन जाता है। कभी-कभी ईर्ष्यालु लोग पूछते हैं कि इस कृष्णभावनामृत आन्दोलन के अमरीकी तथा यूरोपियन सदस्य किस तरह ब्राह्मण बन सकते हैं और यज्ञ कर सकते हैं? वे यह नहीं जानते कि ये यूरोपियन तथा अमरीकी पवित्र भगवन्नाम का—हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण, हरे हरे / हरे राम, हरे राम, राम राम, हरे हरे—

का कीर्तन करने के कारण पहले से ही शुद्ध हो चुके हैं। यही प्रमाण है। *श्वादो 'ऽपि सद्यः सवनाय कल्पते।* भले ही कोई चण्डाल परिवार में क्यों न जन्मा हो, किन्तु महामन्त्र का कीर्तन करने के कारण वह यज्ञ कर सकता है।

जो लोग पाश्चात्य वैष्णवों में दोष निकालते हैं, उन्हें *श्रीमद्भागवत* के इस श्लोक को तथा इस श्लोक पर श्रील जीव गोस्वामी की टीका देखनी चाहिए। इस के सम्बन्ध में श्रील जीव गोस्वामी ने कहा है कि ब्राह्मण बनने के लिए संस्कार की प्रतीक्षा करनी होती है और यज्ञोपवीत करना होता है। किन्तु पवित्र नाम का कीर्तन करने वाले व्यक्ति को यज्ञोपवीत की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं होती। भक्तों को हम तब तक यज्ञ करने की अनुमति नहीं देते, जब तक उनका यज्ञोपवीत संस्कार नहीं हो जाता। किन्तु इस श्लोक के अनुसार निरपराध भाव से पवित्र नाम का जप करने वाला व्यक्ति अग्नि-यज्ञ कर सकता है, भले ही यज्ञोपवीत संस्कार द्वारा वह द्विज न बन पाया हो। जब भगवान् कपिलदेव अपनी माता देवहूति को शुद्ध सांख्य दर्शन का उपदेश दे रहे थे, तब देवहूति ने यही निर्णय दिया था।

तबे महाप्रभु ताँरे कृपा-दृष्टि करि' ।
आश्वासिया कहे,—तुमि कह 'कृष्ण' 'हरि' ॥ १८७॥

तबे महाप्रभु ताँरे कृपा-दृष्टि करि' ।
आश्वासिया कहे,—तुमि कह 'कृष्ण' 'हरि' ॥ १८७॥

तबे—तत्पश्चात्; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँरे**—उस पर; **कृपा-दृष्टि करि'**—कृपा दृष्टि करके; **आश्वासिया**—आश्वासन देकर; **कहे**—कहा; **तुमि**—तुम; **कह**—कहो; **कृष्ण**—"कृष्ण" का पावन नाम; **हरि**—पावन नाम "हरि।"

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने उस मुस्लिम गवर्नर पर अपनी कृपादृष्टि डाली। उसे आश्वासन देते हुए उन्होंने उससे "कृष्ण" तथा "हरि" के पवित्र नामों का कीर्तन करने के लिए कहा।

तात्पर्य

यह तो श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा है कि वे चण्डालों, म्लेच्छों तथा यवनों

तक को भगवान् के पवित्र नाम कीर्तन करने का उपदेश देते हैं। दूसरे शब्दों में, जो "कृष्ण" तथा "हरि" के पवित्र नामों के कीर्तन को अंगीकार कर लेता है, उसे पहले ही श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा मिल चुकी होती है। अब इस कृष्णभावनामृत आन्दोलन के माध्यम से कृष्ण के पवित्र नाम का कीर्तन करने का महाप्रभु का अनुरोध विश्वभर के सभी लोगों की पहुँच तक आ रहा है। जो भी महाप्रभु के उपदेशों पर चलता है, वह निश्चित रूप से शुद्ध हो जायेगा। जो निरपराध होकर पवित्र भगवन्नाम का जप करता है, वह पहले से ही ब्राह्मण से श्रेष्ठ है। दुर्भाग्यवश भारत में ऐसे अनेक मूर्ख तथा धूर्त हैं, जो पाश्चात्य वैष्णवों को कुछ मन्दिरों में घुसने नहीं देते। ऐसे धूर्त वेदों को ठीक से नहीं समझते। जैसाकि पहले कहा जा चुका है—*यन्नामधेय श्रवणानुकीर्तनाद्... सवनाय कल्पते।*

सेइ कहे,—'मोरे यदि कैला अङ्गीकार ।
एक आज्ञा देह,—सेवा करि ये तोमार ॥ १८८॥

सेइ कहे,—'मोरे यदि कैला अङ्गीकार ।
एक आज्ञा देह,—सेवा करि ये तोमार ॥ १८८॥

सेइ कहे—मुस्लिम गवर्नर ने कहा; **मोरे**—मुझे; **यदि**—यदि; **कैला अङ्गीकार**—आपने स्वीकार कर लिया है; **एक आज्ञा**—एक आज्ञा; **देह**—दो; **सेवा**—सेवा; **करि**—मैं करूँ; **ये**—ताकि; **तोमार**—आपकी।

अनुवाद

तब मुस्लिम गवर्नर ने कहा, "चूँकि आपने मुझे कृपा करके अपनाया है, अतः आप कृपया कोई आदेश दें, जिससे मैं आपकी सेवा कर सकूँ।"

तात्पर्य

यदि कोई व्यक्ति श्री चैतन्य महाप्रभु के आदेशों का पालन करके—अर्थात् कृष्ण के पवित्र नाम के कीर्तन द्वारा अपने आपको शुद्ध बना लेता है, तो वह भगवान् की सेवा करने के लिए उत्सुक होगा ही। यही परीक्षा है। जब मनुष्य उत्साहपूर्वक भगवान् की सेवा में लग जाता है, तो समझिये कि वह कृष्ण तथा हरि के नाम-कीर्तन के फल का लाभ उठा रहा है।

গো-ব্রাহ্মণ-বৈষ্ণবে হিংসা কর্যাছি অপার ।
সেই পাপ হইতে মোর হউক নিস্তার ॥ ১৮৯॥

গো-ব্রাহ্মণ-বৈষ্ণবে হিংসা কর্য়াছি অপার ।
সেই পাপ হইতে মোর হউক নিস্তার ॥ ১৮৯॥

गो-ब्राह्मण-वैष्णवे—गायों, ब्राह्मणों और वैष्णवों के प्रति; **हिंसा**—हिंसा तथा ईर्ष्या; **कर्य़ाछि**—मैंने की है; **अपार**—असीम; **सेइ पाप हइते**—उन पापफलों से; **मोर**—मेरा; **हउक**—हो जाए; **निस्तार**—उद्धार।

अनुवाद

तब उस मुस्लिम गर्वनर ने उन असंख्य पापकर्मों के फलों से अपनी मुक्ति के लिए प्रार्थना की, जिसे उसने इसके पूर्व ब्राह्मणों तथा वैष्णवों के प्रति ईर्ष्यालु रहकर तथा गौवों की हत्या करके अर्जित किया था।

तात्पर्य

हरि तथा कृष्ण के पवित्र नामों का कीर्तन करने से मनुष्य पापकृत्यों से—यथा गोवध, ब्राह्मणों तथा वैष्णवों के अपमान आदि से मुक्त हो जाता है। गौवों का वध करना और ब्राह्मणों तथा वैष्णवों का अपमान करना अत्यन्त पापमय है। ऐसे पाप-कृत्यों से संचित होने वाले दुष्कर्म बहुत बड़े होते हैं, किन्तु कृष्ण की शरण में जाने से और उनके पवित्र नाम का कीर्तन करने से यह सारा कर्म तुरन्त निरस्त हो जाता है। अपने पापकर्मों के फल (कर्म) से छूटने पर मनुष्य भगवान् की सेवा करने के लिए उत्सुक बनता है। यही परीक्षा है। चूँकि मुस्लिम गवर्नर श्री चैतन्य महाप्रभु की उपस्थिति से तुरन्त शुद्ध हो गया था, अतएव वह कृष्ण तथा हरि के नामों का उच्चारण कर सका। इसीलिए वह कुछ सेवा करना चाह रहा था और महाप्रभु उसकी इच्छाएँ पूर्ण करना चाहते थे। फलतः उन्होंने तुरन्त अपने भक्त मुकुन्द दत्त से कहलवाया कि हाँ, करने योग्य कुछ सेवा-कार्य है।

তবে মুকুন্দ দত্ত কহে,—'শুন, মহাশয় ।
গঙ্গা-তীর যাইতে মহাপ্রভুর মন হয় ॥ ১৯০॥

তবে মুকুন্দ দত্ত কহে,—'শুন, মহাশয় ।
গঙ্গা-তীর য়াইতে মহাপ্রভুর মন হয় ॥ ১৯০॥

तबे—तत्पश्चात्; **मुकुन्द दत्त कहे**—मुकुन्द दत्त (श्री चैतन्य महाप्रभु के एक भक्त) ने कहा; **शुन महाशय**—सुनो महाशय; **गङ्गा-तीर याइते**—गंगा के तट जाने की; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **मन**—इच्छा; **हय**—है।

अनुवाद

तब मुकुन्द दत्त ने मुस्लिम गवर्नर से कहा, "हे महोदय, कृपया सुनें। श्री चैतन्य महाप्रभु गंगा नदी के तट तक जाना चाहते हैं।

তাহাঁ যাইতে কর তুমি সহায়-প্রকার ।
এই বড় আজ্ঞা, এই বড় উপকার' ॥ ১৯১ ॥

তাহাঁ যাইতে কর তুমি সহায়-প্রকার ।
এই বড় আজ্ঞা, এই বড় উপকার' ॥ ১৯১ ॥

তাহাঁ যাইতে—वहाँ जाने के लिए; **কর**—करो; **তুমি**—तुम; **সহায়-প্রকার**—सभी प्रकार की सहायता; **এই বড় আজ্ঞা**—यह एक बड़ी आज्ञा है; **এই বড় উপকার**—यह एक बड़ा उपकार है।

अनुवाद

"आप उनकी सहायता करें, जिससे वे वहाँ जा सकें। आपके लिए यही पहला बड़ा आदेश है और यदि आप इसे पूरा कर दें, तो आप द्वारा यह महान् सेवा होगी।"

তবে সেই মহাপ্রভুর চরণ বন্দিয়া ।
সবার চরণ বন্দি' চলে হৃষ্ট হঞা ॥ ১৯২ ॥

তবে সেই মহাপ্রভুর চরণ বন্দিয়া ।
সবার চরণ বন্দি' চলে হৃষ্ট হঞা ॥ ১৯২ ॥

তবে—तत्पश्चात्; **সেই**—गवर्नर ने; **মহাপ্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **চরণ বন্দিয়া**—चरणकमलों की वंदना की; **সবার চরণ বন্দি'**—अन्य सब भक्तों के चरणकमलों पर सम्मान दर्शाया; **চলে**—चला गया; **হৃষ্ট হঞা**—अत्यन्त प्रसन्न होकर।

अनुवाद

इसके बाद मुस्लिम गवर्नर ने श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ ही साथ

उनके सारे भक्तों के चरणकमलों की वन्दना की और फिर चला गया। वह अत्यधिक सन्तुष्ट था।

महा-पात्र তাঁর সনে কৈল কোলাকুলি ।
অনেক সামগ্রী দিয়া করিল মিতালি ॥ ১৯৩ ॥

महा-पात्र ताँर सने कैल कोलाकुलि ।
अनेक सामग्री दिया करिल मितालि ॥ १९३ ॥

महा-पात्र—उड़ीसा के प्रतिनिधि ने; **ताँर सने**—उसके साथ; **कैल**—किया; **कोलाकुलि**—आलिंगन; **अनेक**—अनेक; **सामग्री**—पदार्थ; **दिया**—भेंट के रूप में दिये; **करिल मितालि**—और मित्रता स्थापित की।

अनुवाद

गवर्नर के विदा होने के पूर्व महापात्र ने उसका आलिगंन किया और उसे अनेक वस्तुएँ भेंट में दीं। इस तरह उसने उसके साथ मित्रता स्थापित कर ली।

প্রাতঃ-কালে সেই বহু নৌকা সাজাঞা ।
প্রভুকে আনিতে দিল বিশ্বাস পাঠাঞা ॥ ১৯৪ ॥

प्रातः-काले सेइ बहु नौका साजाञा ।
प्रभुके आनिते दिल विश्वास पाठाञा ॥ १९४ ॥

प्रातः-काले—प्रातः काल; **सेइ**—गवर्नर ने; **बहु**—बहुत; **नौका**—नौकाएँ; **साजाञा**—सजाकर; **प्रभुके**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **आनिते**—लाने के लिए; **दिल**—दीं; **विश्वास**—सेक्रेटरी को; **पाठाञा**—भेजकर।

अनुवाद

अगले दिन प्रातःकाल उस गवर्नर ने अपने सचिव को अनेक अच्छी तरह सजी हुई नावों के साथ महाप्रभु को नदी के उस पार ले जाने के लिए भेजा।

মহা-পাত্র চলি' আইলা মহাপ্রভুর সনে ।
ম্লেচ্ছ আসি' কৈল প্রভুর চরণ বন্দনে ॥ ১৯৫ ॥

महा-पात्र चलि' आइला महाप्रभुर सने ।
म्लेच्छ आसि' कैल प्रभुर चरण वन्दने ॥ १९५॥

महा-पात्र—उड़ीसा सरकार का प्रतिनिधि; **चलि'**—चलकर; **आइला**—गया; **महाप्रभुर सने**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **म्लेच्छ**—दूसरे तट के गवर्नर ने; **आसि'**—आकर; **कैल**—की; **प्रभुर चरण वन्दने**—महाप्रभु के चरणकमलों की वंदना।

अनुवाद

महापात्र ने श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ नदी पार की और जब वे दूसरे किनारे पर पहुँच गये तो मुस्लिम गवर्नर ने स्वयं महाप्रभु की अगवानी की और उनके चरणकमलों की पूजा की।

एक नवीन नौका, तार मध्ये घर ।
स्व-गणे चड़ाइला प्रभु ताहार उपर ॥१९६॥

एक नवीन नौका, तार मध्ये घर ।
स्व-गणे चड़ाइला प्रभु ताहार उपर ॥ १९६॥

एक—एक; **नवीन**—नई; **नौका**—नौका; **तार**—जिसके; **मध्ये**—मध्य में; **घर**—एक कमरा था; **स्व-गणे**—अपने साथियों के साथ; **चड़ाइला**—चढ़ाया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताहार उपर**—उस पर।

अनुवाद

नावों में से एक नाव नई बनवाइ हुई थी, जिसके बीच एक कमरा बना था। उन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनके संगियों को उसी नाव में बैठा दिया।

महा-पात्रे महाप्रभु करिला विदाय ।
कान्दिते कान्दिते सेइ तीरे रहि' चाय ॥१९७॥

महा-पात्रे महाप्रभु करिला विदाय ।
कान्दिते कान्दिते सेइ तीरे रहि' चाय ॥ १९७॥

महा-पात्रे—महापात्र को; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **करिला विदाय**—विदा किया; **कान्दिते कान्दिते**—रोते रोते; **सेइ**—वह महापात्र; **तीरे**—तट पर; **रहि' चाय**—खड़ा रहा और देखता रहा।

अनुवाद

अन्त में श्री चैतन्य महाप्रभु ने महापात्र को भी विदा किया। महापात्र नदी के तट पर खड़े होकर नाव की ओर देख-देखकर रोने लगा।

जल-दस्यु-भये सेइ यवन चलिल ।
दश नौका भरि' बहु सैन्य सङ्गे निल ॥ १९८ ॥
जल-दस्यु-भये सेइ यवन चलिल ।
दश नौका भरि' बहु सैन्य सङ्गे निल ॥ १९८ ॥

जल-दस्यु-भये—डाकुओं के भय से; **सेइ**—वह; **यवन**—मुस्लिम गवर्नर; **चलिल**—साथ गया; **दश नौका भरि'**—दस नौकाएँ भरकर; **बहु**—बहुत; **सैन्य**—सिपाही; **सङ्गे**—अपने साथ; **निल**—ले लिये।

अनुवाद

तब स्वयं मुस्लिम गवर्नर श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ चल पड़ा। गवर्नर ने समुद्री डाकुओं के कारण साथ में दस नावें ले लीं, जिनमें अनेक सैनिक सवार थे।

'मन्त्रेश्वर'-दुष्ट-नदे पार कराइल ।
'पिछल्दा' पर्यन्त सेइ यवन आइल ॥ १९९ ॥
'मन्त्रेश्वर'-दुष्ट-नदे पार कराइल ।
'पिछल्दा' पर्य्यन्त सेइ यवन आइल ॥ १९९ ॥

मन्त्रेश्वर—मंत्रेश्वर नामक; **दुष्ट-नदे**—नदी के खतरनाक स्थल पर; **पार कराइल**—पार करने की व्यवस्था की; **पिछल्दा पर्य्यन्त**—पिछलदा नामक स्थान तक; **सेइ**—वह; **यवन**—मुस्लिम गवर्नर; **आइल**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ गया।

अनुवाद

मुस्लिम गवर्नर श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ मन्त्रेश्वर के आगे तक गया। यह स्थान डाकुओं के कारण अत्यन्त खतरनाक था। वह महाप्रभु को पिछल्दा नामक स्थान ले गया, जो मन्त्रेश्वर के निकट ही था।

तात्पर्य

आज के डायमण्ड बन्दरगाह के निकट गंगा का चौड़ा मुख मन्त्रेश्वर

कहलाता था। नाव गंगा नदी से होकर रूपनारायण नदी में प्रविष्ट हुई और पिछल्दा गाँव जा पहुँची। पिछल्दा तथा मन्त्रेश्वर काफी पास-पास स्थित हैं। मन्त्रेश्वर निकल जाने के बाद मुस्लिम गवर्नर महाप्रभु के साथ-साथ पिछल्दा तक गया।

তাঁরে বিদায় দিল প্রভু সেই গ্রাম হৈতে ।
সে-কালে তাঁর প্রেম-চেষ্টা না পারি বর্ণিতে ॥২০০॥

তাঁরে বিদায় দিল প্রভু সেই গ্রাম হৈতে ।
সে-কালে তাঁর প্রেম-চেষ্টা না পারি বর্ণিতে ॥ ২০০॥

তাঁরে—गवर्नर को; **विदाय दिल**—विदा किया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **सेइ ग्राम हैते**—पिछलदा नामक गाँव से; **से-काले**—उन समय; **ताँर**—उसकी; **प्रेम-चेष्टा**—प्रेमावेश में की गई गतिविधियाँ; **ना पारि**—मैं सक्षम नहीं हूँ; **वर्णिते**—वर्णन करने में।

अनुवाद

अन्त में श्री चैतन्य महाप्रभु ने गवर्नर को भी विदा दी। गवर्नर द्वारा प्रदर्शित प्रेमभाव का वर्णन नहीं किया जा सकता है।

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु ने मुस्लिम गवर्नर को पिछल्दा से विदा दी। कृष्णदास कविराज गोस्वामी यहाँ बतलाते हैं कि श्री चैतन्य महाप्रभु के कारण बिछुड़ने से गवर्नर में प्रेमभाव के लक्षण प्रकट हो आये। इन लक्षणों का वर्णन कर पाना असम्भव है।

অলৌকিক লীলা করে শ্রী-কৃষ্ণ-চৈতন্য ।
যেই ইহা শুনে তাঁর জন্ম, দেহ ধন্য ॥২০১॥

অলৌকিক লীলা করে শ্রী-কৃষ্ণ-চৈতন্য ।
যেই ইহা শুনে তাঁর জন্ম, দেহ ধন্য ॥ ২০১॥

अलौकिक—असाधारण; **लीला**—लीलाएँ; **करे**—करते हैं; **श्री-कृष्ण-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **येइ**—जो कोई; **इहा**—इसे; **शुने**—सुनता है; **ताँर**—उसका; **जन्म**—जन्म; **देह**—देह; **धन्य**—धन्य हो जाता है।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ अलौकिक हैं। जो भी इन कार्यकलापों को सुनता है, वह धन्य हो जाता है और उसका जीवन पूर्ण हो जाता है।

सेइ नौका चड़ि' प्रभु आइला 'पानिहाटि' ।
नाविकेरे पराइल निज-कृपा-साटी ॥२०२॥

सेइ नौका चड़ि' प्रभु आइला 'पानिहाटि' ।
नाविकेरे पराइल निज-कृपा-साटी ॥ २०२॥

सेइ नौका चड़ि'—उसी नौका पर चढ़कर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आइला**—आये; **पानिहाटि**—पानिहाटि नामक स्थान पर; **नाविकेरे**—नौका के कप्तान; **पराइल**—उन्होंने पहनाये; **निज-कृपा-साटी**—विशेष कृपा के तौर पर उनके पहने हुए निजी वस्त्र।

अनुवाद

महाप्रभु अन्ततः पानिहाटि पहुँचे और उन्होंने नाव चलाने वाले को कृपा-कृत्य के रूप में अपना वस्त्र दे दिया।

'प्रभु आइला' बलि' लोके हैल कोलाहल ।
मनुष्य भरिल सब, किबा जल, स्थल ॥२०३॥

'प्रभु आइला' बलि' लोके हैल कोलाहल ।
मनुष्य भरिल सब, किबा जल, स्थल ॥ २०३॥

प्रभु आइला—महाप्रभु आ पहुँचे हैं; **बलि'**—यह कहकर; **लोके**—निवासियों में; **हैल**—वहाँ होने लगी; **कोलाहल**—अत्यन्त हलचल; **मनुष्य**—सभी प्रकार के व्यक्ति; **भरिल**—भर गये; **सब**—सब; **किबा जल**—जल पर; **स्थल**—अथवा स्थल पर।

अनुवाद

पानिहाटि गंगा-तट पर आया हुआ था। श्री चैतन्य महाप्रभु के आगमन का समाचार सुनकर सभी तरह के लोग स्थल पर तथा जल में एकत्र हो गये।

तात्पर्य

पानिहाटि गाँव गंगा के तट पर खड़दह के पास है।

রাঘব-পণ্ডিত আসি' প্রভু লঞা গেলা ।
পথে যাইতে লোক-ভিড়ে কষ্টে-সৃষ্ট্যে আইলা ॥২০৪॥

राघव-पण्डित आसि' प्रभु लञा गेला ।
पथे याइते लोक-भिड़े कष्टे-सृष्ट्ये आइला ॥ २०४॥

राघव-पण्डित—राघव पण्डित; **आसि'**—आकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **लञा**—लेकर; **गेला**—अपने घर चले गये; **पथे याइते**—सड़क पर जाते हुए; **लोक-भिड़े**—लोगों की भीड़ में; **कष्टे-सृष्ट्ये**—अत्यन्त कठिनाई से; **आइला**—पहुँचे।

अनुवाद

आखिरकार श्री चैतन्य महाप्रभु को राघव पण्डित अपने साथ ले गये। रास्ते-भर काफी भीड़ इकट्ठी हो गई थी, जिससे महाप्रभु बड़ी कठिनाई से राघव पण्डित के घर पहुँच पाये।

এক-দিন প্রভু তথা করিয়া নিবাস ।
প্রাতে কুমারহট্টে আইলা,—যাহাঁ শ্রীনিবাস ॥২০৫॥

एक-दिन प्रभु तथा करिया निवास ।
प्राते कुमारहट्टे आइला,—याहाँ श्रीनिवास ॥ २०५॥

एक-दिन—एक दिन; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **तथा**—वहाँ; **करिया निवास**—निवास किया; **प्राते**—प्रातः काल; **कुमारहट्टे**—कुमारहट्ट नामक नगर; **आइला**—पहुँचे; **याहाँ**—जहाँ; **श्रीनिवास**—श्रीवास ठाकुर का घर था।

अनुवाद

महाप्रभु श्री राघव पण्डित के घर केवल एक दिन ठहरे। अगले दिन प्रातःकाल वे कुमारहट्ट गये, जहाँ श्रीवास ठाकुर रहते थे।

तात्पर्य

कुमारहट्ट का वर्तमान नाम हालिसहर है। श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा संन्यास ग्रहण किये जाने के बाद श्रीवास ठाकुर ने महाप्रभु से बिछुड़ने के कारण नवद्वीप छोड़ दिया और हालिसहर जाकर रहने लगे थे।

श्री चैतन्य महाप्रभु कुमारहट्ट के बाद कंचनपल्ली (कंचड़ापाड़ा) गये, जहाँ शिवानन्द सेन रहते थे। शिवानन्द सेन के यहाँ दो दिन रहकर महाप्रभु वासुदेव दत्त के घर गये। उनके यहाँ से वे नवद्वीप के पश्चिम की ओर विद्यानगर

गाँव गये। वहाँ से वे कुलियाग्राम गये और वहाँ माधवदास के घर पर एक सप्ताह रुके रहे। वहाँ उन्होंने देवानन्द तथा अन्यों के अपराधों को क्षमा किया। चूँकि कविराज गोस्वामी ने शान्तिपुराचार्य के नाम का उल्लेख किया है, इसलिए कुछ लोग सोचते हैं कि कुलियाग्राम कांचड़ापाड़ा के निकट का एक गाँव है। इस भूल के कारण उन्होंने नव कुलियार पाट नामक एक नये स्थान की खोज कर ली है। वास्तव में इस नाम का कोई स्थान नहीं है। वासुदेव दत्त का घर छोड़ने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु अद्वैत आचार्य के घर गये। वहाँ से वे नवद्वीप के पश्चिम में स्थित विद्यानगर गये और विद्यावाचस्पति के घर रूके। ये विवरण *चैतन्य-भागवत, चैतन्य-मंगल, चैतन्य-चन्द्रोदय नाटक* तथा *चैतन्य-चरित काव्य* में दिये गये हैं। श्रील कविराज गोस्वामी ने इस पूरी यात्रा का विस्तृत वर्णन नहीं दिया, अतएव *चैतन्य-चरितामृत* के आधार पर कुछ अनधिकृत लोगों ने कांचड़ापाड़ा के निकट कुलियार पाट नामक स्थान ढूँढ़ निकाला है।

তাহাঁ হৈতে আগে গেলা শিবানন্দ-ঘর ।
বাসুদেব-গৃহে পাছে আইলা ঈশ্বর ॥২০৬॥

তাহাঁ হৈতে আগে গেলা শিবানন্দ-ঘর ।
বাসুদেব-গৃহে পাছে আইলা ঈশ্বর ॥ ২০৬ ॥

তাহাঁ হৈতে—वहाँ से; **আগে**—आगे; **গেলা**—श्री चैतन्य महाप्रभु गये; **শিবানন্দ-ঘর**—शिवानन्द सेन के घर; **বাসুদেব-গৃহে**—वासुदेव दत्त के घर; **পাছে**—इसके बाद; **আইলা**—आये; **ঈশ্বর**—महाप्रभु।

অনুবাদ

श्रीवास ठाकुर के घर से चलकर महाप्रभु शिवानन्द सेन के घर गये और बाद में वासुदेव दत्त के घर गये।

'বাচস্পতি-গৃহে' প্রভু যেমতে রহিলা ।
লোক-ভিড় ভয়ে যৈছে 'কুলিয়া' আইলা ॥২০৭॥

'বাচস্পতি-গৃহে' প্রভু য়েমতে রহিলা ।
লোক-ভিড় ভয়ে য়ৈছে 'কুলিয়া' আইলা ॥ ২০৭ ॥

वाचस्पति-गृहे—विद्यावाचस्पति के घर पर; **प्रभु**—महाप्रभु; **ग्रेमते**—जैसे; **रहिला**—कुछ समय वहाँ रहे; **लोक-भिड़ भये**—लोगों की भीड़ के भय से; **ग्रैछे**—जैसे; **कुलिया आइला**—वे कुलिया आये (नवद्वीप का वर्तमान नगर)।

अनुवाद

महाप्रभु कुछ समय तक विद्यावाचस्पति के घर पर रहे, किन्तु वहाँ पर काफी भीड़ थी अतएव वे कुलिया चले गये।

तात्पर्य

विद्यावाचस्पति का घर विद्यानगर में था, जो कोलद्वीप या कुलिया के पास ही था। यहीं पर देवानन्द पण्डित रह रहे थे। यह जानकारी *चैतन्य-भागवत* (मध्य-खण्ड, अध्याय २१) से प्राप्त होती है। *चैतन्य-चन्द्रोदय नाटक* में कुलिया के विषय में निम्नलिखित कथन प्राप्त होता है : *ततः कुमारहट्टे श्रीवासपण्डितवाट्याम् अभ्याययौ।* "वहाँ से महाप्रभु कुमारहट्ट स्थित श्रीवास पण्डित के घर गये।" *ततोऽद्वैतवाटीं अभ्येत्य हरिदासेनाभिवन्दितस्तथैव तरणीवर्त्मना नवद्वीपस्य पारे कुलियानामग्रामे माधवदासवाट्यामुत्तीर्णवान्। एवं स्पत दिनानि तत्र स्थित्वा पुनस्तटवर्त्मना एव चलितवान्*—"श्रीवास आचार्य के घर से होकर महाप्रभु अद्वैत आचार्य के घर गये, जहाँ हरिदास ठाकुर ने उन्हें नमस्कार किया। तब महाप्रभु नाव से नवद्वीप के उस पार कुलिया नामक स्थान को गये, जहाँ वे माधवदास के घर पर सात दिनों तक रुके। तब वे गंगा के किनारे-किनारे आगे चले गये।"

श्री चैतन्यचरित महाकाव्य में कहा गया है—अन्येद्युः स श्रीनवद्वीपभूमेः पारे गंगां पश्चिमे क्वापि देशे, श्रीमान् सर्वप्राणिनां तद्तदंगैर्नेत्रानन्दं सम्यगागत्य तेने—"महाप्रभु नवद्वीप से गंगा की पूर्वी दिशा में गये और सारे लोग महाप्रभु को आते देखकर परम प्रसन्न हुए।"

चैतन्य-भागवत (अन्त्य खण्ड, अध्याय ३) में कहा गया है—*सर्वपारिषदसङ्गे श्रीगौरसुन्दर / आचम्बिते आसिऽउत्तरिला ताँर घर*—"महाप्रभु अपनी पूरी टोली के साथ विद्यानगर आ गये और विद्यावाचस्पति के घर ठहर गये।" *नवद्वीपादि सर्वदिके हैल ध्वनि*—"इस तरह नवद्वीप-भर में महाप्रभु के आगमन का पता चल गया।" *वाचस्पति घरे आइला न्यासि-चूड़ामणि*—"इस

तरह समस्त संन्यासियों में अग्रणी श्री चैतन्य महाप्रभु विद्यावाचस्पति के घर आये। इसके आगे कहा गया है :

अनन्त अर्बुद लोक बलि' 'हरि' 'हरि'।
चलिलेन देखिबारे गौरांग श्रीहरि॥
पथ नाहि पाय केहो लोकेर गहले।
वनडाल भांगि'लोक दशदिके चले॥
लोकेर गहले यत अरण्य आछिल।
क्षणेके सकल दिव्य पथमय हैल॥
क्षणेके आइल सब लोक खेया-घाटे।
खेयारी करिते पार पड़िल संकटे॥
सत्वरे आसिला वाचस्पति महाशय।
करिलेन अनेक नाउकार समुच्चय॥
नाउकार अपेक्षा आर केहो नाहि करे।
नाना मते पार हय ये ये मते पारे॥
हेनमते गंगा पार हइ'सर्वजन।
सभेइ धरेन वाचस्पतिर चरण॥
लुकाजा गेला प्रभु कुलिया नगर।
कुलियाय आइलेन वैकुण्ठ-ईश्वर॥
सर्वलोक 'हरि' बलि'वाचस्पति—संगे।
सेइ-क्षणे सभे चलिलेन महा—रंगे॥
कुलिया-नगरे आइलेन न्यासि-मणि।
सेइ-क्षणे सर्व-दिके हैल महाध्वनि॥
सबे गंगा मध्ये नदियाय-कुलियाय।
शुनि'मात्र सर्वलोके महानन्दे धाया॥
वाचस्पतिर ग्रामे (विद्यानगरे) छिल यतेक गहल
तार कोटि कोटिगुणे पूरिल सकल
लक्ष लक्ष नाउका वा आइल कोठा हइते
ना जानि कतेक पार हय कतमते॥

लक्ष लक्ष लोक भासे जाह्नवीर जले
सभे पार हयेन परम कुतूहले॥
गंगाय हजा पार आपना-आपनि।
कोलाकोलि करि 'सभे करे हरि-ध्वनि॥
क्षणेके कुलिया-ग्राम—नगर प्रान्तर।
परिपूर्ण हइल स्थल, नाहि अवसर॥
क्षणेके आइला महाशय वाचस्पति।
तेंहो नाहि पायेन प्रभुर कोथा स्थिति॥
कुलिया प्रकाशे यतेक पापी छिल।
उत्तम, मध्यम, निच,—सबे पार हइल॥
कुलिया—ग्रामेते आसि 'श्रीकृष्णचैतन्य।
हेन नाहि, यारे प्रभु ना करिला धन्य।

"जब श्री चैतन्य महाप्रभु विद्यावाचस्पति के घर ठहरे तो लाखों लोग उनका दर्शन करने तथा हरिनाम-कीर्तन करने आये। इस तरह इतनी भीड़ हो गई कि चलने के लिए भी स्थान नहीं रहा, अतएव गाँव के निकट का जंगल काटकर स्थान बनाया गया। अनेक सड़कें अपने आप बन गईं और बहुत-से लोग नाव से महाप्रभु का दर्शन करने आये। इस तरह इतने लोग आये कि उन्हें पार कराते-कराते नाविकों के नाक में दम हो गया। जब विद्यावाचस्पति अचानक आये, तो उन्होंने इन लोगों को लाने के लिए अनेक नावों का प्रबन्ध किया। किन्तु लोगों में नावों की प्रतीक्षा करने के लिए धैर्य नहीं रह गया। उन्होंने जैसे-तैसे नदी पार की और विद्यावाचस्पति के घर की ओर आगे बढ़े। इस अपार भीड़ के कारण श्री चैतन्य महाप्रभु चुपके से कुलिया नगर चले गये। किन्तु जब महाप्रभु विद्यानगर छोड़ कर चले गये, तो उनके जाने का समाचार सब लोगों को प्रकट हो गया। अतएव वे वाचस्पति के साथ कुलिया नगर गये। चूँकि महाप्रभु के आने का समाचार तुरन्त फैल गया, अतएव बहुत बड़ी भीड़ आ गई और उल्लासपूर्वक महाप्रभु का स्वागत करने लगी। जब यह भीड़ महाप्रभु को देखने गई, तो इसमें लोगों की संख्या दस-हजार गुनी बढ़ गई। कोई भी व्यक्ति यह नहीं बता सकता था कि कितने लोगों ने उनके दर्शन हेतु

नदी पार की होगी, किन्तु गंगा नदी पार करते हुए लाखों लोगों ने तुमुल ध्वनि की। नदी पार करने के बाद लोग परस्पर एक दूसरे का आलिंगन करने लगे, क्योंकि उन्होंने महाप्रभु के आगमन का शुभ समाचार सुना था। इस तरह कुलिया के सारे निवासियों का—पापियों का, बीच वालों का तथा आध्यात्मिक रूप से बढ़े-चढ़े लोगों का—उद्धार हो गया और वे श्री चैतन्य महाप्रभु के कारण धन्य हो गये।

जैसाकि *चैतन्य-भागवत* (अन्त्य खण्ड, अध्याय ६) में कहा गया है :

खानायोड़ा बड़गाछि, आर डोगाछिया।
गंगार ओपार कभु या येन 'कुलिया'॥

श्री चैतन्य महाप्रभु खानायोदा, बडागाची और दोगाछिया होकर गये और तब कुलिया में पहुँचने से पहले उन्होंने गंगा नदी पार की।" *चैतन्य मंगल* में बतलाया गया है कि :

गंगा-स्नान करि प्रभु राढ़ देश दिया।
क्रमे क्रमे उत्तरिला नगर 'कुलिया'॥
मायेर वचने पुनः गेला नवद्वीप।
वारकोणा-घाट, निज वाड़ीर समीप॥

"श्री चैतन्य महाप्रभु राढ़ देश से होते हुए शनैः शनैः गंगा पहुँचे। नदी में स्नान करने के बाद उन्होंने इसे पार किया और कुलिया गये। चूँकि उन्होंने अपनी माता को वचन दिया था कि वे नवद्वीप लौटेंगे, अतः वे वारकोना घाट गये, जो उनके घर के निकट एक गाँव है।"

प्रेमदास की टीका में कहा गया है कि :

नदीयार माझखाने, सकल लोकेते।
जाने 'कुलिया-पाहाड़पुर' नामे स्थान॥

"प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि नदिया के बीच में कुलिया-पहाड़पुर नामक एक गाँव है।"

श्री नरहरि चक्रवर्ती अथवा घनश्याम दास ने अपनी पुस्तक *भक्तिरत्नाकर* में लिखा है :

कुलिया पहाड़पुर देख श्रीनिवास।
पूर्वे 'कोलद्वीप'-पर्वताख्य—ए प्रचार॥

"उसने कहा, 'हे श्रीनिवास, कुलिया-पहाड़पुर गाँव तो देखो, जिसे पहले कोलाद्वीप कहा जाता था।'"

घनश्याम दास द्वारा ही लिखी गई अन्य पुस्तक *नवद्वीप-परिक्रमा* में भी कहा गया है—*कुलिया-पाहाड़पुर ग्राम पूर्वे कोलद्वीपपर्वताख्यानन्द नाम।* "कुलिया-पाहाड़पुर गाँव पहले कोलाद्वीप पर्वताख्या नाम से जाना जाता था।"

अतएव निष्कर्ष यह निकलता है कि आज का नवद्वीप शहर तथा बाहर द्वीप, कोलेर गंज, कोल-आमाद, कोलेर दह, गदखालि इत्यादि स्थान पहले कुलिया कहलाते थे। किन्तु तथाकथित कुलियार पाट मूल कुलिया नहीं है।

माधव-दास-गृहे तथा शचीर नन्दन ।
लक्ष-कोटि लोक तथा पाइल दरशन ॥२०८॥

माधव-दास-गृहे तथा शचीर नन्दन ।
लक्ष-कोटि लोक तथा पाइल दरशन ॥ २०८ ॥

माधव-दास-गृहे—माधवदास के घर पर; **तथा**—वहाँ; **शचीर नन्दन**—माता शची का पुत्र; **लक्ष-कोटि लोक**—लाखों लोगों ने; **तथा**—वहाँ; **पाइल दरशन**—उनका दर्शन पाया।

अनुवाद

जब महाप्रभु माधवदास के घर पर ठहरे, तो लाखों-करोड़ों लोग उनका दर्शन करने आये।

तात्पर्य

माधव दास की पहचान इस प्रकार की जाती है। श्रीकर चट्टोपाध्याय के परिवार में युधिष्ठिर चट्टोपाध्याय ने जन्म लिया। पहले वे तथा उनके परिवार के सदस्य बिल्वग्राम तथा पाटूलि में रहते थे। वहाँ से वह परिवार कुलिया पाहाड़पुर गया, जो पहले पाड़पुर कहलाता था। युधिष्ठिर चट्टोपाध्याय का सबसे बड़ा पुत्र माधव दास कहलाता था, दूसरा पुत्र हरिदास था और सबसे छोटा पुत्र कृष्णसम्पत्ति चट्टोपाध्याय कहलाता था। इन तीनों भाइयों के उपनाम क्रमशः छकड़ि, तिनकड़ि तथा दुकड़ि थे। माधवदास का पौत्र वंशीवदन था

और उसका पौत्र रामचन्द्र था। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती के समय में रामचन्द्र और इनके वंशज अब भी वाघनापाड़ा या वैंची में रह रहे हैं।

सात दिन रहि' तथा लोक निस्तारिला ।
सब अपराधि-गणे प्रकारे तारिला ॥२०९॥

सात दिन रहि' तथा लोक निस्तारिला ।
सब अपराधि-गणे प्रकारे तारिला ॥ २०९ ॥

सात दिन—सात दिन; **रहि'**—रहकर; **तथा**—वहाँ; **लोक**—लोग; **निस्तारिला**—उद्धार किया; **सब**—सब; **अपराधि-गणे**—अपराधी; **प्रकारे**—किसी न किसी रूप में; **तारिला**—उद्धार किया।

अनुवाद

महाप्रभु वहाँ सात दिनों तक रुके रहे और उन्होंने सभी तरह के अपराधियों तथा पापियों का उद्धार किया।

'शान्तिपुराचार्य'-गृहे ऐछे आइला ।
शची-माता मिलि' ताँर दुःख खण्डाइला ॥२१०॥

'शान्तिपुराचार्य्य'-गृहे ऐछे आइला ।
शची-माता मिलि' ताँर दुःख खण्डाइला ॥ २१० ॥

शान्तिपुर-आचार्य्य—अद्वैत आचार्य के; **गृहे**—घर; **ऐछे**—इसी प्रकार; **आइला**—गये; **शची-माता**—माता शची; **मिलि'**—मिलकर; **ताँर**—उसको; **दुःख**—दुःख; **खण्डाइला**—शान्त किया।

अनुवाद

कुलिया छोड़ने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु शान्तिपुर में अद्वैत आचार्य के घर गये। यहीं पर उनकी माता शचीमाता उनसे मिलीं और उनका महान् दुःख दूर हुआ।

तबे 'रामकेलि'-ग्रामे प्रभु यैछे गेला ।
'नाटशाला' हैते प्रभु पुनः फिरि' आइला ॥२११॥

तबे 'रामकेलि'-ग्रामे प्रभु ग्रैछे गेला ।
'नाटशाला' हैते प्रभु पुनः फिरि' आइला ॥ २११ ॥

तबे—तब; **रामकेलि-ग्रामे**—रामकेलि गाँव में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ग्रैछे**—इसी प्रकार; **गेला**—गये; **नाटशाला**—कानाई नाटशाला नामक स्थान; **हैते**—से; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **पुनः**—दोबारा; **फिरि' आइला**—लौट आये।

अनुवाद

इसके बाद महाप्रभु रामकेलि गाँव तथा कानाइ नाटशाला नामक स्थान गये। वहाँ से वे शान्तिपुर लौट आये।

শান্তিপুরে পুনঃ কৈল দশ-দিন বাস ।
বিস্তারি' বর্ণিয়াছেন বৃন্দাবন-দাস ॥২১২॥

शान्तिपुरे पुनः कैल दश-दिन वास ।
विस्तारि' वर्णियाछेन वृन्दावन-दास ॥ २१२ ॥

शान्तिपुरे—शान्तिपुर में; **पुनः**—दोबारा; **कैल**—किया; **दश-दिन**—दस दिन के लिए; **वास**—निवास; **विस्तारि'**—विस्तारपूर्वक; **वर्णियाछेन**—वर्णन किया है; **वृन्दावन-दास**—वृन्दावन दास ठाकुर ने।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु शान्तिपुर में दस दिनों तक रुके। इसका विस्तृत वर्णन वृन्दावन दास ठाकुर ने किया है।

অতএব ইহাঁ তার না কৈলুঁ বিস্তার ।
পুনরুক্তি হয়, গ্রন্থ বাড়য়ে অপার ॥২১৩॥

अतएव इहाँ तार ना कैलुँ विस्तार ।
पुनरुक्ति हय, ग्रन्थ बाड़ये अपार ॥ २१३ ॥

अतएव—अतएव; **इहाँ**—यहाँ; **तार**—उस घटना का; **ना कैलुँ**—नहीं दिया; **विस्तार**—विस्तार; **पुनरुक्ति**—दोहराने से ; **हय**—यह है; **ग्रन्थ**—ग्रंथ; **बाड़ये**—बढ़ जाता है; **अपार**—अपार।

अनुवाद

मैं इन घटनाओं का वर्णन नहीं करूँगा, क्योंकि वृन्दावन दास ठाकुर

द्वारा ये पहले ही वर्णित हो चुकी हैं। उसी बात को दुहराने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इसे दोहराने से इस ग्रंथ का आकार बढ़कर असीम हो जायेगा।

তার মধ্যে মিলিলা যৈছে রূপ-সনাতন ।
নৃসিংহানন্দ কৈল যৈছে পথের সাজন ॥২১৪॥
সূত্র-মধ্যে সেই লীলা আমি ত' বর্ণিলুঁ ।
অতএব পুনঃ তাহা ইহাঁ না লিখিলুঁ ॥২১৫॥

तार मध्ये मिलिला य़ैछे रूप-सनातन ।
नृसिंहानन्द कैल य़ैछे पथेर साजन ॥ २१४॥
सूत्र-मध्ये सेइ लीला आमि त' वर्णिलुँ ।
अतएव पुनः ताहा इहाँ ना लिखिलुँ ॥ २१५॥

तार मध्ये—उस दौरान; **मिलिला**—वे मिले; **य़ैछे**—कैसे; **रूप-सनातन**—दो भाई रूप और सनातन; **नृसिंहानन्द**—नृसिंहानन्द; **कैल**—किया; **य़ैछे**—कैसे; **पथेर साजन**—मार्ग की सजावट; **सूत्र-मध्ये**—रूपरेखा में; **सेइ लीला**—वे लीलाएँ; **आमि**—मैंने; **त'**—निस्सन्देह; **वर्णिलुँ**—वर्णन की हैं; **अतएव**—इसलिए; **पुनः**—दोबारा; **ताहा**—उसे; **इहाँ**—यहाँ; **ना लिखिलुँ**—मैंने नहीं लिखी हैं।

अनुवाद

इन वर्णनों से पता चलता है कि श्री चैतन्य महाप्रभु किस तरह रूप तथा सनातन बन्धुओं से मिले और किस तरह नृसिंहानन्द ने मार्ग सजाया। मैं पहले ही इस पुस्तक के संक्षिप्त विवरण में इनका वर्णन कर चुका हूँ, अतएव मैं उनको फिर से नहीं दुहराऊँगा।

तात्पर्य

यह जानकारी आदिलीला (अध्याय १०, श्लोक ३५) तथा मध्यलीला (अध्याय १, श्लोक १५५-१६२ तथा १७५-२२६) में दी हुई है।

পুনরপি প্রভু যদি 'শান্তিপুর' আইলা ।
রঘুনাথ-দাস আসি' প্রভুরে মিলিলা ॥২১৬॥

पुनरपि प्रभु य़दि 'शान्तिपुर' आइला ।
रघुनाथ-दास आसि' प्रभुरे मिलिला ॥ २१६॥

पुनरपि—दोबारा; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **यदि**—जब; **शान्तिपुर आइला**—शान्तिपुर आये; **रघुनाथ-दास**—रघुनाथ दास; **आसि'**—आकर; **प्रभुरे मिलिला**—श्री चैतन्य महाप्रभु से मिले।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु शान्तिपुर लौटे, तब रघुनाथ दास उनसे मिलने आये।

'हिरण्य', 'गोवर्धन',—दुइ सहोदर ।
सप्तग्रामे बार-लक्ष मुद्रार ईश्वर ॥ २१७॥
'हिरण्य', 'गोवर्धन',—दुइ सहोदर ।
सप्तग्रामे बार-लक्ष मुद्रार ईश्वर ॥ २१७॥

हिरण्य—हिरण्य; **गोवर्धन**—गोवर्धन; **दुइ सहोदर**—दोनों भाई; **सप्तग्रामे**—सप्तग्राम नामक गाँव में; **बार-लक्ष**—१२ लाख; **मुद्रार**—मुद्राएँ; **ईश्वर**—कमाते थे।

अनुवाद

सप्तग्राम के निवासी हिरण्य तथा गोवर्धन नामक दो भाइयों की वार्षिक आय बारह लाख रुपये थी।

तात्पर्य

हिरण्य तथा गोवर्धन हुगली जिले के सप्तग्राम के निवासी थे। वास्तव में वे सप्तग्राम के नहीं, अपितु पास ही के गाँव कृष्णपुर के निवासी थे। उनका जन्म एक बड़े कायस्थ परिवार में हुआ था। यद्यपि उनकी कुल उपाधि का पता नहीं लग सका है, किन्तु यह बात पक्की है कि वे एक सम्मानित परिवार से थे। बड़े भाई का नाम हिरण्य मजुमदार और छोटे भाई का नाम गोवर्धन मजुमदार था। श्री रघुनाथ दास गोवर्धन मजुमदार के पुत्र थे। इनके कुल-पुरोहित बलराम आचार्य थे, जो हरिदास ठाकुर के प्रिय थे और इस कुल के गुरु यदुनन्दन आचार्य थे, जो वासुदेव दत्त के प्रिय पात्र थे।

सप्तग्राम कलकत्ता से बर्दवान जाने वाली पूर्वीय रेलवे पर स्थित है और आजकल का रेलवे स्टेशन त्रिशबीघा कहलाता है। उन दिनों वहाँ पर सरस्वती नामक एक बड़ी-सी नदी थी। वर्तमान त्रिशबीघा एक बड़ा बन्दरगाह है।

१५९२ ई. में पठानों का आक्रमण हुआ और १६३२ ई. में सरस्वती नदी में भारी बाढ़ आई जिससे यह विशाल बन्दरगाह अंशत: नष्ट हो गया। कहा जाता है कि १७वीं तथा १८वीं सदी में पुर्तगाली व्यापारी अपने जहाजों से यहाँ तक आते थे। उन दिनों सप्तग्राम जो बंगाल की दक्षिणी ओर स्थित था, अत्यन्त समृद्ध एवं प्रसिद्ध था। यहाँ के व्यापारी जो यहाँ के मुख्य निवासी थे, वे सप्तग्राम सुवर्णवणिक कहलाते थे। यहाँ अनेक धनीमानी लोग थे और हिरण्य तथा गोवर्धन मजमुदार कायस्थ जाति के थे। वे भी अत्यन्त धनी थे, इसीलिए इस श्लोक में कहा गया है कि जमींदारों के रूप में उनकी वार्षिक आमदनी १२ लाख रुपये थी। इस सम्बन्ध में आदिलीला (अध्याय ११, श्लोक ४१) देखना चाहिए, जिसमें उद्धारण दत्त का उल्लेख है, जो सप्तग्राम सुवर्णवणिक जाति के थे।

महैश्वर्य-युक्त दुँहे——वदान्य, ब्रह्मण्य ।
सदाचारी, सत्कुलीन, धार्मिकाग्र-गण्य ॥२१८॥

महैश्वर्य-युक्त दुँहे——वदान्य, ब्रह्मण्य ।
सदाचारी, सत्कुलीन, धार्मिकाग्र-गण्य ॥ २१८॥

महा-ऐश्वर्य-युक्त—धन में अत्यन्त सम्पन्न; **दुँहे**—दोनों भाई; **वदान्य**—अत्यन्त दयालु; **ब्रह्मण्य**—ब्राह्मण संस्कृति को समर्पित; **सत्-आचारी**—सद् व्यवहार करनेवाले; **सत्-कुलीन**—कुलीन; **धार्मिक-अग्र-गण्य**—धार्मिक लोगों में अग्रणी।

अनुवाद

हिरण्य तथा गोवर्धन मजुमदार दोनों ही अत्यन्त ऐश्वर्यवान तथा वदान्य थे। वे सदाचारी और ब्राह्मण संस्कृति को समर्पित थे। वे सम्माननीय कुलीन परिवार के थे और धार्मिकों में उनका प्रमुख स्थान था।

नदीया-वासी, ब्राह्मणेर उपजीव्य-प्राय ।
अर्थ, भूमि, ग्राम दिया करेन सहाय ॥२१९॥

नदीया-वासी, ब्राह्मणेर उपजीव्य-प्राय ।
अर्थ, भूमि, ग्राम दिया करेन सहाय ॥ २१९॥

नदीया-वासी—नदिया के निवासी; **ब्राह्मणेर**—सभी ब्राह्मणों को; **उपजीव्य-प्राय**—आय का लगभग पूरा स्रोत; **अर्थ**—धन; **भूमि**—भूमि; **ग्राम**—गाँव; **दिया**—दान देकर; **करेन सहाय**—सहायता करते थे।

अनुवाद

नदिया के रहने वाले प्रायः सारे ब्राह्मण हिरण्य तथा गोवर्धन के दान पर आश्रित थे, क्योंकि वे उन्हें धन, भूमि तथा गाँव देते थे।

तात्पर्य

यद्यपि श्री चैतन्य महाप्रभु के काल में नवद्वीप अत्यन्त समृद्धशाली तथा अच्छी जनसंख्या वाला था, किन्तु सारे ब्राह्मण हिरण्य तथा गोवर्धन के दान पर निर्भर रहते थे। क्योंकि ये दोनो भाई ब्राह्मणों का बहुत आदर करते थे, अतः वे उन्हें उदार भाव से धन देते थे।

नीलाम्बर चक्रवर्ती—आराध्य दुँहार ।
चक्रवर्ती करे दुँहाय 'भ्रातृ'-व्यवहार ॥२२०॥

नीलाम्बर चक्रवर्ती—आराध्य दुँहार ।
चक्रवर्ती करे दुँहाय 'भ्रातृ'-व्यवहार ॥ २२० ॥

नीलाम्बर चक्रवर्ती—नीलाम्बर चक्रवर्ती (श्री चैतन्य महाप्रभु के नाना); **आराध्य दुँहार**—इन दोनों के पूज्य; **चक्रवर्ती**—नीलाम्बर चक्रवर्ती; **करे**—करते थे; **दुँहाय**—उन दोनों से; **भ्रातृ-व्यवहार**—भ्राता का व्यवहार।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के नाना नीलाम्बर चक्रवर्ती इन दोनों के द्वारा पूजित थे, किन्तु नीलाम्बर चक्रवर्ती उनके साथ अपने भाइयों जैसा व्यवहार करते थे।

मिश्र-पुरन्दरेर पूर्वे कर्याछेन सेवने ।
अतएव प्रभु भाल जाने दुइ-जने ॥२२१॥

मिश्र-पुरन्दरेर पूर्वे कर्य़াछेन सेवने ।
अतएव प्रभु भाल जाने दुइ-जने ॥ २२१ ॥

मिश्र-पुरन्देरेर—पुरन्दर मिश्र को (श्री चैतन्य महाप्रभु के पिता); **पूर्वे**—पहले; **कर्य्याछेन सेवने**—सेवा की थी; **अतएव**—अतएव; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भाल**—बहुत अच्छी तरह; **जाने**—जानते थे; **दुइ-जने**—दोनों भाइयों को।

अनुवाद

पहले ये दोनों भाई श्री चैतन्य महाप्रभु के पिता मिश्र पुरन्दर की काफी सेवा कर चुके थे। इसीलिए महाप्रभु इन्हें भलीभाँति जानते थे।

सेइ गोवर्धनेर पुत्र——रघुनाथ दास ।
बाल्य-काल हैते तेँहो विषये उदास ॥२२२॥

सेइ गोवर्धनेर पुत्र——रघुनाथ दास ।
बाल्य-काल हैते तेंहो विषये उदास ॥ २२२॥

सेइ—उस; **गोवर्धनेर पुत्र**—गोवर्धन मजुमदार का पुत्र; **रघुनाथ दास**—रघुनाथ दास; **बाल्य-काल हैते**—बचपन से ही; **तेंहो**—वह; **विषये उदास**—भौतिक सुख की ओर उदासीन।

अनुवाद

रघुनाथ दास गोवर्धन मजुमदार के पुत्र थे। वे बचपन से ही भौतिक भोगों की ओर अनासक्त रहते थे।

सन्न्यास करि' प्रभु यबे शान्तिपुर आइला ।
तबे आसि' रघुनाथ प्रभुरे मिलिला ॥२२३॥

सन्न्यास करि' प्रभु यबे शान्तिपुर आइला ।
तबे आसि' रघुनाथ प्रभुरे मिलिला ॥ २२३॥

सन्न्यास करि'—संन्यास लेने के बाद; **प्रभु**—महाप्रभु; **यबे**—जब; **शान्तिपुर आइला**—शान्तिपुर गये; **तबे**—उस समय; **आसि'**—आकर; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **मिलिला**—मिले।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु संन्यास ग्रहण करने के बाद शान्तिपुर वापस आये, तब रघुनाथ दास उनसे मिले थे।

প্রভুর চরণে পড়ে প্রেমাবিষ্ট হঞা ।
প্রভু পাদ-স্পর্শ কৈল করুণা করিয়া ॥২২৪॥

प्रभुर चरणे पड़े प्रेमाविष्ट हञा ।
प्रभु पाद-स्पर्श कैल करुणा करिया ॥ २२४॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **चरणे**—चरणकमलों पर; **पड़े**—गिर पड़े; **प्रेम-आविष्ट**—प्रेमावेश में आकर; **हञा**—होकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **पाद-स्पर्श कैल**—चरणों से स्पर्श किया; **करुणा**—करुणा; **करिया**—दिखाकर।

अनुवाद

जब रघुनाथ दास श्री चैतन्य महाप्रभु से भेंट करने गये, तो वे प्रेमवश महाप्रभु के चरणकमलों पर गिर पड़े। महाप्रभु ने उन पर कृपा दिखाते हुए उन्हें अपने चरणों से छू दिया।

তাঁর পিতা সদা করে আচার্য-সেবন ।
অতএব আচার্য তাঁরে হৈলা পরসন্ন ॥২২৫॥

ताँर पिता सदा करे आचार्य-सेवन ।
अतएव आचार्य ताँरे हैला परसन्न ॥ २२५॥

ताँर पिता—उनके पिता; **सदा**—सदा; **करे**—करते थे; **आचार्य-सेवन**—अद्वैत आचार्य की पूजा; **अतएव आचार्य**—अतएव अद्वैत आचार्य; **ताँरे**—उस पर; **हैला परसन्न**—प्रसन्न हो गये।

अनुवाद

रघुनाथ दास के पिता गोवर्धन सदैव ही अद्वैत आचार्य की अत्यधिक सेवा करते थे। फलतः अद्वैत आचार्य भी इस परिवार से अत्यन्त प्रसन्न थे।

আচার্য-প্রসাদে পাইল প্রভুর উচ্ছিষ্ট-পাত ।
প্রভুর চরণ দেখে দিন পাঁচ-সাত ॥২২৬॥

आचार्य-प्रसादे पाइल प्रभुर उच्छिष्ट-पात ।
प्रभुर चरण देखे दिन पाँच-सात ॥ २२६॥

आचार्य-प्रसादे—अद्वैत आचार्य की दया से; **पाइल**—पाया; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु

का; **उच्छिष्ट-पात**—भोजन की जूठन; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **चरण**—चरणकमल; **देखे**—देखे; **दिन**—दिन; **पाँच-सात**—पाँच सात।

अनुवाद

जब रघुनाथ दास वहाँ रहते, तो अद्वैत आचार्य उन्हें महाप्रभु द्वारा छोड़ा गया भोजन दिया करते थे। इस तरह रघुनाथ दास पाँच-सात दिनों तक महाप्रभु के चरणकमलों की सेवा में लगे रहे।

प्रभु ताँरे विदाय दिया गेला नीलाचल ।
तेँहो घरे आसि' हैला प्रेमेते पागल ॥ २२७॥

प्रभु ताँरे विदाय दिया गेला नीलाचल ।
तेंहो घरे आसि' हैला प्रेमेते पागल ॥ २२७॥

प्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँरे**—रघुनाथ दास को; **विदाय दिया**—विदा की; **गेला**—लौट गये; **नीलाचल**—जगन्नाथ पुरी को; **तेंहो**—वे; **घरे आसि'**—घर लौटकर; **हैला**—हो गये; **प्रेमेते पागल**—प्रेम में पागल।

अनुवाद

रघुनाथ दास को विदा करके श्री चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथ पुरी लौट आये। घर लौटकर रघुनाथ दास प्रेम के भावावेश में पागल हो उठे।

बार बार पलाय तेँहो नीलाद्रि याइते ।
पिता ताँरे बान्धि' राखे आनि' पथ हैते ॥ २२८॥

बार बार पलाय तेंहो नीलाद्रि याइते ।
पिता ताँरे बान्धि' राखे आनि' पथ हैते ॥ २२८॥

बार बार—बारम्बार; **पलाय**—घर छोड़ देते थे; **तेंहो**—वे; **नीलाद्रि याइते**—जगन्नाथ पुरी जाने के लिए; **पिता**—उनके पिता; **ताँरे**—उनको; **बान्धि'**—बांधकर; **राखे**—रखते थे; **आनि'**—वापस लाकर; **पथ हैते**—रास्ते से।

अनुवाद

रघुनाथ दास जगन्नाथ पुरी जाने के लिए घर से बारम्बार भागते रहते थे, किन्तु उनके पिता उन्हें बाँध रखते और वापस लाते रहते।

পঞ্চ পাইক তাঁরে রাখে রাত্রি-দিনে ।
চারি সেবক, দুই ব্রাহ্মণ রহে তাঁর সনে ॥২২৯॥

पञ्च पाइक ताँरे राखे रात्रि-दिने ।
चारि सेवक, दुइ ब्राह्मण रहे ताँर सने ॥ २२९ ॥

पञ्च—पाँच; **पाइक**—चौकीदार; **ताँरे**—रघुनाथ दास की; **राखे**—रखवाली करते; **रात्रि-दिने**—दिन रात; **चारि सेवक**—चार सेवक; **दुइ ब्राह्मण**—पकाने के लिए दो ब्राह्मण; **रहे**—रहते; **ताँर सने**—उनके साथ।

अनुवाद

उनके पिता ने उनकी रात-दिन रखवाली करने के लिए पाँच चौकीदार नियुक्त कर रखे थे। उनकी सुख-सुविधा देखने के लिए चार नौकर और उनके लिए भोजन बनाने के लिए दो ब्राह्मण नियुक्त कर रखे थे।

একাদশ জন তাঁরে রাখে নিরন্তর ।
নীলাচলে যাইতে না পায়, দুঃখিত অন্তর ॥২৩০॥

एकादश जन ताँरे राखे निरन्तर ।
नीलाचले याइते ना पाय, दुःखित अन्तर ॥ २३० ॥

एकादश—ग्यारह; **जन**—व्यक्ति; **ताँरे**—उनको; **राखे**—रखते थे; **निरन्तर**—निरन्तर (रातदिन); **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी को; **याइते**—जाने के लिए; **ना पाय**—समर्थ नहीं; **दुःखित अन्तर**—मन में अति दुःखी थे।

अनुवाद

इस तरह ग्यारह व्यक्ति रघुनाथ दास को निरन्तर वश में रखते थे। इस तरह वे जगन्नाथ पुरी नहीं जा सके, फलतः वे अत्यन्त दुःखी रहते थे।

এবে যদি মহাপ্রভু 'শান্তিপুর' আইলা ।
শুনিয়া পিতারে রঘুনাথ নিবেদিলা ॥২৩১॥

एबे यदि महाप्रभु 'शान्तिपुर' आइला ।
शुनिया पितारे रघुनाथ निवेदिला ॥ २३१ ॥

एबे—अब; **ग्रदि**—जब; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **शान्तिपुर**—शान्तिपुर; **आइला**—आये; **शुनिया**—सुनकर; **पितारे**—पिता को; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास; **निवेदिला**—प्रार्थना की।

अनुवाद

जब रघुनाथ दास को पता चला कि श्री चैतन्य महाप्रभु शान्तिपुर पधारे हैं, तो उन्होंने अपने पिता से निवेदन किया।

''आज्ञा देह', याञा देखि प्रभुर चरण ।
अन्यथा, ना रहे मोर शरीरे जीवन'' ॥२७२॥

"आज्ञा देह', ग्राञा देखि प्रभुर चरण ।
अन्यथा, ना रहे मोर शरीरे जीवन" ॥ २३२॥

आज्ञा देह'—कृपया मुझे आज्ञा दें; **ग्राञा**—जाकर; **देखि**—दर्शन करने की; **प्रभुर चरण**—महाप्रभु के चरणकमल; **अन्यथा**—अन्यथा; **ना रहे**—नहीं रहेगा; **मोर**—मेरे; **शरीरे**—शरीर में; **जीवन**—जीवन।

अनुवाद

रघुनाथ दास ने अपने पिता से पूछा, "कृपा करके मुझे महाप्रभु के चरणकमलों का दर्शन करने की अनुमति दें। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे, तो मेरे प्राण इस शरीर के भीतर नहीं रह पायेंगे।"

शुनि' ताँर पिता बहु लोक-द्रव्य दिया ।
पाठाइल बलि' 'शीघ्र आसिह फिरिया' ॥२७३॥

शुनि' ताँर पिता बहु लोक-द्रव्य दिया ।
पाठाइल बलि' 'शीघ्र आसिह फिरिया' ॥ २३३॥

शुनि'—सुनकर; **ताँर**—उनके; **पिता**—पिता; **बहु**—बहुत से; **लोक-द्रव्य**—सेवक तथा द्रव्य; **दिया**—देकर; **पाठाइल**—भेजा; **बलि'**—कहकर; **शीघ्र**—शीघ्र; **आसिह**—आओ; **फिरिया**—लौटकर।

अनुवाद

यह विनती सुनकर रघुनाथ दास के पिता सहमत हो गये। अनेक

नौकर तथा सामग्री देकर पिता ने अपने पुत्र को श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने के लिए यह कहकर भेजा कि वह शीघ्र ही लौट आये।

সাত দিন শান্তিপুরে প্রভু-সঙ্গে রহে ।
রাত্রি-দিবসে এই মনঃ-কথা কহে ॥২৩৪॥

সাত দিন শান্তিপুরে প্রভু-সঙ্গে রহে ।
রাত্রি-দিবসে এই মনঃ-কথা কহে ॥ ২৩৪॥

সাত দিন—সাত দিন; **শান্তিপুরে**—শান্তিপুর में; **প্রভু-সঙ্গে**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **রহে**—रहे; **রাত্রি-দিবসে**—दिन और रात; **এই**—ये; **মনঃ-কথা**—अपने मन में शब्द; **কহে**—कहे।

अनुवाद

रघुनाथ दास शान्तिपुर में सात दिन तक श्री चैतन्य महाप्रभु के संग में रहे। उस अवधि में रात-दिन उनके मन में निम्नलिखित विचार घुमड़ते रहे।

'রক্ষকের হাতে মুঞি কেমনে ছুটিব! ।
কেমনে প্রভুর সঙ্গে নীলাচলে যাব?' ॥২৩৫॥

'রক্ষকের হাতে মুঞি কেমনে ছুটিব! ।
কেমনে প্রভুর সঙ্গে নীলাচলে যাব?' ॥ ২৩৫॥

রক্ষকের হাতে—चौकीदारों के हाथों से; **মুঞি**—मैं; **কেমনে**—कैसे; **ছুটিব**—छूटूँगा; **কেমনে**—कैसे; **প্রভুর সঙ্গে**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **নীলাচলে**—जगन्नाथ पुरी को; **যাব**—मैं जाऊँगा।

अनुवाद

रघुनाथ दास ने सोचा, "मैं इन रखवालों के चंगुल से किस तरह छूट सकूँगा? मैं किस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ नीलाचल जा सकूँगा?"

সর্বজ্ঞ গৌরাঙ্গ-প্রভু জানি' তাঁর মন ।
শিক্ষা-রূপে কহে তাঁরে আশ্বাস-বচন ॥২৩৬॥

सर्वज्ञ गौराङ्ग-प्रभु जानि' ताँर मन ।
शिक्षा-रूपे कहे ताँरे आश्वास-वचन ॥ २३६ ॥

सर्व-ज्ञ—सबकुछ जानते थे; **गौराङ्ग-प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **जानि'**—जान गये; **ताँर**—उनका; **मन**—मन; **शिक्षा-रूपे**—शिक्षा के रूप में; **कहे**—कहे; **ताँरे**—रघुनाथ दास को; **आश्वास-वचन**—आश्वासन के वचन।

अनुवाद

चूँकि श्री चैतन्य महाप्रभु सर्वज्ञ थे, अतएव वे रघुनाथ दास के मन की बात समझ गये। इसलिए महाप्रभु ने उन्हें ढाढ़स बँधाते हुए इस प्रकार उपदेश दिया।

"स्थिर हञा घरे याओ, ना हओ वातुल ।
क्रमे क्रमे पाय लोक भव-सिन्धु-कूल ॥ २३७ ॥

"स्थिर हञा घरे याओ, ना हओ बातुल ।
क्रमे क्रमे पाय लोक भव-सिन्धु-कूल ॥ २३७ ॥

स्थिर हञा—स्थिर होकर; **घरे याओ**—घर जाओ; **ना**—न; **हओ**—होओ; **बातुल**—उन्मत्त; **क्रमे क्रमे**—धीरे धीरे; **पाय**—पाता है; **लोक**—व्यक्ति; **भव-सिन्धु-कूल**—भौतिक सागर के दूरस्थ तट।

अनुवाद

"धैर्य धरो और घर वापस जाओ। पागल मत बनो। तुम क्रमशः भवसागर को पार कर सकोगे।

तात्पर्य

श्रीमद्भागवत (१०.१४.५८) में कहा गया है :

समाश्रिता ये पदपल्लवप्लवं
महत्पदं पुण्ययशोमुरारेः ।
भवाम्बुधिर्वत्सपदं परं पदं
पदं पदं यद् विपदां न तेषाम् ॥

यह भौतिक संसार एक विशाल सागर के समान है। यह ब्रह्मलोक से पाताल-लोक तक फैला हुआ है और इस सागर में अनेक लोक या द्वीप हैं। जीव भक्ति के विषय में कुछ न जानने के कारण इस समुद्र के इर्द-गिर्द घूमता

रहता है, मानो किनारे तक पहुँचने के लिए वह तैरने का प्रयास कर रहा हो। अस्तित्व टिकाये रखने के लिए हमारा संघर्ष ऐसा ही है। हर व्यक्ति भौतिक अस्तित्व के सागर से बाहर निकलने के लिए प्रयत्नशील रहता है। किन्तु व्यक्ति तुरन्त ही किनारे तक नहीं पहुँच पाता। वह प्रयास करने पर श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से सागर को पार कर सकता है। वह भले ही समुद्र पार करने के लिए अत्यन्त उत्सुक हो, लेकिन पागल की तरह काम करके सफलता नहीं प्राप्त कर सकता। उसे अत्यन्त धैर्यपूर्वक तथा बुद्धिपूर्वक श्री चैतन्य महाप्रभु या उनके प्रतिनिधि के आदेशों के अनुसार समुद्र पार करना होगा। तब वह किसी न किसी दिन किनारे पर पहुँच जायेगा और भगवद्धाम वापस जा सकेगा।

मर्कट-वैराग्य ना कर लोक देखाञा ।
यथा-योग्य विषय भुञ्ज' अनासक्त हञा ॥२३८॥

मर्कट-वैराग्य ना कर लोक देखाञा ।
यथा-योग्य विषय भुञ्ज' अनासक्त हञा ॥ २३८ ॥

मर्कट-वैराग्य—वानर वैराग्य; **ना कर**—न करो; **लोक**—लोगों को; **देखाञा**—दिखाने के लिए; **यथा-योग्य**—यथा योग्य; **विषय**—भौतिक विषयों का; **भुञ्ज'**—भोग करो; **अनासक्त**—अनासक्त; **हञा**—होकर।

अनुवाद

"तुम दिखावटी भक्त मत बनो और मिथ्या वैरागी मत बनो। अभी तुम उपयुक्त ढंग से भौतिक जगत् का भोग करो, किन्तु इसमें आसक्त मत होना।"

तात्पर्य

मर्कट-वैराग्य मिथ्या वैराग्य का सूचक है और यह इस श्लोक का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शब्द है। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर इस शब्द की टीका करते हुए इंगित करते हैं कि बन्दर वस्त्र ग्रहण न करके जंगल में नंगे रहकर वैराग्य का दिखावा करते हैं। इस तरह वे अपने आपको वैरागी मानते हैं, किन्तु वास्तव में वे दर्जनों बन्दरियों के साथ विषय-भोग करने में लगे रहते हैं। ऐसा वैराग्य *मर्कट-वैराग्य* कहलाता है। जब तक मनुष्य भौतिक कर्म से उदासीन

नहीं हो जाता और इसे आध्यात्मिक उन्नति में बाधक नहीं मानने लगता, तब तक वह वास्तव में वैराग्य प्राप्त नहीं कर सकता। वैराग्य को *फल्गु*—क्षणिक या नश्वर—नहीं होना चाहिए, अपितु पूरे जीवन भर चलना चाहिए। क्षणिक वैराग्य या मर्कट-वैराग्य श्मशान में अनुभव किये जाने वाले वैराग्य के समान है। जब मनुष्य शव को मरघट ले जाता है, तो वह कभी-कभी सोचता है, "शरीर की यही अन्तिम गति है। तो फिर मैं रात-दिन कठोर श्रम क्यों करता हूँ?" मरघट जाते समय ऐसे विचार स्वभावत: हर व्यक्ति के मन में उठते हैं, किन्तु श्मशान से लौटते ही वह इन्द्रिय-भोग के लिए भौतिक कार्यों में फिर से लग जाता है। यह *श्मशान-वैराग्य* या *मर्कट-वैराग्य* कहलाता है।

भगवान् की सेवा करने के उद्देश्य से आवश्यक वस्तुएँ स्वीकार करनी चाहिए। इस तरह रहने पर मनुष्य वास्तविक वैरागी बन सकता है। *भक्तिरसामृतसिंधु* (१.२.१०८) में कहा गया है :

यावता स्यात् स्वनिर्वाह: स्वीकुर्यात् तावदर्थवित्।
आधिक्ये न्यूनतायां च च्यवते परमार्थत:॥

"जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं को स्वीकार करनी चाहिए, किन्तु व्यर्थ ही आवश्यकताओं को बढ़ानी नहीं चाहिए। न ही उनमें व्यर्थ ही कटौती करनी चाहिए। अध्यात्म में प्रगति करने के लिए जितना आवश्यक हो उतना स्वीकार करना चाहिए।"

श्री जीव गोस्वामी ने *दुर्गम सङ्गमनी* में *स्वनिर्वाह:* शब्द की टीका *स्व—स्वभक्तिनिर्वाह:* के रूप में की है। अनुभवी भक्त केवल उन्हीं भौतिक वस्तुओं को स्वीकार करेगा, जिनसे भगवान् की सेवा करने में सहायता मिल सके। *भक्तिरसामृतसिंधु* (१.२.२५६) में *मर्कट-वैराग्य* अथवा *फल्गु-वैराग्य* की व्याख्या इस प्रकार की गई है :

प्रापञ्चिकतया बुद्ध्या हरिसम्बन्धिवस्तुन:।
मुमुक्षिभि: परित्यागो वैराग्यं फल्गु कथ्यते॥

"जब मुक्ति पाने के लिए उत्सुक व्यक्ति पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् से सम्बन्धित वस्तुओं को भौतिक समझकर त्याग देते हैं, तो उनका वैराग्य अपूर्ण कहलाता है।" भगवान् की सेवा करने के लिए जो भी उपयुक्त हो, उसे स्वीकार करना

चाहिए। भौतिक वस्तु कहकर उसका बहिष्कार नहीं करना चाहिए।" *युक्त-वैराग्य* की व्याख्या इस प्रकार की गई है :

अनासक्तस्य विषयान् यथार्हमुपयुञ्जतः।
निर्बन्धः कृष्णसम्बन्धे युक्तं वैराग्यमुच्यते॥

"वस्तुओं को भगवान् की सेवा के लिए स्वीकार करनी चाहिए, न कि निजी इन्द्रियतृप्ति के लिए। यदि किसी वस्तु को आसक्तिरहित होकर स्वीकार की जाए और इसलिए स्वीकार की जाए कि वह कृष्ण से सम्बन्धित है, तो वह वैराग्य युक्त-वैराग्य कहलाता है।" चूँकि कृष्ण परम सत्य हैं, अतएव जो भी वस्तु उनकी सेवा के लिए स्वीकार की जाती है, वह भी परम सत्य होती है।

श्री चैतन्य महाप्रभु ने *मर्कट-वैराग्य* शब्द का प्रयोग उन तथाकथित वैष्णवों को लक्षित करके किया है, जो श्रील रूप गोस्वामी का अनुकरण करने के प्रयास में लँगोट पहनते हैं। ऐसे लोग माला की झोली लिए रहते हैं और जप करते हैं, किन्तु मन में वे सदैव कामिनी और कंचन प्राप्त करने की भावना छिपाये रहते हैं। लोगों से छिपकर ये *मर्कट-वैरागी* स्त्रियाँ रखते हैं, किन्तु बाहर से अपने आपको वैरागी दिखलाते हैं। श्री चैतन्य महाप्रभु ऐसे मर्कट-वैरागियों या छद्म वैष्णवों के सदा विरुद्ध रहते थे।

অন্তরে নিষ্ঠা কর, বাহ্যে লোক-ব্যবহার ।
অচিরাত্কৃষ্ণ তোমায় করিবে উদ্ধার ॥২৩৯॥

अन्तरे निष्ठा कर, बाह्ये लोक-व्यवहार ।
अचिरात्कृष्ण तोमाय करिबे उद्धार ॥ २३९ ॥

अन्तरे—हृदय में; **निष्ठा कर**—दृढ़ श्रद्धा रखो; **बाह्ये**—बाहर से; **लोक-व्यवहार**—लोक व्यवहार; **अचिरात्**—बहुत जल्दी; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **तोमाय**—तुम्हारा; **करिबे**—करेंगे; **उद्धार**—उद्धार।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "तुम्हें चाहिए कि अन्तर से श्रद्धावान बने रहो, किन्तु बाहर से सामान्य व्यक्ति जैसा व्यवहार करो। इस तरह कृष्ण जल्द ही प्रसन्न होंगे और तुम्हें माया के पाश से छुड़ा लेंगे।

वृन्दावन देखि' यबे आसिब नीलाचले ।
तबे तुमि आमा-पाश आसिह कोन छले ॥२४०॥

वृन्दावन देखि' ग्रबे आसिब नीलाचले ।
तबे तुमि आमा-पाश आसिह कोन छले ॥ २४० ॥

वृन्दावन देखि'—वृन्दावन देखने के पश्चात्; **ग्रबे**—जब; **आसिब**—मैं लौटूँगा; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी को; **तबे**—उस समय; **तुमि**—तुम; **आमा-पाश**—मेरे पास; **आसिह**—आओ; **कोन छले**—किसी बहाने से।

अनुवाद

"जब मैं वृन्दावन की मुलाकात लेने के बाद लौट आऊँ, तब तुम मुझसे नीलाचल, जगन्नाथ पुरी में मिल सकते हो। तब तक तुम निकल भागने की कोई दूसरी युक्ति सोच सकते हो।

से छल से-कालें कृष्ण स्फुरावे तोमारे ।
कृष्ण-कृपा याँरे, तारे के राखिते पारे'' ॥२४१॥

से छल से-काले कृष्ण स्फुराबे तोमारे ।
कृष्ण-कृपा ग्राँरे, तारे के राखिते पारे" ॥ २४१ ॥

से छल—वह छल; **से-काले**—उस समय; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **स्फुराबे**—दिखाएंगे; **तोमारे**—तुम्हें; **कृष्ण-कृपा**—कृष्ण की कृपा; **ग्राँरे**—जिस पर; **तारे**—उसको; **के**—कौन; **राखिते**—रखने में; **पारे**—सक्षम है।

अनुवाद

"उस समय तुम्हें कौन-से उपायों को काम में लाना पड़ेगा, यह तो कृष्ण ही बतलायेंगे। यदि किसी पर कृष्ण की कृपा हो, तो उसे कोई रोक नहीं सकता।"

तात्पर्य

यद्यपि श्रील रघुनाथ दास श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ जाने के लिए अत्यन्त उत्सुक थे, किन्तु महाप्रभु ने उन्हें भगवान् कृष्ण की कृपा होने तक प्रतीक्षा करने के लिए कहा। उन्होंने रघुनाथ दास को परामर्श दिया कि वे अपने हृदय में कृष्णभावनामृत को सुदृढ़ बनाये रखें और बाहर से सामान्य व्यक्ति जैसा व्यवहार

करें। कृष्णभावनामृत में उन्नत हर व्यक्ति के लिए यही युक्ति है। मनुष्य मानव-समाज में सामान्य व्यक्ति की तरह रह सकता है, किन्तु कृष्ण को तुष्ट करना तथा उनकी महिमा का प्रचार करना ही उसका व्यापार होना चाहिए। कृष्णभावनाभावित व्यक्ति को भौतिक वस्तुओं में मग्न नहीं होना चाहिए, क्योंकि उसका एकमात्र कार्य तो भगवद्भक्ति है। जो इस तरह कार्य में लगा रहेगा, उस पर कृष्ण अवश्य ही कृपा करेंगे। श्री चैतन्य महाप्रभु ने रघुनाथ दास को सलाह दी—*यथायोग्य विषय भुञ्ज 'अनासक्त हञा।* वही बात *अन्तरे निष्ठा कर, बाह्ये लोकव्यवहार*—में भी कही गई है। इसका अर्थ यह हुआ कि मनुष्य को अपने अन्तर में कृष्ण की सेवा करने के अतिरिक्त कोई अन्य भाव नहीं लाना चाहिए। ऐसे ही संकल्प से कृष्णभावनामृत का अनुशीलन किया जा सकता है। इसकी पुष्टि *भक्तिरसामृत सिन्धु* (१.२.२००) से हो जाती है :

लौकिकी वैदिकी वापि या क्रिया क्रियते मुने।
हरिसेवानुकूलैव सा कार्या भक्तिमिच्छता॥

भक्त एक सामान्य मनुष्य की तरह या वैदिक आदेशों के कट्टर अनुयायी के रूप में काम कर सकता है। हर हालत में वह जो भी करता है, भक्ति की प्रगति के लिए करता है, क्योंकि वह कृष्णभावनामय होता है।

এত কহি' মহাপ্রভু তাঁরে বিদায় দিল ।
ঘরে আসি' মহাপ্রভুর শিক্ষা আচরিল ॥২৪২॥

एत कहि' महाप्रभु ताँरे विदाय दिल ।
घरे आसि' महाप्रभुर शिक्षा आचरिल ॥ २४२॥

एत कहि'—यह कहकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ताँरे**—रघुनाथ दास को; **विदाय दिल**—विदा किया; **घरे आसि'**—घर लौटकर; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **शिक्षा**—शिक्षा का; **आचरिल**—अभ्यास किया।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने रघुनाथ दास को विदा किया। वे अपने घर लौट गये और महाप्रभु द्वारा बताई गई विधि के अनुसार कार्य करने लगे।

बाह्य वैराग्य, वातुलता सकल छाड़िया ।
यथा-योग्य कार्य करे अनासक्त हञा ॥२४३॥

बाह्य वैराग्य, बातुलता सकल छाड़िया ।
यथा-योग्य कार्य करे अनासक्त हञा ॥ २४३॥

बाह्य वैराग्य—बाह्य वैराग्य; **वातुलता**—पागलपन; **सकल**—सब; **छाड़िया**—त्यागकर; **यथा-योग्य**—यथायोग्य; **कार्य**—कार्य; **करे**—किया; **अनासक्त हञा**—अनासक्त होकर।

अनुवाद

घर आने पर रघुनाथ दास ने सारा पागलपन तथा बाह्य छद्म वैराग्य छोड़ दिया और वे गृहस्थी के कार्यों में बिना आसक्ति के रहने लगे।

देखि' ताँर पिता-माता बड़ सुख पाइल ।
ताँहार आवरण किछु शिथिल हइल ॥२४४॥

देखि' ताँर पिता-माता बड़ सुख पाइल ।
ताँहार आवरण किछु शिथिल हइल ॥ २४४॥

देखि'—देखकर; **ताँर**—उसके; **पिता-माता**—पिता माता ने; **बड़**—अत्यधिक; **सुख**—सुख; **पाइल**—पाया; **ताँहार आवरण**—उन पर कड़ी दृष्टि; **किछु**—कुछ; **शिथिल हइल**—ढीली कर दी।

अनुवाद

जब रघुनाथ दास के माता-पिता ने देखा कि उनका पुत्र गृहस्थ की तरह रह रहा है, तो वे अत्यन्त सुखी हुए। फलस्वरूप उन्होंने चौकसी में ढील कर दी।

तात्पर्य

जब रघुनाथ दास के पिता तथा माता ने देखा कि उनका पुत्र पागल जैसा व्यवहार नहीं कर रहा है और जिम्मेदारी के साथ अपना कर्तव्य निभाता है, तो वे अत्यन्त सुखी हुए। वे ग्यारहों व्यक्ति—पाँच रखवाले, ४ निजी नौकर तथा २ ब्राह्मण, जो उसकी रखवाली में रहते थे, चौकसी में ढिलाई बरतने लगे। जब रघुनाथ दास गृहस्थी के कार्य करने लगे, तो उनके माता-पिता ने रखवालों की संख्या घटा दी।

ইহাঁ প্রভু একত্র করি' সব ভক্ত-গণ ।
অদ্বৈত-নিত্যানন্দাদি যত ভক্ত-জন ॥২৪৫॥
সবা আলিঙ্গন করি' কহেন গোসাঞি ।
সবে আজ্ঞা দেহ'——আমি নীলাচলে যাই ॥২৪৬॥

इहाँ प्रभु एकत्र करि' सब भक्त-गण ।
अद्वैत-नित्यानन्दादि ग्रत भक्त-जन ॥ २४५ ॥
सबा आलिङ्गन करि' कहेन गोसाञि ।
सबे आज्ञा देह'——आमि नीलाचले ग्राइ ॥ २४६ ॥

इहाँ—यहाँ (शान्तिपुर में); **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **एकत्र करि'**—एक जगह इकट्ठे करके; **सब भक्त-गण**—सब भक्तों को; **अद्वैत-नित्यानन्द-आदि**—अद्वैत आचार्य और नित्यानन्द प्रभु आदि; **ग्रत भक्त-जन**—सभी भक्तों; **सबा आलिङ्गन करि'**—सबका आलिंगन करके; **कहेन गोसाञि**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा ; **सबे**—तुम सब; **आज्ञा देह'**—मुझे आज्ञा दो; **आमि**—मैं; **नीलाचले**—नीलाचल, जगन्नाथ पुरी; **ग्राइ**—जा सकूँ।

अनुवाद

तभी शान्तिपुर में श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने सारे भक्तों—अद्वैत आचार्य, श्री नित्यानन्द प्रभु आदि को एकत्र किया और उन सबका आलिंगन करने के बाद उनसे जगन्नाथ पुरी जाने की अनुमति माँगी।

সবার সহিত ইহাঁ আমার হইল মিলন ।
এ বর্ষ 'নীলাদ্রি' কেহ না করিহ গমন ॥২৪৭॥

सबार सहित इहाँ आमार हइल मिलन ।
ए वर्ष 'नीलाद्रि' केह ना करिह गमन ॥ २४७॥

सबार सहित—सबके साथ; **इहाँ**—यहाँ; **आमार**—मेरा; **हइल**—हो गया; **मिलन**—मिलन; **ए वर्ष**—इस वर्ष; **नीलाद्रि**—जगन्नाथ पुरी; **केह**—तुमसे कोई; **ना**—न; **करिह गमन**—जाओ।

अनुवाद

चूँकि श्री चैतन्य महाप्रभु शान्तिपुर में सबसे मिल चुके थे, अतः उन्होंने सारे भक्तों से विनती की कि वे इस वर्ष जगन्नाथ पुरी न आयें।

তাহাঁ হৈতে অবশ্য আমি 'বৃন্দাবন' যাব ।
সবে আজ্ঞা দেহ', তবে নির্বিঘ্নে আসিব ॥২৪৮॥

তাহাঁ হৈতে অবশ্য আমি 'বৃন্দাবন' যাব ।
সবে আজ্ঞা দেহ', তবে নির্বিঘ্নে আসিব ॥ ২৪৮ ॥

তাহাঁ হৈতে—বহাঁ से; **অবশ্য**—अवश्य; **আমি**—मैं; **বৃন্দাবন যাব**—वृन्दावन जाऊँगा; **সবে**—आप सब; **আজ্ঞা দেহ'**—मुझे आज्ञा दो; **তবে**—तब; **নির্বিঘ্নে**—बिना रूकावट के; **আসিব**—मैं लौटकर आऊँगा।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "मैं जगन्नाथ पुरी से वृन्दावन अवश्य जाऊँगा। यदि आप सभी लोग मुझे अनुमति दें, तो मैं बिना किसी कठिनाई के यहाँ फिर आ जाऊँगा।"

মাতার চরণে ধরি' বহু বিনয় করিল ।
বৃন্দাবন যাইতে তাঁর আজ্ঞা লইল ॥২৪৯॥

মাতার চরণে ধরি' বহু বিনয় করিল ।
বৃন্দাবন যাইতে তাঁর আজ্ঞা লইল ॥ ২৪৯ ॥

মাতার—शती माता के; **চরণে**—चरण; **ধরি'**—पकड़कर; **বহু বিনয় করিল**—विनम्रता से निवेदन किया; **বৃন্দাবন যাইতে**—वृन्दावन जाने के लिए; **তাঁর**—उनकी; **আজ্ঞা**—आज्ञा; **লইল**—ली।

अनुवाद

महाप्रभु ने अपनी माता के चरण पकड़कर उनसे विनयपूर्वक अनुमति माँगी। उन्होंने महाप्रभु को वृन्दावन जाने की अनुमति दे दी।

তবে নবদ্বীপে তাঁরে দিল পাঠাঞা ।
নীলাদ্রি চলিলা সঙ্গে ভক্ত-গণ লঞা ॥২৫০॥

তবে নবদ্বীপে তাঁরে দিল পাঠাঞা ।
নীলাদ্রি চলিলা সঙ্গে ভক্ত-গণ লঞা ॥ ২৫০ ॥

তবে—इसके बाद; **নবদ্বীপে**—नवद्वीप को; **তাঁরে**—उनको; **দিল পাঠাঞা**—वापस भेज

दिया; **नीलाद्रि**—जगन्नाथ पुरी को; **चलिला**—प्रस्थान किया; **सङ्गे**—अपने साथ; **भक्त-गण लञा**—सभी भक्तों को लेकर।

अनुवाद

श्रीमती शचीदेवी को नवद्वीप वापस भेज दिया गया और महाप्रभु अपने भक्तों सहित नीलाद्रि अर्थात् जगन्नाथ पुरी के लिए रवाना हो गये।

सेइ सब लोक पथे करेन सेवन ।
सुखे नीलाचल आइला शचीर नन्दन ॥२५१॥

सेइ सब लोक पथे करेन सेवन ।
सुखे नीलाचल आइला शचीर नन्दन ॥ २५१ ॥

सेइ सब लोक—उन सब लोगों ने; **पथे**—सड़क पर; **करेन सेवन**—सेवा की; **सुखे**—अत्यन्त सुख में; **नीलाचल**—जगन्नाथ पुरी को; **आइला**—लौट आये; **शचीर नन्दन**—माता शची का पुत्र।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ जाने वाले भक्तों ने नीलाचल जगन्नाथ पुरी के रास्ते-भर उनकी सभी प्रकार से सेवा की। इस तरह महाप्रभु परम प्रसन्नतापूर्वक लौट आये।

प्रभु आसि' जगन्नाथ दरशन कैल ।
'महाप्रभु आइला'—ग्रामे कोलाहल हैल ॥२५२॥

प्रभु आसि' जगन्नाथ दरशन कैल ।
'महाप्रभु आइला'—ग्रामे कोलाहल हैल ॥ २५२ ॥

प्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **आसि'**—लौटकर; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ का; **दरशन**—दर्शन; **कैल**—किया; **महाप्रभु आइला**—श्री चैतन्य महाप्रभु वापस आगये हैं; **ग्रामे**—नगर में; **कोलाहल हैल**—महा कोलाहल हो गया (समाचार पूरे नगर में फैल गया)।

अनुवाद

जगन्नाथ पुरी आकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने भगवान् के मन्दिर का दर्शन किया। फिर तो सारे नगर में यह समाचार फैल गया कि महाप्रभु लौट आये हैं।

आनन्दित भक्त-गण आसिया मिलिला ।
प्रेम-आलिङ्गन प्रभु सबारे करिला ॥२५३॥

आनन्दित भक्त-गण आसिया मिलिला ।
प्रेम-आलिङ्गन प्रभु सबारे करिला ॥ २५३ ॥

आनन्दित—अति प्रसन्न; **भक्त-गण**—सभी भक्त; **आसिया**—आ गये; **मिलिला**—मिले; **प्रेम-आलिङ्गन**—प्रेम से आलिंगन किया; **प्रभु**—महाप्रभु ने; **सबारे**—सभी भक्तों का; **करिला**—किया।

अनुवाद

तब सारे भक्तों ने आकर परम सुखपूर्वक महाप्रभु से भेंट की। महाप्रभु ने भी उन सबका एक-एक करके प्रेमपूर्वक आलिंगन किया।

काशी-मिश्र, रामानन्द, प्रद्युम्न, सार्वभौम ।
वाणीनाथ, शिखि-आदि यत भक्त-गण ॥२५४॥

काशी-मिश्र, रामानन्द, प्रद्युम्न, सार्वभौम ।
वाणीनाथ, शिखि-आदि यत भक्त-गण ॥ २५४ ॥

काशी-मिश्र—काशी मिश्र; **रामानन्द**—रामानन्द राय; **प्रद्युम्न**—प्रद्युम्न; **सार्वभौम**—सार्वभौम भट्टाचार्य; **वाणीनाथ**—वाणीनाथ; **शिखि-आदि**—शिखि माहिति आदि; **यत भक्त-गण**—सभी भक्त।

अनुवाद

काशी मिश्र, रामानन्द राय, प्रद्युम्न, सार्वभौम भट्टाचार्य, वाणीनाथ राय, शिखि माहिति तथा अन्य सारे भक्त भी महाप्रभु से मिले।

गदाधर-पण्डित आसि' प्रभुरे मिलिला ।
सबार अग्रेते प्रभु कहिते लागिला ॥२५५॥

गदाधर-पण्डित आसि' प्रभुरे मिलिला ।
सबार अग्रेते प्रभु कहिते लागिला ॥ २५५ ॥

गदाधर-पण्डित—गदाधर पण्डित; **आसि'**—आकर; **प्रभुरे मिलिला**—महाप्रभु से मिले; **सबार अग्रेते**—सभी भक्तों के समक्ष; **प्रभु**—महाप्रभु; **कहिते लागिला**—कहने लगे।

अनुवाद

गदाधर पण्डित भी आये और महाप्रभु से मिले। तब महाप्रभु सभी भक्तों के समक्ष इस प्रकार बोले।

'বৃন্দাবন যাব আমি গৌড়-দেশ দিয়া ।
নিজ-মাতার, গঙ্গার চরণ দেখিয়া ॥২৫৬॥

'वृन्दावन ग्राब आमि गौड़-देश दिया ।
निज-मातार, गङ्गार चरण देखिया ॥ २५६ ॥

वृन्दावन ग्राब—वृन्दावन को जाऊँगा; **आमि**—मैं; **गौड़-देश दिया**—बंगाल से होकर; **निज-मातार**—अपनी माता के; **गङ्गार**—गंगा नदी के; **चरण**—चरणों के; **देखिया**—दर्शन के लिए।

अनुवाद

"मैंने अपनी माता तथा गंगा नदी का दर्शन करने के लिए ही बंगाल से होते हुए वृन्दावन जाने का संकल्प किया था।

এত মতে করি' কৈলুঁ গৌড়েরে গমন ।
সহস্রেক সঙ্গে হৈল নিজ-ভক্ত-গণ ॥২৫৭॥

एत मते करि' कैलुँ गौड़ेरे गमन ।
सहस्रेक सङ्गे हैल निज-भक्त-गण ॥ २५७ ॥

एत—ऐसा; **मते**—निर्णय; **करि'**—करके; **कैलुँ**—मैंने किया; **गौड़ेरे**—बंगाल को; **गमन**—प्रस्थान; **सहस्रेक**—हजारों लोग; **सङ्गे**—मेरे साथ; **हैल**—हो गये; **निज-भक्त-गण**—मेरे अपने भक्त।

अनुवाद

"इस तरह मैं बंगाल गया, लेकिन हजारों भक्त मेरे साथ चल पड़े।

লক্ষ লক্ষ লোক আইসে কৌতুক দেখিতে ।
লোকের সঙ্ঘট্টে পথ না পারি চলিতে ॥২৫৮॥

लक्ष लक्ष लोक आइसे कौतुक देखिते ।
लोकेर सङ्घट्टे पथ ना पारि चलिते ॥ २५८ ॥

लक्ष लक्ष लोक—कई लाख लोग; **आइसे**—आये; **कौतुक**—उत्सुकता के कारण; **देखिते**—मुझे देखने; **लोकेर सङ्घट्टे**—इतने अधिक लोगों के इकट्ठा होने के कारण; **पथ**—सड़क; **ना पारि**—मैं अक्षम हो गया; **चलिते**—उनके बीच जाने से।

अनुवाद

"लाखों लोग उत्सुकतावश मुझे देखने आये और ऐसी भीड़ हुई कि रास्ते में मुक्त होकर चलना भी कठिन हो गया।

यथा रहि, तथा घर-प्राचीर हय चूर्ण ।
यथा नेत्र पड़े तथा लोक देखि पूर्ण ॥२५९॥

यथा रहि, तथा घर-प्राचीर हय चूर्ण ।
यथा नेत्र पड़े तथा लोक देखि पूर्ण ॥ २५९ ॥

यथा रहि—मैं जहाँ भी ठहरा; **तथा**—वहाँ; **घर-प्राचीर**—मकान और सीमा की दीवारें; **हय**—हो गये; **चूर्ण**—टूट गये; **यथा**—जहाँ भी; **नेत्र**—दृष्टि; **पड़े**—पड़ती; **तथा**—वहाँ; **लोक**—लोगों से; **देखि**—देखा; **पूर्ण**—भरा हुआ।

अनुवाद

"भीड़ इतनी बढ़ गई कि मैं जिस घर में रुका था, वह घर तथा उसकी चाहारदीवारी टूट-फूट गई और मैं जिधर देखता उधर विशाल जनसमूह ही दिखाई पड़ता था।

कष्टे-सृष्ट्ये करि' गेलाङ रामकेलि-ग्राम ।
आमार ठाञि आइला 'रूप' 'सनातन' नाम ॥२६०॥

कष्टे-सृष्ट्ये करि' गेलाङ रामकेलि-ग्राम ।
आमार ठाञि आइला 'रूप' 'सनातन' नाम ॥ २६० ॥

कष्टे-सृष्ट्ये—अत्यन्त कठिनाई से; **करि'**—करके; **गेलाङ**—मैं गया; **रामकेलि-ग्राम**—रामकेलि गाँव में; **आमार ठाञि**—मेरे समक्ष; **आइला**—आये; **रूप सनातन नाम**—रूप और सनातन नाम के दो भाई।

अनुवाद

"मैं बड़ी मुश्किल से रामकेलि गाँव गया, जहाँ मुझे रूप तथा सनातन दो भाई मिले।

दुई भाई—भक्त-राज, कृष्ण-कृपा-पात्र ।
व्यवहारे—राज-मन्त्री हय राज-पात्र ॥ २६१ ॥

दुइ भाइ—भक्त-राज, कृष्ण-कृपा-पात्र ।
व्यवहारे—राज-मन्त्री हय राज-पात्र ॥ २६१ ॥

दुइ भाइ—दोनों भाई; **भक्त-राज**—भक्त शिरोमणी; **कृष्ण-कृपा-पात्र**—कृष्ण कृपा के योग्य अधिकारी; **व्यवहारे**—व्यवहार में; **राज-मन्त्री**—राजमंत्री, सरकार के मंत्री; **हय**—थे; **राज-पात्र**—सरकारी अफसर।

अनुवाद

"ये दोनों भाई महान् भक्त तथा कृष्ण-कृपा के समुचित पात्र हैं। किन्तु सामान्य तौर पर वे हैं सरकारी अधिकारी—राजा के मन्त्री।

विद्या-भक्ति-बुद्धि-बले परम प्रवीण ।
तबु आपनाके माने तृण हैते हीन ॥ २६२ ॥

विद्या-भक्ति-बुद्धि-बले परम प्रवीण ।
तबु आपनाके माने तृण हैते हीन ॥ २६२ ॥

विद्या—विद्या; **भक्ति**—भक्ति; **बुद्धि**—और बुद्धि के; **बले**—बल पर; **परम**—परम; **प्रवीण**—दक्ष; **तबु**—फिर भी; **आपनाके**—स्वयं को; **माने**—वे सोचते थे; **तृण**—एक तिनके; **हैते**—से भी; **हीन**—नीच।

अनुवाद

"श्रील रूप तथा सनातन शिक्षा, भक्ति, बुद्धि तथा बल में अत्यन्त अनुभवी हैं, फिर भी वे अपने आपको सड़क के तिनके से भी नीच मानते हैं।

ताँर दैन्य देखि' शुनि' पाषाण विदरे ।
आमि तुष्ट हञा तबे कहिलुँ दोंहारे ॥ २६३ ॥
"उत्तम हञा हीन करि' मानह आपनारे ।
अचिरे करिबे कृष्ण तोमार उद्धारे" ॥ २६४ ॥

ताँर दैन्य देखि' शुनि' पाषाण विदरे ।
आमि तुष्ट हञा तबे कहिलुँ दोंहारे ॥ २६३ ॥

"उत्तम हञा हीन करि' मानह आपनारे ।
अचिरे करिबे कृष्ण तोमार उद्धारे" ॥ २६४॥

ताँर दैन्य देखि'—उनकी विनम्रता देखकर; **शुनि'**—अथवा उनके विषय में सुनकर; **पाषाण**—पत्थर; **विदरे**—पिघल जाता था; **आमि**—मैंने; **तुष्ट हञा**—बहुत प्रसन्न होकर; **तबे**—तब; **कहिलुँ दोंहारे**—उन दोनों से कहा; **उत्तम हञा**—हर दृष्टि से वस्तुतः उत्तम होने के कारण; **हीन**—हीन, विनीत; **करि'**—मानकर; **मानह**—तुम समझते हो; **आपनारे**—अपने आपको; **अचिरे**—अति शीघ्र; **करिबे**—करेंगे; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **तोमार**—तुम्हारा; **उद्धारे**—उद्धार।

अनुवाद

"निस्सन्देह, इन दोनों भाइयों के दैन्य से पत्थर भी पिघल सकता था। उनके आचरण से तुष्ट होकर मैंने उनसे कहा, 'यद्यपि तुम दोनों उच्च कोटि के हो, किन्तु अपने आपको निम्न मानते हो; इसीलिए कृष्ण शीघ्र ही तुम दोनों का उद्धार करेंगे।'

तात्पर्य

शुद्ध भक्त के गुण ही ऐसे होते हैं। भौतिक दृष्टि से कोई कितना ही ऐश्वर्यवान, अनुभवी, प्रभावशाली तथा शिक्षित क्यों न हो, किन्तु यदि वह अपने आपको रास्ते में पड़े तृण से भी हीन मानता है, तो श्री चैतन्य महाप्रभु या भगवान् कृष्ण उसकी ओर आकृष्ट होते हैं। महाराज प्रतापरुद्र ने राजा होते हुए भी हाथ में झाड़ू लेकर जगन्नाथ रथ के लिए मार्ग बुहारा। इस विनीत सेवा के कारण श्री चैतन्य महाप्रभु राजा पर अत्यन्त प्रसन्न हुए और इसीलिए उन्होंने राजा का आलिंगन किया था। श्री चैतन्य महाप्रभु के आदेशों के अनुसार भक्त को भौतिक शक्ति पाकर कभी भी फूल नहीं जाना चाहिए। उसे यह जान लेना चाहिए कि भौतिक शक्ति पूर्व पुण्य कर्मों का फल होता है, फलतः वह नश्वर होता है। किसी भी क्षण मनुष्य का सारा भौतिक ऐश्वर्य समाप्त हो सकता है, इसीलिए एक भक्त कभी भी ऐसे ऐश्वर्य पर गर्वित नहीं होता। वह सदैव विनीत तथा दीन बना रहता है और अपने आपको तृण के समान हीन मानता है। इसके कारण भक्तगण भगवद्धाम वापस जाने के पात्र होते हैं।

এত কহি' আমি যবে বিদায় তাঁরে দিল ।
গমন-কালে সনাতন 'প্রহেলী' কহিল ॥২৬৫॥
যাঁর সঙ্গে হয় এই লোক লক্ষ কোটি ।
বৃন্দাবন যাইবার এই নহে পরিপাটী ॥২৬৬॥

एत कहि' आमि ग्रबे विदाय ताँरे दिल ।
गमन-काले सनातन 'प्रहेली' कहिल ॥ २६५ ॥
ग्राँर सङ्गे हय एइ लोक लक्ष कोटि ।
वृन्दावन ग्राइबार एइ नहे परिपाटी ॥ २६६ ॥

एत कहि'—इस प्रकार कहकर; **आमि**—मैंने; **ग्रबे**—जब; **विदाय**—विदा; **ताँरे**—उनको; **दिल**—दी; **गमन-काले**—जाते समय; **सनातन**—सनातन ने; **प्रहेली**—समस्या, पहेली, उलझन; **कहिल**—कही; **ग्राँर सङ्गे**—जिस के साथ; **हय**—है; **एइ**—यह; **लोक**—लोगों की भीड़; **लक्ष कोटि**—लाखों; **वृन्दावन**—वृन्दावन धाम; **ग्राइबार**—जाने के लिए; **एइ**—यह; **नहे**—नहीं; **परिपाटी**—रीति।

अनुवाद

"उनसे ऐसा कहकर मैंने उनसे विदा ली। जब मैं विदा हो रहा था, तो सनातन ने मुझसे कहा, 'जब हजारो लोगों की भीड़ किसी का अनुसरण कर रही हो, तब इस प्रकार से वृन्दावन जाना उचित नहीं है।'

তবু আমি শুনিলুঁ মাত্র, না কৈলুঁ অবধান ।
প্রাতে চলি' আইলাঙ 'কানাইর নাটশালা'-গ্রাম ॥২৬৭॥

तबु आमि शुनिलुँ मात्र, ना कैलुँ अवधान ।
प्राते चलि' आइलाङ'कानाइर नाटशाला'-ग्राम ॥ २६७ ॥

तबु—फिर भी; **आमि**—मैंने; **शुनिलुँ**—सुना; **मात्र**—मात्र; **ना**—नहीं; **कैलुँ**—दिया; **अवधान**—कोई ध्यान; **प्राते**—प्रातः काल; **चलि' आइलाङ**—मैं चला गया; **कानाइर नाटशाला**—कानाई नाटशाला; **ग्राम**—गाँव।

अनुवाद

"यद्यपि मैंने यह सुना, किन्तु उस पर ध्यान नहीं दिया, और प्रातःकाल मैं कानाइ नाटशाला गया।

রাত্রি-কালে মনে আমি বিচার করিল ।
সনাতন মোরে কিবা 'প্রহেলী' কহিল ॥২৬৮॥

रात्रि-काले मने आमि विचार करिल ।
सनातन मोरे किबा 'प्रहेली' कहिल ॥ २६८ ॥

रात्रि-काले—रात को; **मने**—मन में; **आमि**—मैंने; **विचार करिल**—विचार किया; **सनातन**—सनातन ने; **मोरे**—मुझे; **किबा**—क्या; **प्रहेली**—पहेली; **कहिल**—कही थी।

अनुवाद

"किन्तु रात में मैंने सनातन के कहे हुए पर विचार किया।

ভালত' কহিল,—মোর এত লোক সঙ্গে ।
লোক দেখি' কহিবে মোরে—'এই এক ঢঙ্গে' ॥২৬৯॥

भालत' कहिल,—मोर एत लोक सङ्गे ।
लोक देखि' कहिबे मोरे—'एइ एक ढङ्गे' ॥ २६९ ॥

भालत' कहिल—उसने बहुत अच्छा कहा है; **मोर**—मुझे; **एत**—इतनी; **लोक**—भीड़ के; **सङ्गे**—साथ; **लोक**—लोग; **देखि'**—देखकर; **कहिबे मोरे**—मेरे बारे में; **एइ**—यह; **एक**—एक और; **ढङ्गे**—ढोंगी।

अनुवाद

"मैं इस निर्णय पर पहुँचा कि सनातन ने बहुत ठीक कहा था। मेरे साथ बहुत बड़ी भीड़ थी, अतएव इतने सारे लोगों को देखकर लोग निश्चय ही मेरी निन्दा करेंगे कि 'यह एक और धूर्त है।'

'দুর্লভ' 'দুর্গম' সেই 'নির্জন' বৃন্দাবন ।
একাকী যাইব, কিবা সঙ্গে এক-জন ॥২৭০॥

'दुर्लभ' 'दुर्गम' सेइ 'निर्जन' वृन्दावन ।
एकाकी याइब, किबा सङ्गे एक-जन ॥ २७० ॥

दुर्लभ—दुलर्भ; **दुर्गम**—कठिन; **सेइ**—वह; **निर्जन**—एकान्त; **वृन्दावन**—वृन्दावन; **एकाकी**—अकेले; **याइब**—मैं जाऊँगा; **किबा**—अथवा; **सङ्गे**—मेरे साथ; **एक-जन**—मात्र एक व्यक्ति।

अनुवाद

"तब मैं सोचने लगा कि वृन्दावन तो एकान्त स्थान है। यह दुर्गम और दुर्लभ है। इसलिए मैंने अकेले या फिर बहुत हुआ तो अपने साथ केवल एक व्यक्ति लेकर जाने का निश्चय किया है।

মাধবেন্দ্র-পুরী তথা গেলা 'একেশ্বরে' ।
দুগ্ধ-দান-চ্ছলে কৃষ্ণ সাক্ষাদ্দিল তাঁরে ॥২৭১॥

माधवेन्द्र-पुरी तथा गेला 'एकेश्वरे' ।
दुग्ध-दान-च्छले कृष्ण साक्षात्दिल ताँरे ॥ २७१ ॥

माधवेन्द्र-पुरी—माधवेन्द्र पुरी; **तथा**—वहाँ; **गेला**—गये; **एकेश्वरे**—अकेले; **दुग्ध-दान-छले**—दान में दूध देने के बहाने; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **साक्षात्**—साक्षात्; **दिल**—दिया; **ताँरे**—उनको।

अनुवाद

"माधवेन्द्र पुरी अकेले ही वृन्दावन गये थे और कृष्ण ने दूध देने के बहाने उन्हें दर्शन दिया था।

বাদিয়ার বাজি পাতি' চলিলাঙ তথারে ।
বহু-সঙ্গে বৃন্দাবন গমন না করে ॥২৭২॥

बादियार बाजि पाति' चलिलाङ तथारे ।
बहु-सङ्गे वृन्दावन गमन ना करे ॥ २७२ ॥

बादियार—एक खानाबदोश का; **बाजि**—जादू; **पाति'**—दिखाते हुए; **चलिलाङ**—मैं गया; **तथारे**—वहाँ; **बहु-सङ्गे**—बहुत लोगों के साथ; **वृन्दावन**—वृन्दावन धाम को; **गमन**—जाना; **ना करे**—नहीं करता ।

अनुवाद

"तब मैं समझ पाया कि मैं खेल दिखाने वाले जादूगर की तरह वृन्दावन जा रहा हूँ और यह निश्चय ही ठीक नहीं है। किसी को भी इतने सारे लोगों के साथ वृन्दावन नहीं जाना चाहिए।

একা যাইব, কিবা সঙ্গে ভৃত্য এক-জন ।
তবে সে শোভয় বৃন্দাবনের গমন ॥২৭৩॥

একা য়াইব, কিবা সঙ্গে ভৃত্য এক-জন ।
তবে সে শোভয় বৃন্দাবনের গমন ॥ ২৭৩ ॥

একা য়াইব—मैं अकेला जाऊँगा; **किबा**—अथवा; **सङ्गे**—मेरे साथ; **भृत्य**—सेवक; **एक-जन**—एक व्यक्ति; **तबे**—उस प्रकार; **से**—वह; **शोभय**—शोभा देता है; **वृन्दावनेर गमन**—वृन्दावन को जाना।

अनुवाद

"इसीलिए मैंने अकेले या अधिक से अधिक एक नौकर के साथ वृन्दावन जाने का निश्चय किया है। इस तरह मेरी वृन्दावन यात्रा बहुत सुन्दर होगी।

বৃন্দাবন যাব কাহাঁ 'একাকী' হঞা! ।
সৈন্য সঙ্গে চলিয়াছি ঢাক বাজাঞা! ॥২৭৪॥

বৃন্দাবন য়াব কাহাঁ 'একাকী' হঞা! ।
সৈন্য সঙ্গে চলিয়াছি ঢাক বাজাঞা! ॥ ২৭৪ ॥

वृन्दावन य़ाब—मुझे वृन्दावन जाना चाहिए; **काहाँ**—जबकि; **एकाकी हञा**—अकेले; **सैन्य**—सिपाहियों; **सङ्गे**—के साथ; **चलियाछि**—मैं जा रहा हूँ; **ढाक बाजाञा**—ढोल बजाते हुए।

अनुवाद

"मैंने सोचा, "मैं वृन्दावन अकेले न जाकर सैनिकों को साथ लिए और ढोल बजाते जा रहा हूँ।'

ধিক্, ধিকাপনাকে বলি' হইলাঙ অস্থির ।
নিবৃত্ত হঞা পুনঃ আইলাঙ গঙ্গা-তীর ॥২৭৫॥

ধিক্, ধিকাপনাকে বলি' হইলাঙ অস্থির ।
নিবৃত্ত হঞা পুনঃ আইলাঙ গঙ্গা-তীর ॥ ২৭৫ ॥

धिक् धिक्—धिक् धिक्, धिक्कार; **आपनाके**—मुझे; **बलि'**—कहकर; **हइलाङ**—मैं

हो गया; **अस्थिर**—अस्थिर, विक्षिप्त; **निवृत्त हञा**—ऐसा कार्य छोड़कर; **पुनः**—पुनः; **आइलाङ**—मैं लौट आया; **गङ्गा-तीर**—गंगा तट पर।

अनुवाद

"इसलिए मैंने अपने आपको धिक्कारा और अत्यन्त उत्तेजित होकर मैं गंगा-तीर लौट आया।

भक्त-गणे राखिया आइनु निज निज स्थाने ।
आमा-सङ्गे आइला सबे पाँच-छय जने ॥२७६॥

भक्त-गणे राखिया आइनु निज निज स्थाने ।
आमा-सङ्गे आइला सबे पाँच-छय जने ॥ २७६ ॥

भक्त-गणे—भक्तगण; **राखिया**—छोड़कर; **आइनु**—मैं आया; **निज निज स्थाने**—अपने अपने स्थान पर; **आमा-सङ्गे**—मेरे साथ; **आइला**—आये; **सबे**—मात्र; **पाँच-छय जने**—पाँच छः व्यक्ति।

अनुवाद

"तब मैंने सारे भक्तों को वहाँ छोड़ दिया और अपने साथ केवल पाँच-छः व्यक्तियों को रखा।

निर्विघ्ने एबे कैछे याइब वृन्दावने ।
सबे मेलि' युक्ति देह' हञा परसन्ने ॥२७७॥

निर्विघ्ने एबे कैछे याइब वृन्दावने ।
सबे मेलि' युक्ति देह' हञा परसन्ने ॥ २७७ ॥

निर्विघ्ने—बिना रूकावट के; **एबे**—अब; **कैछे**—कैसे; **याइब**—मैं जाऊँगा; **वृन्दावने**—वृन्दावन को; **सबे मेलि'**—सब मिलकर; **युक्ति देह'**—परामर्श दो; **हञा परसन्ने**—मुझ पर प्रसन्न होकर।

अनुवाद

"अब मैं चाहता हूँ कि तुम सब लोग मुझ पर प्रसन्न होओ और मुझे अच्छी सलाह दो। मुझे बताओ कि मैं किस तरह निर्विघ्न होकर वृन्दावन जा सकता हूँ।

गदाधरे छाड़ि' गेनु, ईंहो दुःख पाइल ।
सेई हेतु वृन्दावन याइते नारिल ॥२७८॥

गदाधरे छाड़ि' गेनु, ईंहो दुःख पाइल ।
सेइ हेतु वृन्दावन याइते नारिल ॥ २७८ ॥

गदाधरे छाड़ि'—गदाधर पण्डित को छोड़कर; **गेनु**—मैं गया; **ईंहो**—गदाधर पण्डित को; **दुःख पाइल**—दुःख हुआ; **सेइ हेतु**—उसी कारण; **वृन्दावन**—वृन्दावन धाम को; **याइते नारिल**—मैं न जा सका।

अनुवाद

"मैंने यहाँ गदाधर पण्डित को छोड़ दिया, तो वह अत्यन्त दुःखी हुआ। इसलिए मैं वृन्दावन नहीं जा सका।"

तबे गदाधर-पण्डित प्रेमाविष्ट हञा ।
प्रभु-पद धरि' कहे विनय करिया ॥२७९॥

तबे गदाधर-पण्डित प्रेमाविष्ट हञा ।
प्रभु-पद धरि' कहे विनय करिया ॥ २७९ ॥

तबे—तब; **गदाधर पण्डित**—गदाधर पण्डित; **प्रेम-आविष्ट हञा**—प्रेमावेश में आकर; **प्रभु-पद धरि'**—महाप्रभु के चरणकमल पकड़कर; **कहे**—कहने लगे; **विनय करिया**—बड़ी नम्रता के साथ।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के शब्दों से उत्साहित होकर गदाधर पण्डित प्रेमभाव में डूब गये। उन्होंने तुरन्त ही महाप्रभु के चरण पकड़ लिए और विनीत भाव से कहा।

तुमि याहाँ-याहाँ रह, ताहाँ 'वृन्दावन' ।
ताहाँ यमुना, गङ्गा, सर्व-तीर्थ-गण ॥२८०॥

तुमि याहाँ-याहाँ रह, ताहाँ 'वृन्दावन' ।
ताहाँ यमुना, गङ्गा, सर्व-तीर्थ-गण ॥ २८० ॥

तुमि—आप; **याहाँ-याहाँ**—जहाँ कहीं; **रह**—रहते हो; **ताहाँ वृन्दावन**—वह स्थान

वृन्दावन है; **ताहाँ**—वहाँ; **यमुना**—यमुना नदी; **गङ्गा**—गंगा नदी; **सर्व-तीर्थ-गण**—अन्य सभी तीर्थस्थान।

अनुवाद

गदाधर पण्डित ने कहा, "आप जहाँ कहीं भी ठहरते हैं, वहीं वृन्दावन है और वहीं यमुना, गंगा नदियाँ तथा अन्य तीर्थस्थल हैं।

তবু বৃন্দাবন যাহ' লোক শিখাইতে ।
সেইত করিবে, তোমার যেই লয় চিত্তে ॥২৮১॥

তবু বৃন্দাবন যাহ' লোক শিখাইতে ।
সেইত করিবে, তোমার যেই লয় চিত্তে ॥ ২৮১ ॥

তবু—फिर भी; **বৃন্দাবন যাহ'**—आप वृन्दावन जाते हो; **লোক শিখাইতে**—सामान्य लोगों को उपदेश देने; **সেইত**—वह; **করিবে**—आप करेंगे; **তোমার**—अपना; **যেই**—जो; **লয়**—लाते हो; **চিত্তে**—मन में।

अनुवाद

"यद्यपि आप जहाँ भी ठहरते हैं वहीं वृन्दावन है, तो भी आप लोगों को शिक्षा देने के लिए वृन्दावन जाते हैं। अन्यथा, जो आप को अच्छा लगे, वही करते हैं।"

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु के लिए वृन्दावन जाना अनिवार्य नहीं था, क्योंकि वे जहाँ कहीं भी रुकते थे, वह स्थान तुरन्त वृन्दावन बन जाता था। वहीं पर गंगा नदी, यमुना नदी तथा अन्य तीर्थस्थल हो जाते थे। श्री चैतन्य महाप्रभु ने रथयात्रा में नृत्य करते समय स्वयं भी यही बात कही थी। उस समय उन्होंने कहा था कि उनका मन ही वृन्दावन है (*मोर-मन-वृन्दावन*)। चूँकि उनका मन वृन्दावन था, अतएव राधा तथा कृष्ण की सारी लीलाएँ उनके भीतर घटित होती रहती थीं। तो भी लोगों को शिक्षा देने के उद्देश्य से वे *भौमवृन्दावन*—अर्थात् इस भौतिक जगत् के वृन्दावन गये। इस तरह उन्होंने हर एक को परम पवित्र स्थान वृन्दावन धाम जाने का उपदेश दिया।

भौतिकतावादी लोग वृन्दावन धाम को अस्वच्छ शहर मानते हैं, क्योंकि

वहाँ अनेक बन्दर तथा कुत्ते हैं और यमुना नदी के किनारे बहुत गंदगी है। कुछ समय पूर्व एक भौतिकतावादी ने मुझसे पूछा था, "आप वृन्दावन में क्यों रह रहे हैं? संन्यास लेने के बाद आपने ऐसे गन्दे स्थान को क्यों चुना?" ऐसा व्यक्ति कभी नहीं समझ सकता कि इस पृथ्वी का वृन्दावन धाम सदैव मूल वृन्दावन धाम का प्रतिनिधित्व करने वाला धाम है। फलतः वृन्दावन धाम भगवान् कृष्ण की ही तरह पूज्य है। *आराध्यो भगवान् व्रजेश-तनयस्तद्धाम वृन्दावनम्*—श्री चैतन्य महाप्रभु के दर्शन के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण तथा उनका धाम वृन्दावन समान रूप से पूज्य हैं। कभी-कभी ऐसे भौतिकतावादी लोग भी पर्यटकों के रूप में वृन्दावन जाते हैं, जिन्हें कोई आध्यात्मिक ज्ञान नहीं होता। जो व्यक्ति ऐसी भौतिक दृष्टि के साथ वृन्दावन जाता है, उसे कोई आध्यात्मिक लाभ नहीं मिलता। ऐसे व्यक्ति को विश्वास ही नहीं होता कि कृष्ण तथा वृन्दावन अभिन्न हैं। चूँकि वे अभिन्न हैं, अतएव वृन्दावन भगवान् कृष्ण के ही समान पूज्य है। श्री चैतन्य महाप्रभु की दृष्टि (*मोर-मन-वृन्दावन*) सामान्य भौतिकतावादी व्यक्ति की दृष्टि से भिन्न है। रथयात्रा उत्सव में श्री चैतन्य महाप्रभु श्रीमती राधारानी के भाव में निमग्न होकर भगवान् कृष्ण को वृन्दावन धाम वापस खींच लाये। उन्होंने इसके विषय में *आहुश्च ते* (मध्य १३.१३६) से प्रारम्भ होने वाले श्लोकों में कहा है।

श्रीमद्भागवत (१०.८४.१३) में कहा गया है :

यस्यात्म बुद्धिः कुणपे त्रिधातुके
स्वधीः कलत्रादिषु भौम इज्यधीः।
यत्तीर्थबुद्धिः सलिले न कर्हिचि-
ज्जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः॥

"जो व्यक्ति तीन तत्त्वों से बने इस शरीर को आत्मा मानता है, जो शरीर के उत्पादों को अपने सम्बन्धी मानता है, जो जन्मभूमि को पूज्य मानता है और जो तीर्थस्थान की यात्रा दिव्य ज्ञान वाले पुरुषों से मिलने के बदले स्नान करने के उद्देश्य से जाता है, उसे गधा या गाय तुल्य समझना चाहिए।"

श्री चैतन्य महाप्रभु ने स्वयं वृन्दावन धाम का जीर्णोद्धार किया और अपने मुख्य शिष्यों, रूप तथा सनातन को इसका विकास करने तथा सामान्य जनता

की आध्यात्मिक दृष्टि को आकृष्ट करने के लिए इसे प्रस्तुत करने की सलाह दी। इस समय वृन्दावन में लगभग पाँच हजार मन्दिर हैं और उसके बाद भी अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ एक विशाल भव्य मन्दिर बनवा रहा है, जिसमें भगवान् कृष्ण, बलराम, राधाकृष्ण तथा गुरु गौरांग की पूजा की जायेगी। चूँकि वृन्दावन में कोई प्रमुख कृष्ण-बलराम मन्दिर नहीं है, अतएव हम एक ऐसा मन्दिर बनवाने का प्रयास कर रहे हैं, जिससे लोग कृष्ण-बलराम अथवा निताइ-गौरचन्द्र की ओर आकृष्ट हो सकें। *व्रजेन्दनन्दन येइ, शची सुत हैल सेइ।* नरोत्तम दास ठाकुर कहते हैं कि बलराम तथा नन्द महाराज के पुत्र साक्षात् गौर-निताई के रूप में अवतरित हुए हैं। इस आधारभूत सिद्धान्त का प्रचार करने के उद्देश्य से हम कृष्ण-बलराम मन्दिर की स्थापना कर रहे हैं, जिससे विश्वभर में यह प्रसारित किया जा सके कि गौर-निताई की पूजा कृष्ण-बलराम पूजा ही है।

यद्यपि राधाकृष्ण की लीलाओं में प्रवेश कर पाना अत्यन्त कठिन है, किन्तु वृन्दावन के अधिकांश भक्तगण राधाकृष्ण-लीला के प्रति आकर्षित होते हैं। किन्तु चूँकि निताइ-गौरचन्द्र बलराम तथा कृष्ण के प्रत्यक्ष अवतार हैं, अतएव हम श्री चैतन्य महाप्रभु तथा नित्यानन्द प्रभु के माध्यम से बलराम तथा कृष्ण के सीधे सम्पर्क में आ सकते हैं। जो लोग कृष्णभावना में अत्यन्त उन्नत हैं, वे श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से राधा-कृष्ण की लीलाओं में प्रवेश कर सकते हैं। कहा गया है— *श्रीकृष्णचैतन्य राधाकृष्ण नहे अन्य।*" श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु राधा तथा कृष्ण के सम्मिलित रूप हैं।"

कभी-कभी भौतिकतावादी लोग राधा-कृष्ण तथा कृष्ण-बलराम की लीलाओं को भुलाकर वृन्दावन जाकर उस भूमि की आध्यात्मिक सुविधाएँ स्वीकार करते हुए भौतिक कार्यकलापों में व्यस्त हो जाते हैं। यह श्री चैतन्य महाप्रभु के उपदेशों के विरुद्ध है। प्राकृत सहजिये अपने आपको *व्रजवासी* या *धामवासी* घोषित करते हैं, किन्तु वे अधिकांशत: इन्द्रियतृप्ति में लगे रहते हैं। इस तरह वे भौतिकतावादी जीवन-शैली में अधिकाधिक लिप्त होते जाते हैं। असली कृष्ण-भक्त उनके कार्यकलापों की निन्दा करते हैं। स्वरूप दामोदर जैसे शाश्वत व्रजवासी वृन्दावन धाम आये तक नहीं। श्री पुण्डरीक विद्यानिधि, श्री

हरिदास ठाकुर, श्रीवास पण्डित, शिवानन्द सेन, श्री रामानन्द राय, श्री शिखि माहिति, श्री माधवीदेवी तथा श्री गदाधर पण्डित गोस्वामी कभी भी वृन्दावन धाम नहीं गये। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर इंगित करते हैं कि हमारे पास कोई प्रमाण नहीं है कि इन महापुरुषों ने वृन्दावन धाम की यात्रा की। तो भी हम देखते हैं कि अनेक अभक्त, मायावादी संन्यासी, प्राकृत सहजिये, सकाम कर्मी, ज्ञानी तथा भौतिक उद्देश्यों से प्रेरित कई अन्य लोग वृन्दावन में रहने जाते हैं। इनमें से अनेक लोग वहाँ भिक्षुक बनकर अपनी आर्थिक समस्या सुलझाने जाते हैं। यद्यपि जो भी वृन्दावन में रहता है, वह किसी न किसी रूप से लाभान्वित होता है, किन्तु असली वृन्दावन का महत्त्व तो शुद्ध भक्त ही समझते हैं। जैसाकि *ब्रह्म-संहिता* में कहा गया है—*प्रेमाञ्जनच्छुरित-भक्तिविलोचनेन।* जब कोई व्यक्ति अपने नेत्रों को शुद्ध कर लेता है, तो वह देख सकता है कि श्री वृन्दावन तथा वैकुण्ठ स्थित आदि गोलोक वृन्दावन एक ही हैं।

श्रील नरोत्तम दास ठाकुर, श्रीनिवास आचार्य, श्री जगन्नाथ दास बाबाजी महाराज, श्री भगवान् दास बाबाजी महाराज तथा श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज और बाद में कलकत्ता के श्रील भक्तिविनोद ठाकुर सदैव *नाम-भजन* में लगे रहे तथा वे निश्चित रूप से और कहीं नहीं, अपितु वृन्दावन में ही रहते रहे। इस समय, हरे कृष्ण आन्दोलन के सदस्य विश्वभर के भौतिक रूप से समृद्ध नगरों में—यथा लन्दन, न्यूयार्क, लास एंजिलिस, पेरिस, मास्को, ज्यूरिख तथा स्टाकहोम में रह रहे हैं। किन्तु हम तो श्रील भक्तिविनोद ठाकुर तथा अन्य आचार्यों के पदचिह्नों का अनुसरण करने में ही तुष्ट हैं। चूँकि हम राधा-कृष्ण मन्दिरों में रहते हैं और निरन्तर हरिनाम-संकीर्तन करते रहते हैं, अतएव हम अन्यत्र नहीं, अपितु वृन्दावन में ही रहते हैं। हम श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणचिह्नों में चलते हुए विश्वभर के अपने शिष्यों के दर्शनार्थ वृन्दावन में एक मन्दिर बनवाने का प्रयास कर रहे हैं।

এই আগে আইলা, প্রভু, বর্ষার চারি মাস ।
এই চারি মাস কর নীলাচলে বাস ॥২৮২॥

एइ आगे आइला, प्रभु, वर्षार चारि मास ।
एइ चारि मास कर नीलाचले वास ॥ २८२ ॥

एइ—अभी; **आगे**—आगे; **आइला**—आये हैं; **प्रभु**—मेरे प्रभु; **वर्षार चारि मास**—वर्षा ऋतु के चार मास; **एइ चारि मास**—ये चार मास; **कर**—करो; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी में; **वास**—निवास।

अनुवाद

इस अवसर को पाकर गदाधर पण्डित ने कहा, "अब तो चातुर्मास्य प्रारम्भ हो चुका है। अतएव आपको अगले चार मास जगन्नाथ पुरी में ही बिताने चाहिए।

পাছে সেই আচরিবা, যেই তোমার মন ।
আপন-ইচ্ছায় চল, রহ,—কে করে বারণ'' ॥২৮৩॥

पाछे सेइ आचरिबा, येइ तोमार मन ।
आपन-इच्छाय चल, रह,—के करे वारण" ॥ २८३ ॥

पाछे—इसके बाद; **सेइ**—वह; **आचरिबा**—आप कीजिए; **येइ**—जो; **तोमार मन**—आपका मन; **आपन-इच्छाय**—अपनी इच्छा के अनुसार; **चल**—आप जाते हो; **रह**—आप रहते हो; **के**—कौन; **करे वारण**—आपको रोक सकता है।

अनुवाद

"यहाँ चार महीने रहने के बाद आप जैसा चाहें कर सकते हैं। वास्तव में आपको जाने या रहने से कोई रोक नहीं सकता।"

শুনি' সব ভক্ত কহে প্রভুর চরণে ।
সবাকার ইচ্ছা পণ্ডিত কৈল নিবেদনে ॥২৮৪॥

शुनि' सब भक्त कहे प्रभुर चरणे ।
सबाकार इच्छा पण्डित कैल निवेदने ॥ २८४ ॥

शुनि'—सुनकर; **सब**—सब; **भक्त**—भक्तों ने; **कहे**—कहा; **प्रभुर चरणे**—महाप्रभु के चरणकमलों में; **सबाकार इच्छा**—हर एक की इच्छा; **पण्डित**—गदाधर पण्डित ने; **कैल**—किया है; **निवेदने**—निवेदन।

अनुवाद

यह कथन सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों पर उपस्थित भक्तों ने कहा कि गदाधर पण्डित ने उनकी इच्छा को सही ढंग से प्रस्तुत की है।

सबार इच्छाय प्रभु चारि मास रहिला ।
शुनिया प्रतापरुद्र आनन्दित हैला ॥२८५॥

सबार इच्छाय प्रभु चारि मास रहिला ।
शुनिया प्रतापरुद्र आनन्दित हैला ॥ २८५ ॥

सबार इच्छाय—हर एक की इच्छा के कारण; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **चारि मास**—चार मास के लिए; **रहिला**—रूक गये; **शुनिया**—यह सुनकर; **प्रतापरुद्र**—राजा प्रतापरुद्र; **आनन्दित हैला**—बहुत प्रसन्न हुआ।

अनुवाद

सारे भक्तों के अनुरोध पर श्री चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथ पुरी में चार मास तक रुके रहने के लिए राजी हो गये। यह सुनकर राजा प्रतापरुद्र अत्यधिक प्रसन्न हुए।

सेइ दिन गदाधर कैल निमन्त्रण ।
ताहाँ भिक्षा कैल प्रभु लञा भक्त-गण ॥२८६॥

सेइ दिन गदाधर कैल निमन्त्रण ।
ताहाँ भिक्षा कैल प्रभु लञा भक्त-गण ॥ २८६ ॥

सेइ दिन—उसी दिन; **गदाधर**—गदाधर पण्डित ने; **कैल निमन्त्रण**—निमन्त्रण दिया; **ताहाँ**—अपने घर पर; **भिक्षा कैल**—भोजन किया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **लञा**—के संग; **भक्त-गण**—अपने भक्तों।

अनुवाद

उस दिन गदाधर पण्डित ने श्री चैतन्य महाप्रभु को निमन्त्रण दिया और महाप्रभु ने अन्य भक्तों सहित उनके यहाँ भोजन ग्रहण किया।

ভিক্ষাতে পণ্ডিতের স্নেহ, প্রভুর আস্বাদন ।
মনুষ্যের শক্ত্যে দুই না যায় বর্ণন ॥২৮৭॥

भिक्षाते पण्डितेर स्नेह, प्रभुर आस्वादन ।
मनुष्येर शक्त्ये दुइ ना य्राय वर्णन ॥ २८७॥

भिक्षाते—खाना खिलाने में; **पण्डितेर**—गदाधर पण्डित का; **स्नेह**—स्नेह; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **आस्वादन**—आस्वादन; **मनुष्येर**—एक सामान्य मनुष्य की; **शक्त्ये**—शक्ति में; **दुइ**—ये दोनों; **ना य्राय**—सम्भव नहीं; **वर्णन**—वर्णन।

अनुवाद

सम्भवतः कोई भी साधारण व्यक्ति गदाधर पण्डित द्वारा परोसे गये स्नेहपूर्ण भोजन एवं महाप्रभु द्वारा इस भोजन के आस्वादन का वर्णन नहीं कर सकता।

এই মত গৌর-লীলা——অনন্ত, অপার ।
সঙ্ক্ষেপে কহিয়ে, কহা না যায় বিস্তার ॥২৮৮॥

एइ मत गौर-लीला——अनन्त, अपार ।
सङ्क्षेपे कहिये, कहा ना य्राय विस्तार ॥ २८८॥

एइ मत—इस प्रकार; **गौर-लीला**—श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ; **अनन्त**—अनन्त; **अपार**—अपार; **सङ्क्षेपे**—संक्षेप में; **कहिये**—मैंने वर्णन की हैं; **कहा**—वर्णन करना; **ना य्राय विस्तार**—कोई भी इतने विस्तार से नहीं कर सकता।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु अपनी लीलाएँ करते हैं, जो अनन्त तथा अपार हैं। किसी न किसी प्रकार इनका संक्षिप्त वर्णन किया गया है। इनका विस्तृत वर्णन कर पाना सम्भव नहीं है।

সহস্র-বদনে কহে আপনে 'অনন্ত' ।
তবু এক লীলার তেঁহো নাহি পায় অন্ত ॥২৮৯॥

सहस्र-वदने कहे आपने 'अनन्त' ।
तबु एक लीलार तेंहो नाहि पाय अन्त ॥ २८९॥

सहस्र-वदने—सहस्र मुखों से; **कहे**—करते हैं; **आपने**—स्वयं; **अनन्त**—अनन्त देव; **तबु**—फिर भी; **एक लीलार**—मात्र एक लीला का भी; **तेंहो**—वे (अनन्त देव); **नाहि**—नहीं; **पाय**—पा सकते; **अन्त**—अन्त।

अनुवाद

यद्यपि अनन्तदेव अपने सहस्र मुखों से भगवान् की लीलाओं का सदैव वर्णन करते रहते हैं, किन्तु वे किसी एक लीला का भी पार नहीं पा सकते।

श्री-रूप-रघुनाथ पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥२९०॥

श्री-रूप-रघुनाथ पदे ग्यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ २९० ॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी के; **पदे**—चरणकमलों पर; **ग्यार**—जिनकी; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**—*चैतन्य चरितामृत* नामक ग्रन्थ; **कहे**—लिखा है; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा रघुनाथ के चरणकमलों पर प्रार्थना करते हुए तथा उनकी कृपा की कामना करते हुए मैं कृष्णदास उनके चरणचिह्नों का अनुसरण करते हुए श्री चैतन्य-चरितामृत कह रहा हूँ।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत मध्यलीला के सोलहवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ जिसमें महाप्रभु द्वारा वृन्दावन जाने के प्रयास का वर्णन हुआ है।